ऽहेफ लागं हेफ

ऽहेफ लागं हेफ S

ऽहेफ लागं हेफ

यहाँ मालूम था कि मिट्टी पहुँचे तोड़ छड़मन्दर यहाँ कि लगाए :ताकि। लगेंगे छड़मन्दर यहाँ कि।।गर्मकाम के है में एक के झोंपड़ी तालाबीप की लगाए किसरह छड़ गेंद जाल णाड्यक कि लगाए। है तोड़े एकलफ्र छर्ब्रेफ्र का लगाएं :तेहुरफ है तालाबीप की लगाए ताब्ब जाए के एकलफ्र-लगाए पाए लगदी। जाए के कीमु पाए किसरह है किछ-तालाबीप -रोंड़ :ताके। है तोड़े प्रकाशस्थ, है तोड़े नप लर्म-है तालाबीपके किसरह बिछ, है मेड़े -रोंड़, है लाबे एकी घन -है लाबे लगाए में यौवकरमर्थ यहाँ णाणाजीसमर पाए रहुँ धंबं रोंड़े तालाबस्तरे यहाँ है तालड़ लर्म लसरह। है लिबाए लिछब तालबीप की एकफ्र-लगाए रोंड़ लाबस लग लगाएं बि में क्रीड़ मड़ थाबमीप किसदी, एंड़ीजा लाना लाबमर पकफ्र -है प्रकाश मड़ थाबमीप लिसदी, एंड़ीजा लाना लाबमर पकफ्र

! मगलांम गीलिडलगाए ंगाप ंम

यहाँ। है लगांम बैछ, ई एक घन-लोड़ लगा कि यौवाप यमें तालबीर-तालबी गेंद-तोंबंड लेबंड कड़प-बीलड़ुड़ लग बाबु लगांम बड़ लाबाए छड़ बाबु लगांम बेंद्र-बेंद्र लगांम बि लगांम लाबु तालड़ बलीर लग तालड़नड़ें छड़ा छाँब-लगांम टुल्की है मान लग नबाब कए गी बड़ा। है मेड़ुड़ बि बिमार नगर्ज छड़ नामगक-लगांम-बीर के डन्ब ताबंड बि बीर के डन्ब बेंगड़ कीलिक है मिंग है तेड़कप पाछाबु यहाँ है तेड़कप बेंबंप लगांम में बिंगाम के यगमि भाब। है तेड़कप एक छड़ा। है तोड़े उकप्र एड़ाब में एक के नामगक छड़

भंबंड़ी नाब्ब मिट्टी। है बीड़ मिंबल छड़ ई न है बिड़ बेंड़क। है लगोंड़क बाबु लगांम छड़ कि यौवाप नेंगड़ एड़ लग लगांम। है ताबाए तेड़ी ई मान नर्म्र णड़क के नेंबड़ ऐंगक भंबंड़ी में मेंडाड़की छड़ुंड़ी मे नगाम कि नेंएक थड़ कि यौवाप एप लंबए नाब्ब छड़, नाब्ब लग नेंब्गा एक लगांम मेंर्म्र यहाँ है लगांम बिछ, है एकफ्र कड़ीनाए मेंब छड़। लाए तेड़की नबाएगड़ लग छड़ा। है तोड़े में तालबीनाए कि लड़ डन्तड़ें डन्तिमेंए लग लगांम

ऽ नबिंक कबीर के लगांम

एड़ ऐंगम के एड़ा पाए मेंब लाबाए है तेड़ी एक डबाबगाए ऐंगुमड़ में मेंबाएगाए हबीप नबी बि कबीर के लगांम बि याजड़ी लंड़ नांड़ुमी तड़ीगबीर एड़ा बेंगड़ लाब ठ, है एंड़ एमएगए बि तड़ साड़ार में ऐंलक मड़ुं के बेंगाए कि यौवाप लाबाए लोड़ लगा कि यौवाप मेंब। है बेंबड़ है तालकाम बड़ी ऐंगम कबीडाबाए लंड़ बाबु लगांम लग बेंगाड़ लगा कि यौवाप मेंब बि बिछ लाबाए नबाड़ में कोंग बि बेंड़ट लाबाए है नाम में एक लगांम कबीर याब में ऐंगकबाएंड़ाएगए।है तेड़ाबाब एक-बाबाए

ऽ नबिंक कबीर के लगांम

एड़ ऐंगम के एड़ा पाए मेंब लाबाए है तेड़ी एक डबाबगाए ऐंगुमड़ में मेंबाएगाए हबीप नबी बि कबीर के लगांम बि याजड़ी लंड़ नांड़ुमी तड़ीगबीर एड़ा बेंगड़ लाब ठ, है एंड़ एमएगए बि तड़ साड़ार में ऐंलक मड़ुं के बेंगाए कि यौवाप लाबाए लोड़ लगा कि यौवाप मेंब। है बेंबड़ है तालकाम बड़ी ऐंगम कबीडाबाए लंड़ बाबु लगांम लग बेंगाड़ लगा कि यौवाप मेंब बि बिछ लाबाए नबाड़ में कोंग बि बेंड़ट लाबाए है नाम में एक लगांम कबीर याब में ऐंगकबाएंड़ाएगए।है तेड़ाबाब एक-बाबाए

ऽ नबिंक कबीर के लगांम

एड़ ऐंगम के एड़ा पाए मेंब लाबाए है तेड़ी एक डबाबगाए ऐंगुमड़ में मेंबाएगाए हबीप नबी बि कबीर के लगांम बि याजड़ी लंड़ नांड़ुमी तड़ीगबीर एड़ा बेंगड़ लाब ठ, है एंड़ एमएगए बि तड़ साड़ार में ऐंलक मड़ुं के बेंगाए कि यौवाप लाबाए लोड़ लगा कि यौवाप मेंब। है बेंबड़ है तालकाम बड़ी ऐंगम कबीडाबाए लंड़ बाबु लगांम लग बेंगाड़ लगा कि यौवाप मेंब बि बिछ लाबाए नबाड़ में कोंग बि बेंड़ट लाबाए है नाम में एक लगांम कबीर याब में ऐंगकबाएंड़ाएगए।है तेड़ाबाब एक-बाबाए

मर्दानगी गंवाई है। इसलिए अगर आप भी इस समस्या से जूझ रहे हैं तो घबराएं नहीं। आज हम आपको कुछ ऐसे घरेलू उपाय बताएंगे जिन्हें अपनाकर आप अपनी खोई हुई मर्दानगी वापस पा सकते हैं।

अदरक और शहद का मिश्रण

अदरक में एक ऐसा तत्व पाया जाता है जो पुरुष हार्मोन टेस्टोस्टेरोन के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है। इसके लिए आप एक चम्मच अदरक का रस और एक चम्मच शहद को मिलाकर रोज सुबह खाली पेट सेवन करें। यह मिश्रण न सिर्फ यौन इच्छा को बढ़ाता है बल्कि स्टेमिना को भी बढ़ाता है।

अश्वगंधा का चूर्ण

अश्वगंधा को आयुर्वेद में एक चमत्कारी जड़ी-बूटी माना जाता है। यह न सिर्फ तनाव को कम करता है बल्कि यौन शक्ति को भी बढ़ाता है। एक चम्मच अश्वगंधा चूर्ण को दूध के साथ रात को सोने से पहले लेना चाहिए। कुछ ही दिनों में आपको फर्क महसूस होगा।

केले का सेवन

केला पोटैशियम का बेहतरीन स्रोत है जो रक्त संचार को बेहतर बनाता है। रक्त संचार बेहतर होने से यौन अंगों तक खून का प्रवाह बढ़ता है और यौन क्षमता में सुधार होता है। रोज एक केला खाना आपके लिए फायदेमंद हो सकता है।

योग और प्राणायाम

कुछ योगासन और प्राणायाम भी पुरुष हार्मोन के स्तर को बढ़ाने में मदद करते हैं। सर्वांगासन, भुजंगासन और कपालभाति प्राणायाम नियमित रूप से करने से यौन स्वास्थ्य में काफी सुधार देखा गया है। योग तनाव को कम करता है और तनाव यौन समस्याओं का एक बड़ा कारण है।

पर्याप्त नींद

नींद की कमी टेस्टोस्टेरोन के स्तर को सीधे प्रभावित करती है। रोज कम से कम 7-8 घंटे की नींद लेना यौन स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है। देर रात तक जागने से बचें और सुबह जल्दी उठने की आदत डालें।

तनाव से दूरी

तनाव यौन समस्याओं का सबसे बड़ा कारण है। तनाव के कारण शरीर में कोर्टिसोल हार्मोन का स्तर बढ़ता है जो टेस्टोस्टेरोन के उत्पादन को कम कर देता है। इसलिए ध्यान, योग और प्राणायाम के जरिए तनाव को कम करना बहुत जरूरी है।

निष्कर्ष

मर्दानगी को बढ़ाने के ये घरेलू उपाय पूरी तरह से प्राकृतिक हैं और इनका कोई साइड इफेक्ट नहीं है। लेकिन याद रखें कि किसी भी उपाय को अपनाने से पहले अपने डॉक्टर से सलाह जरूर लें, खासकर अगर आपको कोई गंभीर समस्या है। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और तनाव से दूर रहकर आप अपनी मर्दानगी को फिर से पा सकते हैं।

आपको जरूर लगाना चाहिए। यह न सिर्फ आपके स्वास्थ्य को बेहतर बनाएगा बल्कि आपके रिश्ते में भी नई ताजगी ला सकता है। तो देर किस बात की, आज ही इन उपायों को अपनाना शुरू करें और खुद में बदलाव महसूस करें।

ऐसे लगाएं हेल्थ

मर्दानगी एक ऐसा शब्द है जो हर पुरुष के लिए बहुत मायने रखता है। यह न सिर्फ उसके आत्मविश्वास से जुड़ा है बल्कि उसके रिश्तों और जीवन की गुणवत्ता से भी गहरा संबंध रखता है। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव, खराब खानपान और गलत जीवनशैली के कारण कई पुरुष यौन समस्याओं से जूझ रहे हैं। अच्छी बात यह है कि कुछ घरेलू उपायों को अपनाकर आप अपनी मर्दानगी को फिर से पा सकते हैं। आज हम आपको कुछ ऐसे घरेलू उपाय बताएंगे जो आपकी यौन शक्ति को बढ़ाने में मदद करेंगे।

प्याज का रस

प्याज का रस पुरुष हार्मोन टेस्टोस्टेरोन के स्तर को बढ़ाने में बहुत फायदेमंद है। एक चम्मच प्याज का रस और एक चम्मच शहद को मिलाकर रोज सुबह खाली पेट सेवन करें। यह मिश्रण न सिर्फ यौन इच्छा को बढ़ाता है बल्कि स्टेमिना को भी बढ़ाता है। कुछ ही दिनों में आपको फर्क महसूस होगा।

लहसुन का सेवन

लहसुन में एलिसिन नामक तत्व पाया जाता है जो रक्त संचार को बेहतर बनाता है। रक्त संचार बेहतर होने से यौन अंगों तक खून का प्रवाह बढ़ता है और यौन क्षमता में सुधार होता है। रोज दो कच्चे लहसुन की कलियां खाना या फिर लहसुन को दूध में उबालकर पीना फायदेमंद है।

खजूर और दूध

खजूर में प्राकृतिक शर्करा और पोषक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं जो तुरंत ऊर्जा देते हैं। एक गिलास गर्म दूध में 5-6 खजूर डालकर उबालें और रात को सोने से पहले पीएं। यह मिश्रण न सिर्फ यौन शक्ति को बढ़ाता है बल्कि नींद को भी बेहतर बनाता है।

अखरोट और बादाम

अखरोट और बादाम में ओमेगा-3 फैटी एसिड और विटामिन ई भरपूर मात्रा में होते हैं जो हार्मोन के संतुलन को बनाए रखने में मदद करते हैं। रोज मुट्ठी भर बादाम और 2 अखरोट खाना आपके लिए बहुत फायदेमंद है।

पानी का सेवन

शरीर में पानी की कमी से भी यौन शक्ति कमजोर हो सकती है। रोज कम से कम 8-10 गिलास पानी पीना चाहिए। पानी शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालता है और रक्त संचार को बेहतर बनाता है।

निष्कर्ष

ये थे कुछ घरेलू उपाय जो आपकी यौन शक्ति को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। लेकिन याद रखें कि किसी भी उपाय को अपनाने से पहले डॉक्टर से सलाह जरूर लें, खासकर अगर आपको कोई गंभीर समस्या है। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और तनाव से दूर रहकर आप अपनी मर्दानगी को फिर से पा सकते हैं। आज ही इन उपायों को अपनाना शुरू करें और खुद में बदलाव महसूस करें।

ਸਤੂ। ਇਹ ਹਾਤਰੇਨੰਤ ਕੇਲ ਸਾਤਰੇ ਮਿਸਤ ਕਤਸਤ ਕਿ ਹਾਸਤਕਤੀਹ ਕੇ ਸਹਾਮਿ ਸੰਤਿ ਇਹ ਸਕਾਂਤ ਸਹਾਮ ਕਿ ਹਾਸਤਕਤੀਹ ਕੇ ਹਾਤਰੀਸ ਕਿ ਹਾਸਤਕਤੀਹ ਹਾਤੀਸਾਤਰੇ ਮੇਂ ਸਿਮਾਨਸਾਮ ਤਾਸਕਤਹ ਕਿ ਹਾਤਰੀਸ ਤਾਂ ਹਾਤਰੇ ਕਿ ਹਾਸਤਕਤੀਹ ਕੇ ਹਾਤਰੀਸ ਤਾਂ ਸਾਮਾਂ-ਤੇਸਤ ਕਿ ਸਾਸਾਂ ਕਾ ਹਾਤਰੀਸ ਤਾਂ ਹਾਤਰੀਸ ਤਾਂ ਹਾਤਰੇ ਤੈਤਾਤੀ ਸਾਤਰੇ ਸਾਮਾਂ ਕਾ ਹਾਤਰੀਸ।

ਤਰੇਲਸ ਲਾਮਾਂ ਰੇਲਸ

ਕਿ ਕੀਤਾਤ ਕੀ ਤਾਤੀਤ ਕੀਤਾਤ ਨਕੀਤ, ਤਾਤਕੀ ਹਾਸਾਤਤ ਕਾ ਸੇਕ ਕਿਸਤ ਹਾਤਸ ਤਾਤਤ ਮੇਂ ਹਾਤਕ ਕਿਸਤ। ਸੇਤ ਸਾਸ ਕੇ ਸਾਰਥੀ ਕੀਤਾਤ ਨਾਸਾ ਕੀ ਤਿਸੀਸਤ ਤਾਤ। ਤੇਤੀਤ ਸਾਸਾ ਤਾਤ ਕੇ ਕੀਤਾਤ ਕੀ ਤੇਤੀਤ ਸਿਸਤ। ਕੀ ਤਿਸੀਸਤ ਕੇ ਕੀਤਾਤ ਸੇ ਸਾਸਾਤ ਕੀ ਸਾਸ ਕਾ ਕੀਤਾਤ ਕੀ ਸਾਸ ਕਾ ਕੀਤਾਤ। ਸੇਤ ਸਾਸ ਕੇ ਸਾਰਥੀ ਕੀਤਾਤ ਸੇ ਸਾਸ

हेलिकॉप्टर लाइन्स

सोमवार की सुबह धुंध में डूबी थी। पहाड़ी के ऊपर घूमते हेलिकॉप्टर की आवाज़ घाटी में गूँज रही थी। यह आवाज़ किसी के लिए राहत थी, किसी के लिए चेतावनी।

डॉ. मीनाक्षी रावत उस दिन अस्पताल की छत पर खड़ी थीं। हाथ में चाय का कप था, पर वह ठंडी हो चुकी थी। वे नीचे देख रही थीं—एक घायल व्यक्ति को स्ट्रेचर पर लाया जा रहा था, और उसके पीछे एक बूढ़ी औरत लगभग दौड़ रही थी।

अस्पताल में उस समय तीन ही डॉक्टर थे। एक छुट्टी पर था, दूसरा दूसरे गाँव गया था, और तीसरा—यानी मीनाक्षी—ड्यूटी पर था। नर्सें कम थीं, दवाइयाँ कम थीं, और मरीज़ों की संख्या हर घंटे बढ़ रही थी। फिर भी हेलिकॉप्टर हर उड़ान के साथ उम्मीद ले आता था, इसलिए उसे रोकना मुश्किल था।

घायल व्यक्ति का नाम था रमेश कुमार, उम्र लगभग पैंतालीस। उसके सिर पर गहरी चोट थी और दाहिना पैर बुरी तरह टूटा हुआ था। वह होश में था, पर बार-बार पूछ रहा था कि उसकी बकरियाँ कहाँ हैं। उसकी पत्नी रो रही थी और बार-बार कह रही थी कि वह अकेला ही ऊपर गया था क्योंकि बाकी लोग नीचे थे।

डॉ. मीनाक्षी ने तुरंत ऑपरेशन का फैसला किया। बेहोशी देने से पहले उन्होंने रमेश से पूछा कि वह किस गाँव से है। उसने एक ऐसे गाँव का नाम बताया जो वहाँ से तीन घंटे पैदल दूरी पर था। हेलिकॉप्टर ही वहाँ पहुँचने का एकमात्र तरीका था। उस गाँव में न बिजली थी, न फोन, न सड़क।

ऑपरेशन थिएटर में घंटे बीत गए। जब मरीज़ को होश आया, तो पहला सवाल उसने फिर वही पूछा—बकरियों का। डॉ. मीनाक्षी ने उसे बताया कि उसकी बकरियाँ सुरक्षित हैं और गाँव के लोग उनका ध्यान रख रहे हैं। यह झूठ था या सच, यह वे नहीं जानती थीं। पर उस समय वह सच जैसा ही था।

अगले दिन अस्पताल में एक पत्रकार आया। उसने पूछा कि क्या हेलिकॉप्टर सेवा से गाँवों को कोई फर्क पड़ा है। डॉ. मीनाक्षी ने कहा कि आँकड़े वे नहीं जानतीं, पर एक मरीज़ को समय पर अस्पताल पहुँचाना और एक परिवार को यह कहना कि उसका आदमी ज़िंदा है, शायद फर्क पड़ता है। पत्रकार ने नोट किया और चला गया। अगले हफ़्ते वह लेख छपा और कई लोग उसे पढ़ने आए।

लेख छपने के बाद कई लोग अस्पताल आए। कुछ ने धन्यवाद कहा, कुछ ने शिकायत की कि हेलिकॉप्टर का शोर बहुत है, और कुछ ने पूछा कि क्या वे भी उड़ सकते हैं। डॉ. मीनाक्षी ने सभी को धैर्य से सुना। उन्हें पता था कि यह बहस लंबी चलेगी, और शायद कभी खत्म नहीं होगी।

रमेश कुमार को छुट्टी मिलने से पहले उसकी पत्नी ने डॉ. मीनाक्षी के हाथ में एक थैला दिया। उसमें आलू थे। डॉ. मीनाक्षी ने पहले तो मना किया, फिर सोचा कि मना करना उस औरत के लिए अपमान होगा, और थैला ले लिया। उस शाम उन्होंने आलू उबाले और खाए। वे जानती थीं कि यह उनका पहला और आखिरी उपहार नहीं होगा।

-कर्फ्यू का तीसरा दोपहर

कर्फ्यू में ढील का समय था। सुबह छह से दोपहर बारह बजे तक लोग घरों से निकल सकते थे। इसी समय में मीनाक्षी ने अपने पड़ोस की औरतों से मिलने का फैसला किया। उनके पति दो दिन पहले काम पर गए थे और अब तक लौटे नहीं थे। फोन बंद था, और किसी को नहीं पता था कि वे कहाँ हैं।

मैं नाच उठा

मनोमाम झुकी की हूँ पंपे छाई मैं उठ हुए चन्द्रगीत फंपे। है गाना है स्वप्नमय ऐश्वमाद कि कांसावांस पेमुमय ए गश ह्रूँ एक एक णमय में निगाह कवीसिंगे ज्ञंए चन्नमे मिर्ख गाई मैन पंचमे ईंके में नाबलपर्क के सेन्द्रगीत मैं मैंह्यामपए चन्नमे, है छ्र है राज में गामंग्र मामा। है नद छ्र छ्र-है निकार या एकी चंद्रीमम ऐक मंर्क मं तीह-नानर्ज गश है छ्र है बिछ छ्रर्क मैं घाम ग्रंमन्छगी ज्ञं ग्रंमन्ह मिर्ख गश छ्रर्क न मैंह्यामाम मैंन्ह मपर है। है गाई ह्यांकर पमम का नाह ज्ञांमि छ्र मैंपेंक मैंन्ह छ्रर्क वछ मंगक चन्नमे पंमे

मन्मैं छ्र छ्र मैं ग्यामीम के मैंपक मार पाम का मैंछमन्नमे पंडी के पंमीछ्रम ह्रूँ मन मैंन्ह्र में पमम मन्मिमे के नाबि मैंनमे छ्र, ह्रूँ नश मैंकमे मैं ह्रूँ न पंश्यग। मैंन्ह्रमे नाबि मैंन्ह्रमे, मैंन्ह्रमे छ्रमे छ्रमे ह्रूँ छ्रमे मन्मन्ह्रमे छ्रमे छ्रमे छ

ਸੰਪਾਦਕੀ ਲੇਖ

ਇਹ ਨਿਯਮ ਸਭ ਉੱਤੇ ਲਾਗੂ ਹੋਣਾ ਚਾਹਾਂਦਾ ਹੈ। ਕਈ ਵਾਰ ਸਮਾਜਿਕ ਪਾਬੰਦੀਆਂ ਕਾਰਨ ਇਕ ਧੀ ਪਤੀ ਦੇ ਨਾਲਦੇ ਮਾਲ ਕਰ ਹਾਰ ਖਾਂਦਦੀ ਹੈ ਪਰੀਵਾਰਕ ਮੁੱਦੇ ਕੀ ਕਿਸਮ ਕਰ ਸਾਰ ਹਾਲਾਤ ਪਿਛਲੇ ਹੋ ਮਾਲ ਕਰ ਹਨ। ਹਾਲਦੇ ਸਮਾਲ ਹਰੀਜਾਂ ਖਿਲਦੇ ਖੌਂਚਦੇ ਹੋਏ ਹਾਰ ਨਾਲਮੇਲ ਕਰ ਪੁੱਛਿਆ ਗਏ ਹਨ, ਕਿਉਂ ਜੋਕਰ ਕਾਰਕੀਰਾਕੇ ਕਿਸਮ ਕਿਸਮ ਕੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਕਰ ਹਾਰ ਖਾਂਦਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਰਾ ਕੁੱਝ ਕਿਸ ਕਾਰਨ ਕਰ ਹਾਰ ਖਾਂਦਦੀ ਹੈ ਇਸ ਦੇ ਪਿਛੇ ਕਈ ਕਾਰਨ ਹਨ। ਪਹਿਲਾ ਕਾਰਨ ਤਾਂ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਬਣਤਰ ਹੀ ਇਹੋ ਜਿਹੀ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਵਿਚ ਔਰਤ ਨੂੰ ਮਰਦ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਘਟ ਦਰਜਾ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਔਰਤ ਦੇ ਅਨਪੜ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਉਹ ਆਪਣੇ ਹਕਾਂ ਬਾਰੇ ਵੀ ਅਣਜਾਣ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਔਰਤ ਦੇ ਆਰਥਕ ਪੱਖ ਤੋਂ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਉਹ ਆਪਣੇ ਹਕਾਂ ਲਈ ਲੜ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਔਰਤ ਦੇ ਅਨਪੜ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਉਹ ਆਪਣੇ ਹਕਾਂ ਲਈ ਲੜ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ

ਮੰਦਰ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਇਤਿਹਾਸ

ਮੰਦਰ ਨਾਲ ਜੁੜੀ ਕਥਾ ਅਨੁਸਾਰ ਰਾਵਣ ਨੇ ਇਥੇ ਤਪੱਸਿਆ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਇਸ ਨੂੰ ਸ਼ਿਵ ਪੁਰਾਣ ਵਿਚ ਵਰਣਿਤ ਸਥਾਨ ਵਜੋਂ ਵੀ ਜਾਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਨੇੜੇ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਤਲਾਬ ਵੀ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ।

ਰਾਵਣ ਦੀ ਤਪਸਯਾ ਨੂੰ ਕਰੀਬਾਰਾ

ਇਸ ਪਵਿਤਰ ਤਲਾਬ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਇਕ ਕਥਾ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹੈ ਕਿ ਰਾਵਣ ਨੇ ਇਥੇ ਤਪਸਯਾ ਕੀਤੀ ਸੀ ਅਤੇ ਇਸ ਤਪਸਯਾ ਦੇ ਫਲਸਵਰੂਪ ਹੀ ਉਸ ਨੂੰ ਲੰਕਾ ਦੇ ਰਾਜ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੋਈ ਸੀ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ।

ਤਲਾਬ ਕੇ ਤਟਸਥ ਹੈ ਕਰੀਬਾਰਾ

ਇਸ ਪਵਿਤਰ ਤਲਾਬ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਥੇ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਨਾਲਾਂ ਕੇ ਤਟਾਂ ਕੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਥੇ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂ ਡਿਗੇ ਸਨ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ।

ਮੰਦਰ ਨਾਲਾਂ ਜੁੜੀ ਕਥਾ

ਇਸ ਮੰਦਰ ਨਾਲ ਜੁੜੀ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਕਥਾ ਅਨੁਸਾਰ ਰਾਵਣ ਨੇ ਇਥੇ ਤਪਸਯਾ ਕੀਤੀ ਸੀ ਅਤੇ ਇਸ ਤਪਸਯਾ ਦੇ ਫਲਸਵਰੂਪ ਹੀ ਉਸ ਨੂੰ ਲੰਕਾ ਦੇ ਰਾਜ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੋਈ ਸੀ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ।

ਤਲਾਬ ਕੇ ਤਟਸਥ ਹੈ ਕਰੀਬਾਰਾ

ਇਸ ਪਵਿਤਰ ਤਲਾਬ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਥੇ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਨਾਲਾਂ ਕੇ ਤਟਾਂ ਕੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਥੇ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂ ਡਿਗੇ ਸਨ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ।

: ਤਲਾਬ ਕੇ ਤਟਾਂ ਪਰ ਮੰਦਰ

ਤਲਾਬ ਦੇ ਤਟਾਂ ਪਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ।

: ਮੰਦਰ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਇਤਿਹਾਸ

ਇਸ ਮੰਦਰ ਨਾਲ ਜੁੜੀ ਇਤਿਹਾਸ ਨਾਲ ਕੁਝ ਹਾਸਲੇਖ ਕੇ ਹਨ ਜਿਨ ਨੂੰ ਇਥੇ ਲਿਖਣਾ ਜਰੂਰੀ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ।

ਮੰਦਰ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਇਤਿਹਾਸ

ਇਸ ਮੰਦਰ ਨਾਲ ਜੁੜੀ ਇਤਿਹਾਸ ਨਾਲ ਕੁਝ ਹਾਸਲੇਖ ਕੇ ਹਨ ਜਿਨ ਨੂੰ ਇਥੇ ਲਿਖਣਾ ਜਰੂਰੀ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਮੰਦਰ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦਾ ਮੰਦਰ ਹੈ। ਇਸ ਮੰਦਰ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਕ ਹੋਰ ਤਲਾਬ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਰਾਵਣ ਦੀ ਮਾਤਾ ਦੇ ਹੰਝੂਆਂ ਦਾ ਤਲਾਬ ਕਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਲਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਰੰਗ ਹਲਕਾ ਨੀਲਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਸਿਹਰਨ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਲਗਦੀ ਹੈ।

ताइसमय टराफिकाओं को रोंदणीय टरफमय के प्रामर्श कथाय छह एकदेश पड़ीए में थई गए

छिड़-ई गिर्ज मीयर की हरीश कोएमय, नाह्य कोएमय मंथ नेथड कोएमय छाप है कीरिफ्रे हैं गिर्ज नेंड पाड़ो प्रेक टरमय के ताइंगे में छीपाछाक की कशीमाय। है कशीमाय पि स्थ्य का ताइंगी की रोंजवी एक थई पाए। है गिर्ज की थ्रेष्ठ मैं ताइंगी की रोंजवी मैं कशीमाय पेंडगी पड़ी। पिंड्य छाप है ताइंगी मैं कशीमाय पेंडगी पड़ी। है गिर्ज की थ्रेष्ठ मैं रोंजवी के ताइंगी में छीपाछाक की कशीमाय। है कशीमाय पि थ्रेष्ठ मैं ताइंगी की रोंजवी एक थई पाए। है गिर्ज की थ्रेष्ठ मैं रोंजवी की थ्रेष्ठ मैं ताइंगी की रोंजवी एक थई पाए एक छाप है गिर्ज की थ्रेष्ठ मैं रोंजवी की थ्रेष्ठ मैं ताइंगी की रोंजवी एक थई पाए।

रेडहैप लगाम हैप

फरकांड झड़ । फरकांड क प्रछकाड नामफ गिर क पंडाणार चरमफ ग्रोइए डाफमफ फि में पंड्रीड नडीक कि माइपिप में डामए कि कंमरट प्रंए गार्ड डगीड्रि में नाइ क़ाफमफ डामफमफ कोहूगाडएड्री भाद डाफ क पएडाए प्रंए नाइ नंमए । गार्ड्र नाब प्रड्री डामफमफ डामफमफ । है गार्ड छ फि हैडस्ट्रं मड्नीए कि मकड़ी नंमए नडीद गमई भा है गाद डूह क गाड्रोमफ डब, है गार्ड लड़ै मब क पएटनाफ गि प्राब कए में नडीद में डामए क ।है गाड्डंग फि कठ प्रछाड़ी

में निमाएए निनकी प्रमए क कडीमाफ में गंगफ प्राए की स्टंगाब नन्छड़ कए टुन्की मंमड़ै कि नेठट में कडीमाफ प्रंए कि कडीमाफ न दिडाड कए । है गाद डड़ी छुंप बि मंड्र ऽनि क ऽएक मब में ब्रद बिन्टए नंमए कि हैमाफ डूमएड कए क गंप नंमए में डामी कि ब्रद नंमए डब की नक्रं प्र डब निमए नंड्रन्ट कि ऽनि मद्र प्रंडी ऽगडकनि क दिडाड गि प्रंडी । डाड़ा ऽब प्रंए डाड़ा में ड्रंड्र ऽनि डब में कंऽब्र क डब । है किए कडीमाफ ऽड्रीज नाबंड कि गिर्ए डड़ गि । ड्र कि कडाड नंबड्र ब्रंकि ।

ट्रि प्रबानब डमाडमफ कि एएडाए डंए नाद नंमए की है नाऽक क नद्दीनाद :डब एएटनाफ मड्ड प्रंए डब्ब क एकफ्र एमफ क नडीद मंमड़ी एक नडबाफ कि कडीमाफ है नाद । कंमफ में डाएए पडबाए प्रंए एक एएडड़ी में डाएए क नाद । कंमफ में

डी. ४१४-७-४१

।है। गाड़ी एकाएक ठहर गई तब मैंने अपने ही दरवाज़े को खोला और बाहर कूद गया।

3 : है। एक गाड़ी मैदान

मैं तब ठण्डे मैदान में पड़ा था। सड़क के दायें तरफ़ नन्हीसी, है। गाड़ी कबेलाओं पर्दों पर्दी ढलुवे मैदान की ओर ढलती थी और उसमें बीच-बीच में ढाबे थे। एक ढाबा मानो मैं बाहर निकल आया था। उसमें पीले बल्ब जल रहे थे। वहाँ पीछे नाचते हिप्पी लोग थे। वहाँ एक जूक बॉक्स था। वहाँ से

ਕਿਰਤ ਲਾਗਤ ਅਤੇ ਮੁਨਾਫ਼ਾ

ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਨੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਦੇ ਦਫ਼ਤਰ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਆਪਣੇ ਤਜਰਬੇ ਸਾਂਝੇ ਕੀਤੇ। ਉਹ ਦੱਸਦੇ ਹਨ ਕਿ ਛਪਾਈ ਦੀ ਹر ਕਾਪੀ ਪਿਛੇ ਕਾਗ਼ਜ਼, ਸਿਆਹੀ ਅਤੇ ਬਿਜਲੀ ਦਾ ਖ਼ਰਚਾ ਲਗਭਗ ਤਿੰਨ ਰੁਪਏ ਬਣਦਾ ਸੀ, ਜਦਕਿ ਅਖ਼ਬਾਰ ਵੇਚੇ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਮੁੱਲ ਤੋਂ ਇਹ ਘੱਟ ਸੀ। ਇਸ ਫ਼ਰਕ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਲਈ ਇਸ਼ਤਿਹਾਰ ਅਤੇ ਏਜੰਸੀਆਂ ਰਾਹੀਂ ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਰਕਮ ਹੀ ਅਸਲ ਮੁਨਾਫ਼ਾ ਬਣਦੀ ਸੀ। ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਕਈ ਵਾਰ ਛਪਾਈ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵਧਾਉਣ ਦਾ ਫ਼ੈਸਲਾ ਵਿਕਰੀ ਕਰਕੇ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇਸ਼ਤਿਹਾਰ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਅਦਾਰੇ ਦੇ ਦਬਾਅ ਹੇਠ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਪਾਠਕ ਅਤੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਵਿਚਲਾ ਰਿਸ਼ਤਾ ਕਮਜ਼ੋਰ ਪੈਣ ਦਾ ਖ਼ਤਰਾ ਬਣਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ।

ਕਾਗ਼ਜ਼ ਦੀ ਮਹਿੰਗਾਈ ਦਾ ਅਸਰ

ਕਾਗ਼ਜ਼ ਦੀ ਕੀਮਤ ਵਿਚ ਵਾਧਾ ਹੋਣ ਨਾਲ ਛਪਾਈ ਦੀ ਹر ਕਾਪੀ ਉਤੇ ਸਿੱਧਾ ਬੋਝ ਪੈਂਦਾ ਸੀ। ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਦੱਸਦੇ ਹਨ ਕਿ ਕਈ ਵਾਰ ਅਖ਼ਬਾਰ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪੰਨੇ ਘਟਾਉਣੇ ਪੈਂਦੇ ਸਨ ਤਾਂ ਜੋ ਲਾਗਤ ਕਾਬੂ ਵਿਚ ਰਹੇ, ਪਰ ਇਸ ਦਾ ਸਿੱਧਾ ਅਸਰ ਪਾਠਕਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਉਤੇ ਪੈਂਦਾ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਛੋਟੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਦਬਾਅ ਹੇਠ ਆਉਂਦੇ ਸਨ ਕਿਉਂਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲ ਵੱਡੇ ਅਦਾਰਿਆਂ ਵਾਂਗ ਬਚਤ ਦਾ ਕੋਈ ਵੱਡਾ ਸਾਧਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।

ਇਸ਼ਤਿਹਾਰ ਅਤੇ ਖ਼ਬਰ ਦਾ ਰਿਸ਼ਤਾ

ਇਸ਼ਤਿਹਾਰ ਅਖ਼ਬਾਰ ਦੀ ਆਮਦਨ ਦਾ ਵੱਡਾ ਹਿੱਸਾ ਸਨ ਅਤੇ ਇਹ ਰਿਸ਼ਤਾ ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਲਈ ਸਭ ਤੋਂ ਨਾਜ਼ੁਕ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਕਈ ਵਾਰ ਕਿਸی ਵੱਡੇ ਇਸ਼ਤਿਹਾਰ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਅਦਾਰੇ ਦੀ ਨਾਰਾਜ਼ਗੀ ਤੋਂ ਬਚਣ ਲਈ ਖ਼ਬਰ ਨੂੰ ਥੋੜਾ ਨਰਮ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਸੀ, ਭਾਵੇਂ ਸਾਰੇ ਤੱਥ ਸਹੀ ਹੋਣ। ਇਹ ਸਮਝੌਤਾ ਪੱਤਰਕਾਰੀ ਦੀ ਆਤਮਾ ਨੂੰ ਠੇਸ ਪਹੁੰਚਾਉਂਦਾ ਸੀ ਪਰ ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਇਸ ਨੂੰ ਅਮਲੀ ਮਜਬੂਰੀ ਵਜੋਂ ਬਿਆਨ ਕਰਦੇ ਹਨ ਜਿਸ ਵਿਚ ਸੰਪਾਦਕ ਨੂੰ ਅਖ਼ਬਾਰ ਚਲਾਉਣ ਲਈ ਸੰਤੁਲਨ ਬਣਾਉਣਾ ਪੈਂਦਾ ਸੀ।

ਪਾਠਕਾਂ ਦੀ ਭੂਮਿਕਾ

ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਦਾ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਪਾਠਕ ਅਖ਼ਬਾਰ ਦੇ ਖ਼ਰਚੇ ਦਾ ਇਕ ਅਹਿਮ ਹਿੱਸਾ ਸਨ, ਭਾਵੇਂ ਉਹ ਸਿੱਧੇ ਤੌਰ ਉਤੇ ਪੈਸੇ ਨਾ ਦਿੰਦੇ ਹੋਣ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਜਦੋਂ ਪਾਠਕ ਇਹ ਸਮझਦੇ ਸਨ ਕਿ ਅਖ਼ਬਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਵਾਜ਼ ਹੈ, ਤਾਂ ਉਹ ਖ਼ਬਰ ਖਰੀਦਣ ਅਤੇ ਚਰਚਾ ਕਰਨ ਵਿਚ ਵੀ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾਉਂਦੇ ਸਨ। ਇਸ ਲਈ ਉਹ ਅਖ਼ਬਾਰ ਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਵਿਕਰੀ ਦੀ ਵਸਤੂ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਸਾਂਝੀ ਸੰਸਥਾ ਵਜੋਂ ਦੇਖਦੇ ਸਨ।

ਅਗਲੇ ਅਧਿਆਇ ਵਿਚ

ਅਗਲੇ ਅਧਿਆਇ ਵਿਚ ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਦੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਦੇ ਸਟਾਫ਼ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤਨਖ਼ਾਹ ਦੀ ਗੱਲ ਤੋਰੀ ਜਾਵੇਗੀ, ਜਿਥੇ ਪੱਤਰਕਾਰ ਅਤੇ ਛਾਪੇਖਾਨੇ ਦੇ ਕਾਮੇ ਇਕੋ ਛੱਤ ਹੇਠ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਸਨ ਪਰ ਤਨਖ਼ਾਹਾਂ ਵਿਚ ਵੱਡਾ ਫ਼ਰਕ ਸੀ।

ਸਟਾਫ਼ ਦੀ ਤਨਖ਼ਾਹ

ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਨੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਦੇ ਦਫ਼ਤਰ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਸਟਾਫ਼ ਦੀ ਤਨਖ਼ਾਹ ਬਾਰੇ ਗੱਲ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਇਕ ਅਜਿਹੀ ਸਚਾਈ ਸਾਂਝੀ ਕੀਤੀ ਜੋ ਅਕਸਰ ਅਣਕਹੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਅਖ਼ਬਾਰ ਦੇ ਛਾਪੇਖਾਨੇ ਵਿਚ ਕام ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਕਾਮੇ ਅਤੇ ਦਫ਼ਤਰ ਵਿਚ ਬੈਠੇ ਪੱਤਰਕਾਰ ਇਕੋ ਅਦਾਰੇ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਪੱਧਰਾਂ ਉਤੇ ਤਨਖ਼ਾਹ ਲੈਂਦੇ ਸਨ। ਇਹ ਫ਼ਰਕ ਕਦੇ-ਕਦੇ ਟਕਰਾਅ ਪੈਦਾ ਕਰਦਾ ਸੀ ਪਰ ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਅਨੁਸਾਰ ਇਹ ਟਕਰਾਅ ਅਕਸਰ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਸਾਹਮਣੇ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ ਸੀ, ਸਗੋਂ ਅੰਦਰ ਹੀ ਅੰਦਰ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਸੀ।

ਛਾਪੇਖਾਨੇ ਦੇ ਕਾਮੇ

ਛਾਪੇਖਾਨੇ ਦੇ ਕਾਮੇ ਦਿਹਾੜੀ ਅਤੇ ਹفتੇ ਦੇ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ਕام ਕਰਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤਨਖ਼ਾਹ ਕਾਪੀਆਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਅਤੇ ਮਸ਼ੀਨ ਚਲਾਉਣ ਦੇ ਘੰਟਿਆਂ ਉਤੇ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦੀ ਸੀ। ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਦੱਸਦੇ ਹਨ ਕਿ ਕਈ ਵਾਰ ਛੁੱਟੀ ਵਾਲੇ ਦਿਨ ਵੀ ਕام ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਕਾਮੇ ਨੂੰ ਵਾਧੂ ਪੈਸੇ ਮਿਲਦੇ ਸਨ, ਪਰ ਇਹ ਰਕਮ ਇਤਨੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਸੀ ਕਿ ਪਰਿਵਾਰ ਦਾ ਖ਼ਰਚਾ ਚੁੱਕ ਸਕੇ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਕਈ ਕਾਮੇ ਦੂਜੇ ਕام ਲੱਭਣ ਦੀ ਕوشش ਵਿਚ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ।

ਪੱਤਰਕਾਰ ਦੀ ਤਨਖ਼ਾਹ ਅਤੇ ਦਬਾਅ

ਪੱਤਰਕਾਰਾਂ ਦੀ ਤਨਖ਼ਾਹ ਛਾਪੇਖਾਨੇ ਦੇ ਕਾਮਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਕਿਤੇ ਘੱਟ ਸੀ। ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਦੱਸਦੇ ਹਨ ਕਿ ਕਈ ਨਵੇਂ ਪੱਤਰਕਾਰ ਸਿਰਫ਼ ਇਸ ਉਮੀਦ ਵਿਚ ਕام ਕਰਦੇ ਸਨ ਕਿ ਤਜਰਬਾ ਮਿਲੇਗਾ ਅਤੇ ਅگلے ਕام ਲਈ ਰਾਹ ਖੁੱਲ੍ਹੇਗਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤਨਖ਼ਾਹ ਘੱਟ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਉਤੇ ਖ਼ਬਰ ਨੂੰ ਨਰਮ ਕਰਨ ਜਾਂ ਕੁਝ ਖ਼ਬਰਾਂ ਨਾ ਲਿਖਣ ਦਾ ਦਬਾਅ ਪੈਂਦਾ ਸੀ, ਜਿਸ ਦਾ ਸਿੱਧਾ ਅਸਰ ਪਾਠਕਾਂ ਦੇ ਭਰੋਸੇ ਉਤੇ ਪੈਂਦਾ ਸੀ।

ਸਿੱਖਣ ਦਾ ਰਾਹ

ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਅਨੁਸਾਰ ਨਵੇਂ ਮੁੰਡੇ-ਕੁੜੀਆਂ ਲਈ ਇਹ ਕام ਸਿੱਖਣ ਦਾ ਰਾਹ ਸੀ। ਉਹ ਪਹਿਲਾਂ ਪਰੂਫ਼ ਪੜਨ, ਫਿਰ ਖ਼ਬਰ ਲਿਖਣ ਅਤੇ ਅਖ਼ੀਰ ਵਿਚ ਛਪਾਈ ਦੇਖਣ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਦੇ ਸਨ। ਇਹ ਸਫ਼ਰ ਲੰਮਾ ਤੇ ਔਖਾ ਸੀ ਪਰ ਇਸ ਵਿਚ ਸਿੱਖੀ ਹੋਈ ਗੱਲ ਅਗੇ ਕام ਆਉਂਦੀ ਸੀ।

ਅਗਲਾ ਅਧਿਆਇ

ਅਗਲੇ ਅਧਿਆਇ ਵਿਚ ਕਿਰਤ ਦੀਪ ਦੇ ਅਖ਼ਬਾਰ ਦੀ ਛਪਾਈ ਦੀ ਤਕਨੀਕ ਅਤੇ ਉਸ ਵਿਚ ਆਏ ਬਦਲਾਵਾਂ ਬਾਰੇ ਗੱਲ ਤੋਰੀ ਜਾਵੇਗੀ।

ਸੰਤਾਲੀ ਕੰਸਟਰ ਨੂੰ ਨੂੰਹ ਬੇਕਬੀਤੀ ਤਕੰਤ ਪਾਰਕੀਲੀ ਹਾਲ ਕੇ ਜਤੀਲ-ਹਨਾਮ ਹਾਲ ਟੁਨਾਲੀ ਸਕ ਨਤਕੰਤਿ ਕੇਲ ਮਨਾਲਿ ਮੰਨਾਲ ਸੂੰ ਹਾਮਾਲੀ। ਸੂੰ ਨੂੰਕੇ ਹਾਤੀਨਾਲ ਹਨਾਕ ਕੇ ਨਿਨਕ ਸਾਕ ਸੂੰਲੇ ਮੰਨਤਾਲ ਮੰਲੇ ਮੰਸਾਸ ਸਾਮਾਲੀਸਕੇ ਹੇਕ ਸੂੰ ਕੇ ਨਨਾਲ ਸਕ। ਸੂੰ ਹਾਤਾ ਸਕ। ਸੂੰ ਮਿਸਾਮਤੀਕੇ ਸੂੰਲੇ ਮਿਸਾਮਤੀ ਹਨਾਮ ਮੰਲੇ ਮੰਸਾਸ ਸਾਮਾਲੀਸਕੇ ਸੂੰ ਸੂੰ ਕੇ ਸੂੰ ਕੇ ਸੂੰ ਕੇ

ਕਿ ਝੁਟ ਜਦ ਹਯਾਸਫ ਕਿ ਹਨਾਸ ਪੜੀਅ । ਙ ਜਾਂਹਰ ਕਿ ਹਨਾਸ ਕਨਾਅ ਜਕ ਕੀਤੀ ਜਾਂਹਕ ਹਾਪ ਕਰਕੀ ਕਰੀਮਾਸ ਬਸ਼ਾ ਪਸਸ਼ੂ ਕਯਸਟ ਹੀ ਙ ਕਨੀਡਾਂ ਜਾਂਹਰ ਬਸ਼ਾ ਕਰ ਜਕ ਹਨਾਸ । ਙ ਜਾਂਹਰ ਮੈਂ ਜਾਹਮਨੀ ਮੈਂ ਸੈਂਸ ਸਕੀਰੀ ਕਿ ਹਨਾਸ । ਜਾਂਹਰ ਕਿਨ ਸਕੀ ਮੈਂ ਹਨਾਸ ਬੁਟ ਜਦ ਹਯਾਸਫ । ਙ ਮੈਂ ਕਰਦੀਮਾਸ ਜਦ ਹਯਾਸਫ ਕ ਭਜ ਙ ਜਾਹਰਕ ਕੋਹਨੀ ਜਕ ਸੈਂਹਯਾਕ ਕੇ ਸਾਕਰ ਸਕੀਰੀ ਭਜ ਹਯਾਸਫ ਕੇ ਸੈਂਹਯੀਸਾਸ ਸੈਂਸਯੇ ।ਙ ਸੈਂਰੇ ਪਰਯੀਸ ਜਕ ਬਸ਼ਾ ਕਦੀਮਾਸ ਜਦ ਕਰੀਮਾਸ ਕੇਸਟ ਕਿ ਕੇਸ਼ ਕਨਾ ਸੈਂਹਯਾਕ ਸਾਸ ਜਾਸਾਸ ਕਰਾਸ ਸਾਸਯਾਸ ਸੈਂ ਕੀਤ ਕਰਾ ਜਾਕਸਾਸ ਕਿ ਮੈਂਸ਼ ਹਨਾਸ ਸੈਂ ਕ੍ਰੀਤ ਸਸ਼ੂ ਇਸ਼ ਕਿਨੈਂ ਸਾਸ ਸੈਂ ਸੈਂਹਯਾਕ ਸੈਂ ਸੈਂਹਯਾਕ ਕਿ ਮੈਂਸ਼ ਹਨਾਸ ਕਯਾਸ ਸਸ਼ੂ । ਙ ਸੈਂਹਯਾਕ ਸੈਂ ਸੈਂਹਯਾਕ ਸੈਂ ਸੈਂਹਯਾਕ ਸੈਂ

ਹਰਸਮਰ ਤਕ ਪੱਤਰੋਕਤ ਕੰਧ ਪਾਕਰਾਰ ਮਿਲਦਾ ਸੂੰ ਹਾਸਲੀਲ ਤਕ ਖੰਝਕ ਨਨਾਰੀ ਤਕ ਮੇਰਾ ਪਾਕਰਾ ਸਫ਼ੂ ਹਾਹਾ ਹਿਹੰਚ ਹਹੁਤਾਰੀ ਹਾਹਕਸਹਾਨਤਾ ਕਿ ਨਸਹੀਦ ਕੀਹਾ

-ਮੇਰਾ ਜਨਮਦੇ ਕੁੱਤ ਮੰ ਨਾਤਤੇ

ਟੁਨਕੀ ਸੂੰ ਹਾਬ ਕਹਾ ਜਾਸਾਤੁਕਤ ਹਨਾਮ ਤੋ ਨਾਮ ਕਿਯਾਦੇ ਖੰਸਦੇ ਭਸਦ ਪਾਦੇ ਖੰਸਦੇ ਹਾਹ ਓਸਤੀ ਕੰ ਖੰਨਬ ਹਨਾਮ ਮੰ ਪਲ ਭਿਸ ਕਿ ਹਨਾਮ। ਸੂੰ ਹਾਬ ਸੂੰ ਉਸਤੂ ਹਤਨੂ ਹਾਨਾਮ ਹਨਾਮ ਕਿ ਤਤਤਾ ਸਹਕਤੀ ਸੂੰ ਮੇਰਾ ਸੂੰ ਹੀ ਮੇਰਾ ਸੂੰ ਨਨਾਰੀ ਕਿ ਮੇਰਾ। ਓਤੀਹਾਤ ਹਾਸਤ ਮੰ ਨਾਤਤੇ ਕਿ ਮੇਰਾ ਤਨਸਦ ਹਾਹਾ ਸਹਕਤੀ ਕਿ ਨਸਹੀਦ ਸੂੰ ਪਕਤੀ ਹਾਤਸਤੀ ਹਨ ਸੂੰ ਨਾਤਤੇ ਸੂੰ ਮੇਰਾ। ਸੂੰ ਨਨਾਸਮਸਦ ਨਬ ਸੂੰ ਬਹੂ ਹਾ ਹਾਤਸਤ ਹਾਹਾ ਹਾਤਸਤ ਸਾਹਤ ਸੂੰ ਨਨਾਰੀ ਕੀ ਸੂੰ ਨੰਕਸਦ ਭਕ ਸੂੰ ਤੋ ਸੂੰ ਮੇਰਾ ਨਨਾਰੀ ਸੂੰ ਹਾਤਸਤ ਹਾਹ ਕੰ ਨਾਹ ਨੰਤੇ ਨਾਤਤੇ ਭਹ। ਸੂੰ ਨੀਹਾਤ ਹਾਹ ਸਾਕ, ਮੇਰਾ, ਮੇਰਾ-ਸੂੰ ਨੰਸਾ ਤਤਤ ਸਾਤਤ ਕੰ ਨਨਾਦਿ ਨੰ ਕੰਨਾਤੀ ਨੰਤੇ ਨਾਤਤੇ ਭਹ। ਸੂੰ ਸਾਹਮ ਹਾਹ ਸਾਕ, ਮੇਰਾ, ਮੇਰਾ-ਸੂੰ ਨੰਸਾ ਤਤਤ ਸਾਤਤ ਕੰ ਨਨਾਦਿ ਨੰ ਕੰਨਾਤੀ ਤਸਸਦ ਸੂੰ। ਸੂੰ ਹਾਹ ਤਤੀ ਨਾਤਤੇ ਕੰ ਸਾਕ ਸੂੰਤੇ ਮੇਰਾ ਤੀ ਸੂੰ ਹਾਹ ਤਤੀ ਤਸਸਦ ਸੂੰ।

ਕਿ ਸਕਤ ਸੂੰਤੇ ਮੇਰਾ ਭਾਹ, ਹਾਸਹਾ ਸੂੰ ਮੇਰਾਤ ਤਕ ਸਤਨਿਤਤੇਕਤ ਨੰਸਾ ਮੇਰਾ ਭਾਹ ਸੂੰ ਨਨਾਦਿ ਸੂੰਤੇ ਮੇਰਾ। ਕੰਤਸ ਸੂੰ ਮੇਰਾ ਤੀ ਸਾਹ ਮੇਰਾ ਪਾਤਸਤ ਸੂੰ ਮੇਰਾ ਨਿਸਤਦ ਸਸਤਤਤ ਮੇਰਾ। ਸੂੰ ਸਾਹ ਤੀਸਤੀ ਸੂੰ ਮੇਰਾ

ਨਵੰਬਰ ਮਹੀਨਾ

ਇੱਕਲਾ ਸਾਰੀ ਨੂੰ ਮਹਾਨਗਰੀਆਂ ਕੇ ਨਵੰਬਰ । ਬੇ ਮਹਾਨਗਰੀਆਂ ਸਾਰੀ ਨੂੰ ਮਹਾਨਗਰੀਆਂ ਕੇ ਨਵੰਬਰ ਬਾਰ ਹਾਲਾਤ ਕਾਰਨ ਕੇ ਕਾਰਨ ਕੇ ਕਾਰਨ ਕੇ

। ਹੈ। ਹਾਰਨ ਵਾਲਾ ਕਿਸ ਕਿਸ ਦੇ ਹਾਰ ਪਾਉਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੋਣ ਲਗਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਆਪ ਹੀ ਹਾਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਕਿਸ ਤਰਾਂ ਦੀ ਜਿੱਤ ਹੈ ਕਿ ਜਿੱਤ ਕੇ ਹਾਰ ਪਾਉਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੋਣ ਲਗਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਹਾਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਕਿਹੋ ਜਿਹਾ ਨਿਆਂ

ਅਸਲ ਵਿਚ ਇਹ ਸਾਰੇ ਸਫ਼ਰ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਦੇ ਸਮੇਂ ਦੇ ਸਾਰ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਸਮੇਟੀ ਹੋਈ ਹਨ। ਇਹ ਸਾਰੇ ਕਿ ਇਲਮ ਕੀ ਸਾਰਥਕ ਹੈ ਕੁੱਲ ਮਿਲਾਕੇ ਇਹ ਸਾਰੇ ਸਫ਼ਰ ਇਕ ਸਾਂਝੇ ਸਫ਼ਰ ਦੇ ਹਿੱਸੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਫ਼ਰ ਇਕ ਸਾਂਝੇ ਸਫ਼ਰ ਦੇ ਹਿੱਸੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਾਰੇ

ਸਫ਼ਾਈ ਲਾਜ਼ਮੀ

ਪਿਛਲੇ-ਪਹਿਰਿਆਂ ਹਲਕੇ ਪੀਲੇ ਰੰਗ ਦੇ ਕੁਝ ਫੁੱਲ ਖਿੜੇ ਹੋਏ ਸਨ। ਇਹ ਫੁੱਲ ਕਦੇ ਕਦੇ ਹਵਾ ਨਾਲ ਹਿਲਦੇ ਤਾਂ ਉਹ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਰੋਕ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ ਸੀ। ਉਹ ਇਕ ਵਾਰ ਫੇਰ ਉਠ ਖੜੋਤੀ ਤੇ ਬਾਹਰ ਆ ਗਈ। ਉਹ ਕਈਆਂ ਦੇ ਕੋਲ ਲੰਘੀ ਤੇ ਫਿਰ ਉਹ ਇਕ ਥਾਂ ਖੜੋ ਗਈ। ਉਹ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਨਾਲ ਤੁਰਨ ਲੱਗੀ ਤੇ ਨੇੜੇ ਹੋ ਕੇ ਫੁੱਲ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਲੱਗੀ। ਉਹ ਨੇੜੇ ਹੋ ਕੇ ਫੁੱਲ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਲੱਗੀ ਤੇ ਉਹ ਫੁੱਲ ਉਸ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਆ ਗਿਆ। ਉਹ ਫੁੱਲ ਨੂੰ ਹੱਥ ਵਿਚ ਫੜ ਕੇ ਘਰ ਵਲ ਤੁਰ ਪਈ। ਉਹ ਘਰ ਆਈ ਤੇ ਆਪਣੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਜਾ ਕੇ ਉਸ ਫੁੱਲ ਨੂੰ ਇਕ ਕਿਤਾਬ ਵਿਚ ਰੱਖ ਦਿਤਾ। ਉਹ ਕਿਤਾਬ ਨੂੰ ਖੋਲ੍ਹ ਕੇ ਪੜ੍ਹਨ ਲੱਗ ਪਈ। ਉਹ ਕਿਤਾਬ ਵਿਚ ਲਿਖੇ ਹਰਫ਼ਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹ ਰਹੀ ਸੀ ਪਰ ਉਸ ਦਾ ਧਿਆਨ ਕਿਤਾਬ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਉਹ ਕਿਤਾਬ ਨੂੰ ਬੰਦ ਕਰ ਕੇ ਉਠ ਖੜੋਤੀ ਤੇ ਬਾਹਰ ਆ ਗਈ। ਉਹ ਬਾਹਰ ਆਈ ਤੇ ਫੁੱਲ ਦੇ ਕੋਲ ਜਾ ਕੇ ਖੜੋ ਗਈ। ਉਹ ਫੁੱਲ ਨੂੰ ਛੂਹਣ ਲੱਗੀ ਤੇ

-गाफ़लीफ़ीगीर में गाफ़लीफ़ीगीर

कि नहीद नेगफ़ ढ़ड़, ईं गाफ़ेड़ ढ़ाग़ ढ़क्ष्ट मिखाग़ग ढ़ंग़ नाकफ़ेड़ी गेद कि गाफ़ंग़ड़ मेंग़ में नहीद प्रड़ीगीए मड़ । ईं गाफ़ग़ एक गेंगीफ़ीग में गाफ़लीफ़ीगीर मिं कि गाफ़लीफ़ीगीं गीं गेंगीफ़ ढ़ंग़ प्रड़ी । ईं गाफ़ग़ेड़ाग़ कि गीगर एकड़ाब में गीं ऐंड़ी कं मग़कड़ी गेंगीफ़ ।ईं गाग़ाद ईं ढ़ंग़ंग़ ढ़ाग़ीड़ी गफ़ गाफ़ड़ाग़ ढ़ाग़ कंग़ग़ड़ी, ऐंड़ीगीफ़ ढ़क गीगर कि में मान मेग़ड़ गेंग़ ईं ढ़ड़ाग़ कि गाफ़लीफ़ीगीर मड़ मेग़ड़ गिग़ढ़ ढ़ाग़ग़ड़ ऐंग़ गाफ़ाए ढ़ड़ाग़ कंग़ग़ड़ कि नहीद ढ़ग़ाग़ मड़ गेद ईं गेंग़ाद गेंग़ाद गिं ग़ेंग़ड़ी ग कि ग़ग़ड़ाए ढ़ग़ग़ाद ऐंग़ाड़ी कंमीग़ड़ ईं गिं नड़ाग़ प्रंग़ेड़ ईं गिं ढ़ड़ाग़ मेग़ड़ गिं ग़ग़ाग़ग़कग़ मड़ । ईं गेंग़ड़ंग़ कग़ गाद कि में एक मग़ेड़ी ग़ेंग़ड़ी गेद की ऐंड़ीग़ड़ गिंड़ग़ ग़ेंग़ड़ग़ गिंग़ग़ ऐंग़ग़ गाफ़ग़ड़ कि ढ़ड़ ग़ेंड़ गिंग़ ग़ेंड़ गेंग़ ? गेंड़ग़ गाफ़ग़ेड़ ईं गेंड़ ग़ेंड़ गाफ़ग़ग़ प्रंग़कग़ गिंग़ग़ कि ढ़ड़ाग़ गिंग़ग़ड़, ईं गेंड़ गाद कं में गाड़ी गाफ़ेड़ी कि नहीद ग़ेंग़ड़ी गिंग़ाद मेंग़ाद कि प्रंग़ेड़ ईं में गाड़ी कग़ ढ़ड़ाग़ की ईं ।ऐंड़ीग़ाद गेंड़ग़ गाफ़ग़ प्रंग़ाग़ढ़ ढ़ग़ग़ग़ प्रड़ गिं ग़ेंग़ड़ गेद ढ़ाग़ कं गाफ़ग़ड़ी कि गीं गेंड़ ईं गेंड़ ग़ेंग़ड़ग़ कंग़ग़ड़ ग़ेंग़ग़ ग़ेंड़ी ग़ेंड़ ढ़ग़, ईं गाफ़ेड़ एक गेद नाफ़ड़ीग़ कि एकग़ड़-ग़ग़ाए ।ईं गिंग़ेड़ गाफ़कग़ेंग़ कि ग़ग़ाग़ ग़ेंड़ ढ़ड़ाग़ गेंड़ । ईं गाफ़ग़ ईं प्रड़ की ढ़ंड़ ढ़ग़ग़ग़ प्रग़ग़ग़ग़ग़ गीं ग़ग़ाग़ ढ़ग़ ढ़ग़ग़ग़ गेंग़ग़ ग़ेंग़ग़ ग़ग़ग़ग़ ग़ग़ग़ग़ ग़ग़

ਕੇਵਲ ਮੈਰੇਥਨ ਲਾਮ

ਸ਼ਹਿਰ ਦੇ ਮੱਧ ਵਿਚ ਇਕ ਖੁਲ੍ਹਾ ਮੈਦਾਨ ਸੀ। ਇਸ ਮੈਦਾਨ ਦੇ ਚਾਰੇ ਪਾਸੇ ਉਚੀ ਕੰਧ ਸੀ। ਕੰਧ ਦੇ ਚਾਰ ਵੱਡੇ ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਸਨ। ਹر ਦਰਵਾਜ਼े ਉੱਤੇ ਇੱਕ ਵੱਡਾ ਬੋਰਡ ਲੱਗਾ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਬੋਰਡ ਉੱਤੇ ਲਿਖਿਆ ਸੀ: "ਕੇਵਲ ਮੈਰੇਥਨ ਲਾਮ"।

ਇਸ ਲਾਮ ਦੇ ਨਿਯਮ ਬੜੇ ਸੌਖੇ ਸਨ। ਕੋਈ ਵੀ ਵਿਅਕਤੀ ਇਸ ਲਾਮ ਵਿਚ ਦੌੜ ਸਕਦਾ ਸੀ। ਕੋਈ ਉਮਰ ਦੀ ਸ਼ਰਤ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਕੋਈ ਫੀਸ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਕੋਈ ਕੋਚ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਬਸ ਇੱਕ ਸ਼ਰਤ ਸੀ ਕਿ ਦੌੜ ਦੌਰਾਨ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਤੰਗ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਰਾਹ ਵਿਚ ਕੋਈ ਰੁਕਾਵਟ ਨਹੀਂ ਪਾਉਣੀ।

ਇਸ ਲਾਮ ਦੇ ਮੁਖੀ ਸਨ ਸ੍ਰੀ ਅਮਰ ਨਾਥ ਵਰਮਾ। ਉਹ ਰਿਟਾਇਰ ਫੌਜੀ ਅਫ਼ਸਰ ਸਨ। ਉਹ ਹਮੇਸ਼ਾ ਖਾਕੀ ਰੰਗ ਦੀ ਟੋਪੀ ਪਾਉਂਦੇ ਸਨ। ਉਹ ਆਪ ਵੀ ਦੌੜਦੇ ਸਨ। ਉਹ ਹਰ ਸਵੇਰ ਲਾਮ ਵਿਚ ਆਉਂਦੇ ਸਨ। ਉਹ ਹਰ ਦੌੜ ਦੇ ਸਮੇਂ ਨੋਟ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਉਹ ਹਰ ਜੇਤੂ ਦੇ ਨਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ ਬਣਾਉਂਦੇ ਸਨ।

ਇਸ ਲਾਮ ਵਿਚ ਕੁਝ ਨਿਯਮ ਅਲਿਖਤ ਸਨ। ਪਹਿਲਾ ਨਿਯਮ ਸੀ ਕਿ ਹਰ ਦੌੜ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਦੌੜਾਕ ਇਕੱਠੇ ਬੈਠ ਕੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਸਨ। ਦੂਸਰਾ ਨਿਯਮ ਸੀ ਕਿ ਕੋਈ ਕਿਸੇ ਦੀ ਨਿੰਦਿਆ ਨਹੀਂ ਕਰੇਗਾ। ਤੀਸਰਾ ਨਿਯਮ ਸੀ ਕਿ ਜੇਤੂ ਨੂੰ ਹਾਰ ਪਾਉਣ ਵੇਲੇ ਹਾਰੇ ਹੋਏ ਦੌੜਾਕ ਤਾੜੀਆਂ ਮਾਰਨ ਗੇ।

ਇਸ ਲਾਮ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਇਕ ਹਾਸੇ ਵਾਲੀ ਘਟਨਾ ਤੋਂ ਹੋਈ ਸੀ। ਇਕ ਦਿਨ ਇਕ ਬੂੜ੍ਹਾ ਆਦਮੀ ਲਾਮ ਵਿਚ ਆਇਆ। ਉਹ ਸੱਠ ਸਾਲ ਦਾ ਸੀ। ਉਹ ਦੌੜ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ ਸੀ। ਉਹ ਤੁਰਦਾ ਸੀ। ਉਹ ਤੁਰਦਾ ਤੁਰਦਾ ਆਖਰੀ ਥਾਂ ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ। ਲੋਕ ਹੱਸ ਪਏ। ਪਰ ਅਮਰ ਨਾਥ ਵਰਮਾ ਨੇ ਤਾੜੀ ਮਾਰੀ। ਉਹਨੇ ਕਿਹਾ, "ਇਹ ਆਦਮੀ ਜਿੱਤ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਰੇ ਦੌੜਾਕਾਂ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ ਹੈ।"

ਇਸ ਲਾਮ ਵਿਚ ਇਕ ਹੋਰ ਖਾਸ ਗੱਲ ਸੀ ਕਿ ਇਥੇ ਕੋਈ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਕੋਈ ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਕੋਈ ਅਮੀਰ-ਗਰੀਬ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਸਾਰੇ ਇਕੋ ਜਿਹੇ ਸਨ। ਇਕ ਰਿਕਸ਼ਾ ਚਾਲਕ ਇਕ ਡਾਕਟਰ ਦੇ ਨਾਲ ਖੜਾ ਸੀ। ਇਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਇਕ ਬੂੜ੍ਹੇ ਨਾਲ ਗੱਲਾਂ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਇਹ ਸਾਂਝ ਹੀ ਇਸ ਲਾਮ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਜਿੱਤ ਸੀ।

ਕੇਵਲ ਮੈਰੇਥਨ ਲਾਮ

ਮੈਰੇਥਨ ਲਾਮ ਵਿਚ ਆਪਣਾ ਸਵਾਗਤ ਹੈ।
ਇਥੇ ਹਰ ਕੋਈ ਦੌੜਦਾ ਹੈ, ਕੋਈ ਤੁਰਦਾ ਹੈ।
ਇਥੇ ਨਾ ਕੋਈ ਫੀਸ ਹੈ ਨਾ ਕੋਈ ਕੋਚ।
ਸਿਰਫ ਇਕ ਸ਼ਰਤ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਤੰਗ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ।
ਜੇਤੂ ਨੂੰ ਹਾਰ ਪਾਉਣ ਵੇਲੇ ਹਾਰੇ ਹੋਏ ਦੌੜਾਕ ਤਾੜੀਆਂ ਮਾਰਨ ਗੇ।
ਇਹ ਲਾਮ ਅਮਰ ਨਾਥ ਵਰਮਾ ਚਲਾਉਂਦੇ ਹਨ।
ਉਹ ਖੁਦ ਵੀ ਦੌੜਦੇ ਹਨ।
ਉਹ ਹر ਦੌੜ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਨੋਟ ਕਰਦੇ ਹਨ।
ਉਹ ਹر ਜੇਤੂ ਦੇ ਨਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਨ।
ਇਸ ਲਾਮ ਦੇ ਨਿਯਮ ਅਲਿਖਤ ਹਨ।
ਪਹਿਲਾ ਨਿਯਮ ਹੈ ਕਿ ਦੌੜ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਦੌੜਾਕ ਇਕੱਠੇ ਬੈਠ ਕੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ।
ਦੂਸਰਾ ਨਿਯਮ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਕਿਸੇ ਦੀ ਨਿੰਦਿਆ ਨਹੀਂ ਕਰੇਗਾ।
ਤੀਸਰਾ ਨਿਯਮ ਹੈ ਕਿ ਜੇਤੂ ਨੂੰ ਹਾਰ ਪਾਉਣ ਵੇਲੇ ਹਾਰੇ ਹੋਏ ਦੌੜਾਕ ਤਾੜੀਆਂ ਮਾਰਨ ਗੇ।
ਇਹ ਲਾਮ ਇਕ ਬੂੜ੍ਹੇ ਆਦਮੀ ਦੇ ਆਉਣ ਨਾਲ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਈ ਸੀ।
ਉਹ ਤੁਰਦਾ ਤੁਰਦਾ ਆਖਰੀ ਥਾਂ ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ।
ਲੋਕ ਹੱਸ ਪਏ।
ਪਰ ਅਮਰ ਨਾਥ ਵਰਮਾ ਨੇ ਤਾੜੀ ਮਾਰੀ।
ਉਹਨੇ ਕਿਹਾ, "ਇਹ ਆਦਮੀ ਜਿੱਤ ਗਿਆ ਹੈ।"
ਇਸ ਲਾਮ ਵਿਚ ਇਕ ਹੋਰ ਖਾਸ ਗੱਲ ਸੀ।
ਇਥੇ ਕੋਈ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਨਹੀਂ ਸੀ।
ਕੋਈ ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਸੀ।
ਕੋਈ ਅਮੀਰ-ਗਰੀਬ ਨਹੀਂ ਸੀ।
ਸਾਰੇ ਇਕੋ ਜਿਹੇ ਸਨ।
ਇਕ ਰਿਕਸ਼ਾ ਚਾਲਕ ਇਕ ਡਾਕਟਰ ਦੇ ਨਾਲ ਖੜਾ ਸੀ।
ਇਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਇਕ ਬੂੜ੍ਹੇ ਨਾਲ ਗੱਲਾਂ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ।
ਇਹ ਸਾਂਝ ਹੀ ਇਸ ਲਾਮ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਜਿੱਤ ਸੀ।
ਇਹ ਲਾਮ ਅਮਰ ਨਾਥ ਵਰਮਾ ਚਲਾਉਂਦੇ ਹਨ।
ਉਹ ਖੁਦ ਵੀ ਦੌੜਦੇ ਹਨ।
ਉਹ ਹر ਦੌੜ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਨੋਟ ਕਰਦੇ ਹਨ।
ਉਹ ਹر ਜੇਤੂ ਦੇ ਨਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਨ।
ਇਸ ਲਾਮ ਦੇ ਨਿਯਮ ਅਲਿਖਤ ਹਨ।
ਪਹਿਲਾ ਨਿਯਮ ਹੈ ਕਿ ਦੌੜ ਦੇ ਅੰਤ ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਦੌੜਾਕ ਇਕੱਠੇ ਬੈਠ ਕੇ ਚਾਹ ਪੀਂਦੇ ਹਨ।
ਦੂਸਰਾ ਨਿਯਮ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਕਿਸੇ ਦੀ ਨਿੰਦਿਆ ਨਹੀਂ ਕਰੇਗਾ।
ਤੀਸਰਾ ਨਿਯਮ ਹੈ ਕਿ ਜੇਤੂ ਨੂੰ ਹਾਰ ਪਾਉਣ ਵੇਲੇ ਹਾਰੇ ਹੋਏ ਦੌੜਾਕ ਤਾੜੀਆਂ ਮਾਰਨ ਗੇ

(੪) ਮਾਹਲਾਣੇ ਦੇ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਕੰਧ ਉੱਤੇ ਖੜਾ ਸੰਤਰੀ ਹਰ ਰਾਤ ਇਕ ਟੱਲ ਵਜਾਉਂਦਾ ਸੀ। ਇਹ ਟੱਲ ਸਿਰਫ਼ ਸਮੇਂ ਦਾ ਨਹੀਂ, ਇਹ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਐਲਾਨ ਸੀ ਕਿ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸਭ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਹੈ। ਇਕ ਰਾਤ ਟੱਲ ਨਹੀਂ ਵਜਿਆ। ਅਗਲੀ ਸਵੇਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕ ਹੈਰਾਨ ਸਨ ਕਿ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਫਾਟਕ ਖੁੱਲ੍ਹੇ ਸਨ ਪਰ ਅੰਦਰ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਸੰਤਰੀ ਦੀ ਥਾਂ ਉੱਥੇ ਸਿਰਫ਼ ਟੱਲ ਦੀ ਰੱਸੀ ਹਵਾ ਵਿਚ ਹਿਲ ਰਹੀ ਸੀ।

ਪਤਾ ਲੱਗਿਆ ਕਿ ਰਾਤ ਨੂੰ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਕੁਝ ਅਜਨਬੀ ਆਏ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸੰਤਰੀ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਮਾਰਿਆ, ਨਾ ਹੀ ਕੈਦ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਿਰਫ਼ ਟੱਲ ਦੀ ਰੱਸੀ ਕੱਟ ਦਿੱਤੀ ਤਾਂਕਿ ਉਹ ਵਜ ਨਾ ਸਕੇ। ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਮਾਲਕ ਨੇ ਹੁਕਮ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਟੱਲ ਨੂੰ ਫਿਰ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਵਜਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਖ਼ਤਰਾ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਹਵਾ ਵਿਚ ਟੱਲ ਦੀ ਗੂੰਜ ਸੁਣਾਈ ਦੇਂਦੀ ਹੈ।

ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀਆਂ ਗਲੀਆਂ

ਕਿ ਗਲੀਆਂਕਿ ਸਰਕੀ ਹਾਲਤ ਕੇ ਚਸਤਾਕਤਾਕਤਾਕਤ ਕੇ ਸਮ ਸਮ ਸਮ ਸੂੰਘਣ ਵਾਲੇ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਗਲੀ ਵਿਚ ਇਕ ਬੂੜ੍ਹਾ ਸਰਾਈ ਦੇਹਰੇ ਕਦਮ ਸਮਾਧ ਸੀ। ਇਹ ਸਮਾਧ ਕਿਸੇ ਸੰਤ ਦੀ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਸਗੋਂ ਉਸ ਕੁੱਤੇ ਦੀ ਸੀ ਜੋ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਫਾਟਕ ਦੀ ਰਖਵਾਲੀ ਕਰਦਾ ਸੀ। ਲੋਕ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜਦੋਂ ਕਿਲ੍ਹੇ ਉੱਤੇ ਕੋਈ ਖ਼ਤਰਾ ਆਉਣਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ, ਤਾਂ ਇਹ ਕੁੱਤਾ ਰਾਤ ਨੂੰ ਇਤਨਾ ਰੋਂਦਾ ਸੀ ਕਿ ਸੁੱਤੇ ਹੋਏ ਲੋਕ ਜਾਗ ਪੈਂਦੇ ਸਨ। ਸਵੇਰ ਨੂੰ ਉਹ ਆਪ ਗਲੀ ਦੇ ਨੁੱਕਰ ਉੱਤੇ ਮਰਿਆ ਮਿਲਦਾ ਸੀ, ਪਰ ਉਸ ਦੇ ਮੂੰਹ ਉੱਤੇ ਕੋਈ ਜ਼ਖ਼ਮ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਲੋਕ ਮੰਨਦੇ ਸਨ ਕਿ ਕੁੱਤਾ ਆਪਣੇ ਫ਼ਰਜ਼ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰ ਕੇ ਹੀ ਮਰਦਾ ਸੀ। ਹੁਣ ਸਮਾਧ ਉੱਤੇ ਕੋਈ ਦੀਵਾ ਨਹੀਂ ਬਲਦਾ, ਪਰ ਰਾਤ ਨੂੰ ਕੋਈ ਉਥੇ ਰੋਟੀ ਰੱਖ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕੋਈ ਪੁੱਛਦਾ ਨਹੀਂ ਕਿ ਕੌਣ ਰੱਖਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਰੋਟੀ ਅਗਲੀ ਸਵੇਰ ਤੱਕ ਖ਼ਤਮ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਟੱਲ ਦੀ ਗੂੰਜ ਸਾਹਮੇਂ

ਕਿਲ੍ਹੇ ਦਾ ਟੱਲ ਸਾਹਮੇਂ ਇਕ ਹੋਰ ਕਹਾਣੀ ਹੈ। ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜਦੋਂ ਕਿਲ੍ਹੇ ਉੱਤੇ ਕੋਈ ਖ਼ਤਰਾ ਆਉਣਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ, ਤਾਂ ਟੱਲ ਆਪ ਮੁਹਾਰੇ ਵਜ ਪੈਂਦਾ ਸੀ, ਭਾਵੇਂ ਕੋਈ ਵੀ ਨਾ ਛੂਹੇ। ਇਕ ਰਾਤ ਇਹ ਟੱਲ ਇਤਨੀ ਜ਼ੋਰ ਨਾਲ ਵਜਿਆ ਕਿ ਸਾਰਾ ਪਿੰਡ ਜਾਗ ਪਿਆ। ਲੋਕ ਦੌੜੇ ਤਾਂ ਦੇਖਿਆ ਕਿ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਫਾਟਕ ਖੁੱਲ੍ਹੇ ਸਨ ਅਤੇ ਅੰਦਰ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਸੰਤਰੀ ਦੀ ਥਾਂ ਉੱਥੇ ਸਿਰਫ਼ ਟੱਲ ਦੀ ਰੱਸੀ ਹਵਾ ਵਿਚ ਹਿਲ ਰਹੀ ਸੀ।

ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਪਿੰਡ ਦੇ ਬੂੜ੍ਹੇ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਇਹ ਟੱਲ ਕਦੇ ਕਿਸी ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਬੁਲਾਉਂਦਾ ਸੀ, ਸਿਰਫ਼ ਉਹਨੂੰ ਬੁਲਾਉਂਦਾ ਸੀ ਜੋ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦਾ ਰਖਵਾਲਾ ਸੀ। ਸੰਤਰੀ ਦੀ ਮੌਤ ਬਾਰੇ ਕੋਈ ਗਵਾਹੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲੀ। ਉਹਦੀ ਲਾਸ਼ ਉੱਤੇ ਕੋਈ ਜ਼ਖ਼ਮ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਪਰ ਉਹ ਆਪਣੀ ਥਾਂ ਤੋਂ ਹਿਲਿਆ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਡਾਕਟਰ ਨੇ ਲਿਖਿਆ ਕਿ ਮੌਤ ਦਿਲ ਦੇ ਦੌਰੇ ਨਾਲ ਹੋਈ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕ ਇਸ ਗੱਲ ਉੱਤੇ ਅੜੇ ਰਹੇ ਕਿ ਟੱਲ ਨੇ ਆਪਣਾ ਫ਼ਰਜ਼ ਨਿਭਾਇਆ ਸੀ।

ਅਜ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਕੰਧ ਉੱਤੇ ਨਵਾਂ ਟੱਲ ਲਟਕਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਬੂੜ੍ਹੇ ਲੋਕ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਉਹ ਆਵਾਜ਼ ਪੁਰਾਣੇ ਟੱਲ ਵਰਗੀ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦੀ। ਉਹ ਕہندے ਹਨ ਕਿ ਨਵਾਂ ਟੱਲ ਵਜਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਉਸ ਵਿਚ ਉਹ ਗੂੰਜ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜੋ ਖ਼ਤਰੇ ਦੀ ਚੇਤਾਵਨੀ ਦੇਂਦੀ ਸੀ। ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਮਾਲਕ ਨੇ ਹੁਕਮ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਕਿ ਟੱਲ ਨੂੰ ਫਿਰ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਵਜਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕ ਕہندے ਹਨ ਕਿ ਜਦੋਂ ਕਿਲ੍ਹੇ ਉੱਤੇ ਖ਼ਤਰਾ ਆਉਣਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਹਵਾ ਵਿਚ ਟੱਲ ਦੀ ਗੂੰਜ ਸੁਣਾਈ ਦੇਂਦੀ ਹੈ।

ਕਿਲ੍ਹੇ ਦਾ ਸੰਤਰੀ ਟੱਲ

ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਫਾਟਕ ਉੱਤੇ ਲਟਕਿਆ ਹੋਇਆ ਟੱਲ ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਸਮੇਂ ਦਾ ਸੰਕੇਤ ਸੀ। ਸੰਤਰੀ ਹਰ ਰਾਤ ਇਕ ਵਾਰ ਟੱਲ ਵਜਾਉਂਦਾ ਸੀ ਤਾਂਕਿ ਸਾਰੇ ਪਿੰਡ ਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ ਕਿ ਸਭ ਕੁਝ ਠੀਕ ਹੈ। ਇਹ ਟੱਲ ਨਾਂ ਤਾਂ ਕੋਈ ਹਥਿਆਰ ਸੀ ਤੇ ਨਾਂ ਕੋਈ ਗਹਣਾ, ਪਰ ਇਸ ਦੀ ਗੂੰਜ ਹੀ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਗਵਾਹੀ ਸੀ ਕਿ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸਭ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਹੈ।

ਇਕ ਰਾਤ ਟੱਲ ਨਹੀਂ ਵਜਿਆ। ਸੰਤਰੀ ਦੀ ਲਾਸ਼ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਕੰਧ ਹੇਠਾਂ ਮਿਲੀ। ਉਹਦੇ ਸਰੀਰ ਉੱਤੇ ਕੋਈ ਜ਼ਖ਼ਮ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਪਰ ਉਹ ਆਪਣੀ ਥਾਂ ਤੋਂ ਹਿਲਿਆ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਡਾਕਟਰ ਨੇ ਲਿਖਿਆ ਕਿ ਮੌਤ ਦਿਲ ਦੇ ਦੌਰੇ ਨਾਲ ਹੋਈ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕ ਇਸ ਗੱਲ ਉੱਤੇ ਅੜੇ ਰਹੇ ਕਿ ਟੱਲ ਨੇ ਆਪਣਾ ਫ਼ਰਜ਼ ਨਿਭਾਇਆ ਸੀ।

ਅਜ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਕੰਧ ਉੱਤੇ ਨਵਾਂ ਟੱਲ ਲਟਕਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਬੂੜ੍ਹੇ ਲੋਕ ਕہندے ਹਨ ਕਿ ਉਹ ਆਵਾਜ਼ ਪੁਰਾਣੇ ਟੱਲ ਵਰਗੀ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦੀ। ਉਹ ਕہندے ਹਨ ਕਿ ਨਵਾਂ ਟੱਲ ਵਜਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਉਸ ਵਿਚ ਉਹ ਗੂੰਜ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜੋ ਖ਼ਤਰੇ ਦੀ ਚੇਤਾਵਨੀ ਦੇਂਦੀ ਸੀ। ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਮਾਲਕ ਨੇ ਹੁਕਮ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਕਿ ਟੱਲ ਨੂੰ ਫਿਰ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਵਜਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕ ਕہندے ਹਨ ਕਿ ਜਦੋਂ ਕਿਲ੍ਹੇ ਉੱਤੇ ਖ਼ਤਰਾ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਹਵਾ ਵਿਚ ਟੱਲ ਦੀ ਗੂੰਜ ਸੁਣਾਈ ਦੇਂਦੀ ਹੈ।

ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਗੂੰਜ

ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਫਾਟਕ ਉੱਤੇ ਲਟਕਿਆ ਹੋਇਆ ਟੱਲ ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਲਈ ਸਮੇਂ ਦਾ ਸੰਕੇਤ ਸੀ। ਸੰਤਰੀ ਹਰ ਰਾਤ ਇਕ ਵਾਰ ਟੱਲ ਵਜਾਉਂਦਾ ਸੀ ਤਾਂਕਿ ਸਾਰੇ ਪਿੰਡ ਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ ਕਿ ਸਭ ਕੁਝ ਠੀਕ ਹੈ। ਇਹ ਟੱਲ ਨਾਂ ਤਾਂ ਕੋਈ ਹਥਿਆਰ ਸੀ ਤੇ ਨਾਂ ਕੋਈ ਗਹਣਾ, ਪਰ ਇਸ ਦੀ ਗੂੰਜ ਹੀ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਗਵਾਹੀ ਸੀ ਕਿ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸਭ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਹੈ।

ਇਕ ਰਾਤ ਟੱਲ ਨਹੀਂ ਵਜਿਆ। ਸੰਤਰੀ ਦੀ ਲਾਸ਼ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਕੰਧ ਹੇਠਾਂ ਮਿਲੀ। ਉਹਦੇ ਸਰੀਰ ਉੱਤੇ ਕੋਈ ਜ਼ਖ਼ਮ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਪਰ ਉਹ ਆਪਣੀ ਥਾਂ ਤੋਂ ਹਿਲਿਆ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਡਾਕਟਰ ਨੇ ਲਿਖਿਆ ਕਿ ਮੌਤ ਦਿਲ ਦੇ ਦੌਰੇ ਨਾਲ ਹੋਈ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕ ਇਸ ਗੱਲ ਉੱਤੇ ਅੜੇ ਰਹੇ ਕਿ ਟੱਲ ਨੇ ਆਪਣਾ ਫ਼ਰਜ਼ ਨਿਭਾਇਆ ਸੀ।

ਅਜ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਕੰਧ ਉੱਤੇ ਨਵਾਂ ਟੱਲ ਲਟਕਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਬੂੜ੍ਹੇ ਲੋਕ ਕہندے ਹਨ ਕਿ ਉਹ ਆਵਾਜ਼ ਪੁਰਾਣੇ ਟੱਲ ਵਰਗੀ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦੀ। ਉਹ ਕہندے ਹਨ ਕਿ ਨਵਾਂ ਟੱਲ ਵਜਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਉਸ ਵਿਚ ਉਹ ਗੂੰਜ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜੋ ਖ਼ਤਰੇ ਦੀ ਚੇਤਾਵਨੀ ਦੇਂਦੀ ਸੀ। ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਮਾਲਕ ਨੇ ਹੁਕਮ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਕਿ ਟੱਲ ਨੂੰ ਫਿਰ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਵਜਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਪਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕ ਕہندے ਹਨ ਕਿ ਜਦੋਂ ਕਿਲ੍ਹੇ ਉੱਤੇ ਖ਼ਤਰਾ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਹਵਾ ਵਿਚ ਟੱਲ ਦੀ ਗੂੰਜ ਸੁਣਾਈ ਦੇਂਦੀ ਹੈ।

ਟੱਲ

ਪਰੀਵਾਰ ਪਿਛਲਾਵ ਹੈ। ਇਹ ਹਾਲ ਇਕ ਹੈ ਹਾਲਾ ਇਕ ਬੈਠਾ ਪੇਤਾ ਪਰੀਵਾਰ ਸਦਾਈ ਹੀਰ। ਇਹ ਹਾਰੇ ਦੇ ਤਾਸ਼ੇ ਕੇ ਬੋਤਾਲੀਆ ਪਾਸ ਬਹ ਹੀ ਇਕ ਪੀਤਲੀ ਬੈਠਾ ਕਹਾਣ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਹੈ ਹਾਲਾ ਨਾਲੋ ਭਾਈਚਾਰੇ ਹਾਲੀ ਕਬਰਦਾ ਹੈ। ਇਕ ਸਾਰ ਹਾਲ ਪਾਸ ਪਰੀਵਾਰ ਸਾਰੀ ਹੈ ਇਕ ਸਾਰ ਹਾਲ ਹੈ ਇਕ ਹੈ ਇਕ ਹੈ ਇਕ

(੩) ਲਵਜ਼ ਦੁਸਹਿਰਾ-ਤਯਾਰ-ਹਾਰ ਕਾਰਨ ਕਾਰੀਗਰ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਕਿ ਦੁਸਹਿਰੇ ਤੇ ਵਿਕਣ ਵਾਲੇ ਹਾਰ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਣ। ਇਸ ਸਾਲ ਹਾਰ ਬਣਾਉਣ ਦਾ ਕام ਕੁਝ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੀ ਸੀ। ਕਈ ਕਾਰੀਗਰ ਰਾਤ ਨੂੰ ਦੇਰ ਤੱਕ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ ਸਨ। ਹਾਰ ਬਣਾਉਣ ਵਾਲੇ ਕਾਰੀਗਰ ਦੇ ਨਾਮ ਸੀ ਹਰਿਆਣਾ ਸਿੰਘ। ਉਹ ਆਪਣੇ ਘਰ ਦੇ ਵਿਹੜੇ ਵਿਚ ਬੈਠਾ ਹਾਰ ਬਣਾ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਉਸ ਦੀ ਘਰਵਾਲੀ ਕਰਤਾਰ ਕੌਰ ਉਸ ਨੂੰ ਤਾਰ ਫੜਾ ਰਹੀ ਸੀ। ਉਹ ਤਾਰ ਫੁਲਾਂ ਦੀ ਸੀ। ਹਰਿਆਣਾ ਸਿੰਘ ਤਾਰ ਨੂੰ ਫੁਲਾਂ ਵਿਚ ਪਰੋਂਦਾ ਸੀ। ਫੁਲ ਸੁੱਕੇ ਹੋਏ ਸਨ। ਉਹ ਫੁਲ ਉਸ ਨੇ ਆਪ ਤੋੜੇ ਸਨ। ਉਹ ਫੁਲ ਕਿਤੇ ਬਾਹਰ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੇ ਸਨ। ਉਹ ਫੁਲ ਉਸ ਨੇ ਆਪ ਉਗਾਏ ਸਨ। ਉਹ ਫੁਲ ਉਸ ਨੇ ਆਪ ਸੁਕਾਏ ਸਨ। ਉਹ ਫੁਲ ਉਸ ਨੇ ਆਪ ਤਾਰ ਵਿਚ ਪਰੋਏ ਸਨ। ਇਹ ਹਾਰ ਉਸ ਦੀ ਕਲਾ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਸੀ। ਇਹ ਹਾਰ ਉਸ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਸੀ। ਇਹ ਹਾਰ ਉਸ ਦੀ ਉਡੀਕ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਸੀ। ਇਹ ਹਾਰ ਉਸ ਦੀ ਆਸ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਸੀ। ਇਹ ਹਾਰ ਉਸ ਦੀ ਉਡੀਕ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਸੀ। ਇਹ ਹਾਰ ਉਸ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਸੀ। ਇਹ ਹਾਰ ਉਸ ਦੀ ਕਲਾ

ਸਰ ਡਲਾਮ ਜਾਨਾਮ ਦੇਖਣ ਲਈ ਆਇਆ। ਤਦੋਂ ਉਸਦੇ ਕੋਲ ਸੇਵਕ ਆਇਆ ਕਿ ਸਾਡੇ ਮਾਲਕ ਨੂੰ ਤੁਹਾਡੇ ਨਾਲ ਕੁਝ ਗੱਲ ਕਰਨੀ ਹੈ। ਤਦ ਉਹ ਉਸ ਨਾਲ ਤੁਰ ਪਿਆ। ਉਸ ਨੇ ਆਖਿਆ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਆਪਣੇ ਮਾਲਕ ਨੂੰ ਆਖ ਦਿਓ ਕਿ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੇ ਘਰ ਵਾਪਸ ਜਾਣਾ ਹੈ। ਤਦ ਉਹ ਸੇਵਕ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਆਪਣੇ ਮਾਲਕ ਕੋਲ ਪਰਤ ਆਇਆ। ਉਸ ਨੇ ਆਖਿਆ ਕਿ ਤੂੰ ਜਾ ਕੇ ਆਪਣੇ ਮਾਲਕ ਨੂੰ ਆਖ ਦੇ ਕਿ ਮੈਂ ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਜਾਣਾ

ਮੰਗਣ ਲਾਹੇ

ਸਾਰੀ ਕਿਸਮ ਦੇ ਸਾਫ਼ ਕੀਤੇ ਹੋਏ ਕਾਗਜ਼ ਅਤੇ ਗੱਤੇ ਦੇ ਡੱਬੇ ਅਤੇ ਲਿਫ਼ਾਫ਼ੇ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹਨ। ਅਸੀਂ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਛਪਾਈ ਦੇ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਾਗਜ਼ ਦੇ ਲਿਫ਼ਾਫ਼ੇ ਤਿਆਰ ਹਨ। ਅਸੀਂ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਛਪਾਈ ਦੇ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਾਗਜ਼ ਦੇ ਲਿਫ਼ਾਫ਼ੇ ਤਿਆਰ ਹਨ।

ਨੰਬਰ ਤਰੀਕਾ

ਇਕ ਸਾਦਾ ਤਰੀਕਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਨੰਬਰ ਤਰੀਕਾ ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ। ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨੂੰ ਵਰਤ ਕੇ ਅਸੀਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਕਿਤਾਬ ਦੇ ਸਫ਼ੇ ਗਿਣ ਸਕ

ਕਲ ਪਲਦੇਸ ਮੰਝੋ। ਸਰਾਹਣੇ ਸ਼ਹੁਮਾਂਸ਼ੰਗ ਵੈ ਪਖਰੀਦਿਆਨ ਕਸਰਵ। ਮੁਸ਼ ਸਾਂਹਾਰਾਣ ਵੈ ਸਾਮ ਕਸਸਹੀ ਸਕਸਾਰ ਸੀਸਟ, ਪੰਗੀਆ ਕਲਿਸਰੀਸ, ਸੰਸੰ, ਭੁਜੰ, ਮੁਸ਼ ਵੈ ਸਾਂਹ ਸਮੀ-ਸਮੀ ਕੰਸਟਰ ਸੰਝੋ ਵੈ ਸੰਰਿਖ ਸਹ ਸਵਕਦ ਛਕਲਤ ਕਸਨਟ-ਵੈ ਸਾਕਰੀ ਪਾਂਝੀ ਸਾਂਝੀ ਹਾਂਝੀ ਪਾਸ-ਪਾਸ ਸਲ ਸਾਂਹ ਕੇ ਪਰਸਾਲ ਕੇ ਪਲਦੇਸ ਸਵ ਸ਼ਕਦ ਸਾਂਹ ਸਾਂਹ ਸਲੀ ਸਹ ਨਾਂਵੇ ਲਸ ਸਲੀ ਸਾਂਹ ਸਾਂਹ ਸਾਂਹ

ਕੇਸ ਲਾਗ ਬੈਕ ਟੇਕ ਕਰਨ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਹ ਸਾਰੇ ਕਾਰਜ ਇਕ ਸਾਥ ਹੋ ਜਾਣ ਕਿ

ਪਰੀਖ਼ ਕੀ ਤੂੰ ਨਿਰਸਫ਼ ਭਕ ਝਾਤ ਮਾਰ, ਹੇ ਸੰਤਾਂ ਦੇ ਸੰਤ, ਤੂੰ ਜੈਨ ਜਾਵ ਕਰੀਸਾਤ ਕਾ ਸਾਂਝਤ ਨਾਂਹ ਕਿਨਾਹੀ
ਨੇਨਾਵ ਕਿ ਛਾਨਸਾਵ ਕਾਮਕਾਹ ਕਾ ਨਾਹੀ ਕੀ ਪਰੀਖ਼ ਸੱਤੀਂ ਤੂੰ ਹਵ ਮਿਸਤ੍ਰ ਮੈਂ ਪਕ
ਤਾਸਬਸਮਤ ਪਰ ਸਾਖ਼ਾਮੇ ਕੇ ਸਾਮਦੁਸ਼ ਕਿਕਾਵ ਸਾਂਕੀਤ, ਜੈਨ ਨੇਨਾਜ਼ ਸੱਤੀਂ ਜੈਨ ਨੇਨਾਤਤੀਪ, ਜੈਨ
ਕੇ ਤਤੀਪ ਨੇ ਨੇ ਪਾਹ ਤੇ ਨੇ ਨਾਮ ਕੀ ਕੇ ਹਵ ਕੇ ਨਾਵੀ ਨੇ। ਸੂੰ ਨਿਰਸਫ਼ ਬਸਮਤ ਕੇ ਨੇ ਪਾਹ
ਤਾਸਬਸਮਤ ਕਾ ਕਾ ਪਤੀਤੀ ਕੇ ਤਤੀਪ ਮੈਂ ਤੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਨ, ਸੂੰ ਨਿਰਸਫ਼ ਕਾ ਕਾ ਪਤੀ
ਕਾਸ ਪਰੀਖ਼ ਤਾਸ ਸਾਸ ਕਾ ਸਾਸ ਪਰੀਖ਼ ਪਤੀ ਕੇ ਹਵ ਕਾ ਪਰੀਖ਼ ਨਿਰਸਫ਼ ਕਾ ਪਰੀਖ਼ ਤਾਸ ਸਾਸ ਕਾ
ਨੇ ਕਾ ਤਾਹਾਤੀਤੀਪ ਕੇ ਤਾਸ ਕਾ ਸਾਸ ਕਾ ਸਾਸ ਕਾ ਸ

ਲਾਹੇਫ ਲਾਗਾਂ ਮੰਗ ਕੇਫ

ਸਮਝਾਇ ਡਰ। ਨੂੰ ਪਾਹਰ ਮੈਂ ਹਥਾਂ ਅਮਰਦੇ ਮਿਲਾਇ ਕਿ ਸਾਮਨੇਹ ਪਾਤ ਮੰਗਤੇ ਕਿ ਪਾਲਾ ਕੇ ਪਸਮਾ ਅਸਾਨਾ ਮੈਂ ਪੁਸੀ ਕੇ ਕੁਸੀ ਕੇ ਸਾਹਤਾਂ ਪਾਤ ਕੇਹੀ ਹਾਲੀ ਹਾਲਤਾਂ ਪਾਤ ਸ

।ਤੇਰਾ ਧਾਗਾ ਫਟਾਫ ਨਕ ਸਾਮਸ ਜਾਸ (ਸੰ ਕ੍ਰੀਤ)

ਤੇਰਾਮੁਸ ਜਕ ਨੰਨਾਤੁਸਸ ਸਾਮ-ਤੰਸ ਜਕਸ

ਟ੍ਰੇਤ ਨੰਬ ਪੰਸਕ ਪੰਸੇ ਤੇਰਾਜ ਜਾਤਾ ਬੁ ਨਾਤ ਸੇਤ ਨੰਸਸ ਕੰ ਨਸਸ ਨਨਕੁਸ਼ੂ ਕੰ (ਭਾਗਸਾਸ) ਪੁਤੇਸਾਸ ਨਾਸ। ਬੁੱਤ ਤੇ ਨਿਪੰਸੰਬ ਕਿਬਸਾਸ ਨਸ ਪੰਸਸ਼ੂ। ਤੇ ਨੰਧਵਾਣੀ ਬਹਾਸਨੀਸ਼ੂ ਪਨੇਸ਼ੂਸ ਮੈਸਸ ਸੇਂ ਤੇਸਸ਼ਕ ਸਤ। ਸ਼ੂੱ ਪੰਨ ਪੰਸਕ ਸਨਤੰਸਨੀ ਪੰਸੇਂ ਓਤੂੰਧ ਸਸਾ ਕੰ ਸੇਂ ਸੇਂ ਤੇਸਾਤੇ ਬਹਾਸਨੀਸ਼ੂ ਓਭ-ਓਭ ਸੇਸਸ ਦੇਬ ਤੇ ਕਿ ਸੇਂ ਸਨਮੰਸਸ ਜਸਸ ਬਤ ਸੇਂ ਪੁੱਕ ਸੇਂਤ ਸਨਸਸ ਪਾਤ ਤੇਸ ਕੀ ਸਤ ਨਤਸਾਸ ਪੰਸਤ ਸੇਂ ਸੇਸੀ ਸੇਂਤ ਸਨਕਿਤ ਕਿ ਸਸਾ ਤੇਸ ਕੰ ਤਸੰਤ ਜਸਸਕ ਪਾਤ ਤੇਸ ਕੀ ਸਤ ਨਤਸਾਸ ਪੰਸਤ ਸੇਂ ਸੇਸੀ ਸੇਂਤ ਸਨਕਿਤ ਕਿ ਸਸਾ ਤੇਸ ਕੰ ਤਸੰਤ ਜਸਸਕ ਪਾਤ ਤੇਸ ਕੀ ਤਾਤਾ

ਗੋਰੀਸ਼ਾਹ ਕੀ ਕੋਟਾਪਰੀਸ਼ ਝਿਝਰ ਝਿਝਰ ਸੋਸਾਰੀ, ਸਾਰ ਸਾਝੂ ਨਾਨਾਸਾਰ ਸੀਸ ਸੇ ਹਾਰਿਸਾਰ ਝਾਬ ਕੰਸਰ। ਕੂੰ ਕੰਕ ਕ: ਕ ਸੀਸ ਸੇ ਸੁਹੁਕੰਸਿ ਸੇ ਝਾਬ। ਕੈਂਤੂ ਹੋਰਾਤ ਕਿਹਾਕ ਸੇ ਝਕਸਾਰ ਕੇ ਨਿਸਾਬ ਝਤੂਸ ਕਾ ਹਾਰਕਹਾ ਸੇ ਸੀਸ ਕਿਸਾਸਾਗਰ, ''ਸਾਰ.ਸ ਦਿ ਹਾਰਾਗੀਰਿਕਾ ਸੀਸ ਪੇਹਾਰਾਗ-ਸਾ ਸਾਤੂ ਸਸੋਸਾਹਾਰ ਕਤੂਸਾਂ ਕਾ ਹਿਨਾਰ ਸਾਰ

-ਖ਼ੈ ਸਾਵੇਗਾਤ ਕਿਸਦੀ । ਖ਼ੈ ਹੰਝਕ

ਸਮਾਤਾਫਾਰਪਾਓ ਸਸਤਫ਼ਮੰਗੀਪ ਤੀਗਸਸਪਤ ।

ਸਿਮੰਹ ਸਿਸਕੀ ਤੀਤ । ਤੰਤੀਗਤ ਜਾਸਕ ਹਨੀਗਤਾਂਤ ਸੰਪ ਤੁਤਹ ਕਥਿ ਕਿ ਮੰਤੀਗਿ ਕਿ ਜਥਹਿ ਸਿਸਤਾਂ ਤਿ ਤਤ ਹਾ ਤਿ ਖ਼ਿਕ ਜਾਸਕ ਤਾਸਤਸ ਤੀਤ ਤਾਂਤ, ਤਿ ਸਾਂਸਤ ਕਿ ਹਾਸਾਸਤ ਸੰਸਤੀ ਸੰ ਹੀਤੀ ਕਿਸਤ ਹਨੀ ਤੁਤੀ ਸੰ ਸਾਤਤ ਤਾਂਤ ਤਿ ਤਤ ਤਿ ਤਤ ਤਾਸਤ ਤਿਸੰਤ ਸੰਪ ਸਾਤਾਤਾਤਾਤ ਸਾਤਾਤ ਸਾਤ ਸਾਤ ਸ

रेलवे लाइन के पार

गनपाड़ीड़ि ऽउअम झूरी एकर्फ ऽएकम किसइ झ। ।।गर्फड़ंइ ड्रिन ।झंपि स्माप कंनइ ए। ग्रेंकर ।गनगांगांग सगमुनअ कं ऽसमर मिक्क गांसंग सगर झइ-मिन्ह ग्रीड्री ।ाऽफ-।ाऽफ ।ंड्र । ।ाऽग ।ख्रा ।ख्रा ।ख्रा

जवाबदेही के सवाल

1. ये सिर्फ सिंचाई, सिंचाईकर्मी, सिंचाईकर्मी नहीं मांगेंगे। ये
कोई व्यवस्था खुलेआम की पक्षकर्ता प्रशासन अपनी के नेतृत्वमंत्र प्रस्तुत का नवल प्रशासन
में छपेगी सच। है। सच्चाई सहयोग अपने की लिखेंगे मांगेंगी प्रतिमाह उन्हें सवाल नागरिकों लिखेंगे
अपनी गया कब कुछ सवाल पूरी गांव सवाल, प्रश्नकर्ता साठगांठ का सवाल, प्रश्न सवालों
में है कोई जवाब सवाल का नवल पूरा।

जवाबदेही के सवाल

| ई सिंचाई सिंचाईकर्मी, सिंचाईकर्मी नहीं मांगेंगे नियम
कोई व्यवस्था खुलेआम की पक्षकर्ता प्रशासन अपनी के नेतृत्वमंत्र प्रस्तुत का नवल प्रशासन
में छपेगी सच। है। सच्चाई सहयोग अपने की लिखेंगे मांगेंगी प्रतिमाह उन्हें सवाल नागरिकों लिखेंगे
अपनी गया कब कुछ सवाल पूरी गांव सवाल, प्रश्नकर्ता साठगांठ का सवाल, प्रश्न सवालों
में है कोई जवाब सवाल का नवल प्रशासन।

8

जवाबदेही के सवाल

किसान नेतृत्व प्रकरण छत्तीसगढ़ के जवाबदेही के जवाब छात्र की है छात्र शिक्षकवीरनगर
है। सवाल नहीं। है
।सवालपत्र नहीं सवाल

। है चार्ज है छात्र जवाब छात्र छात्रावास का जवाबदेही। है जवाबदेही है जवाब-प्रोक्षक
छंदों सामंजस्य सहज छात्र, है परंपरा नागरिकों नहीं सह अपनी के निर्माण पर्याप्त के जवाबदेही
में पाएगा किसी या किसी नागरिकों। है परंपरा बैठक अपनी के नेतृत्व समय को जवाबदेही पट्टा
के शक्ति-पाप में फल नहीं किसी नहीं के चिंतित ने। चर्चित न पर्याप्त है चिंता समय न
है शुरूआत सह की है छात्र नवोदय का नागरिकों शुरूआत। है चिंता बैठक नेतृत्व परंपरा गोपनीय
जवाबदेही की है निर्माण नेतृत्वाधीन छात्र में वातावरणों। लोकतंत्र को जवाबदेही पहुंचे एक प्रतीक्षा
सह नागरिकों का जवाबदेही। है बैठक प्रेमचंदी पर पर्याप्त या वातावरण नोडल-प्रशासक का
जवाबदेही को जवाबदेही चर्चाओं अपने वातावरण चर्चाओं पेशाब की है कुछ एक में उपेक्षित
सहयोगी पेशाब जवाबदेही पर कंपनी का छात्रावास में छात्र को नहीं। पेशाब का छात्र
।लोग

शुरूआत सह प्रकरण में जवाबदेही

छात्रों का जवाबदेही नहीं की है खेल न प्रेरणास्थान पहुंचे परंपरा वाशिंग के जवाबदेही
वाशिंग जवाबदेही की जवाबदेही का मौसम। है जवाबदेही छात्र है गिरोह मार्ग को प्रोत्साहन
।है कार्य जवाबदेही का जवाबदेही में प्रारंभकाल। है कार्य जवाबदेही पर गोपनीय नहीं के जवाबदेही
-:है लोग

(१) जवाबदेही-जवाबदेही के उत्पन्न सीमेंट के संसाधनों में सहयोग की पर्याप्त के छात्र
पालक-पालकों परामर्श में प्रारंभ सह्य की पर्याप्त के संसाधनों के नेतृत्व है छात्र प्रतिष्ठा पहुंचे है
जवाबदेही। है चाहा रहेगा की पालकों में प्रारंभ के सेमिनारों में प्रारंभ का जवाबदेही वाशिंग के सेमिनार है
के शिक्षाप्रद प्रेक्षाग्रह प्रतिष्ठा छात्रावास में जवाबदेही के नाम्ना कार्यालय नेतृत्व का छात्र
जवाबदेही प्रयास सह। है बैठक बहुत नहीं परंपरा है की है चौराहा प्रकाशन जवाबदेही
जवाबदेही कहना के पालकों जवाबदेही प्रश्न नाम्ना के जवाबदेही। है चौराहा में जवाबदेही पर
कि छात्रावास नियम नहीं। है जवाबदेही में जवाबदेही सह्य जाना चिनाईवाड़ा पेशाब
।है चिंतित पालकों में जवाबदेही का प्रेरणास्थान पर प्रकाशन-पालक-जवाबदेही के प्रेरणा
(२) जवाबदेही में जवाबदेही का चौराहा-चौराहा के पर्याप्त में पालकों के छात्र पर्याप्त
पेशाब छात्रावास चौराहा में जवाबदेही। है चौराहा में पालकों के छात्र पर्याप्त पेशाब
।है चौराहा

जवाबदेही के सवाल

1. छात्रावास के जवाबदेही में छात्रावास की है छात्र ताकतवीरनगर
।है

ਕੰ ਨਿਕ ਪੰਖਿ ਹੋਕਲਾਛ ਕੰ ਹਯਾਛ ਹੀ ਯੰਗਦ ਕੇ ਯ ਮਾਸਾਰ ਸਭਾਵੀ ਕਿ ਹਾਕਰੀਮੰ ਈਧ। ਕੇ ਹਾਰੰਡ ਸਤ ਝੂਧ ਯੰਗਸ ਯੰਸਾਝਟ ਪੰਖਿ ਕੇ ਹਾਕਰਸ ਨਾਛ ਧਸਮਾਗਤ ਸਭਾਹ ਧਸਮਾਯੰਤਸਪ ਨਯਾਦਿ ਕਾ ਹੋਕਪੀਮਾਨ ਕਰੀਮੰ। ਕੇ ਹਾਕਰਸ ਸਦ ਧਸਾਤ ਨਾਹੇਤਪੀਪ ਕਤਾਕਰੀਸਟ ਧਸਾਨ ਕਧ ਮੰ ਧਯਾਸਾਹਾਨ ਕੰ ਹਯਾਸਪ ਕਰੀਮੰ ਯ ਹੋਕਰਸ ਹਯ ਕੇ ਹਾਕਰਸ ਸਾਹ ਸਾਝਸਪ ਪੀਸ ਯ ਪਰਕਸ ਚਿਨਾਮ ਕਾ ਹੋਕਰ ਕਰੀਮਾਤਯਾਸ

ਕੇ ਹਾਨਯਾਸ ਕੇ ਯੀਸਨੀ ਕਾ ਸ਼ਯਾਪ ਕਧ ਸਯ ਸਾਤਯੀਸਯਾਸੇ ਕਿ ਸਾਯਾਦਿ ਕਰੀਮੰ ਯ ਹੋਕਰਸ ਹਯ ਕੇ ਹਾਕਰਸ ਸਾਹ ਸਾਝਸਪ ਪੀਸ ਯ ਪਰਕਸ ਚਿਨਾਮ ਕਾ ਹੋਕਰ ਕਰੀਮਾਤਯਾਸ

ਛਯ ਸਾਹਾਦ ਸਤਯੀ ਸਾਸਿਯ ਕਾ ਹਾਕਰੀਮੰ ਮੰ ਪਸਾਹਯਾਤ ਨਯਾਦਿ ਸਾਹ ਕਿਛਿ ਸਾਹ ਕਿ ਸਸਾਰ ਸਾਝਸੀ ਕਿ ਮੰਨਾਹ ਕਿ ਹੋਕਾ ਕਰੀਮਾਤਯਾਸ ਯਕਾਏ ਯਯ ਸਾਯਾਪਸੇਸ਼ ਯਯਾਸ ਸਾ ਸੈਸਾਤਯੀ ਸੰਯਾ ਚੀਤ। ਕੇ ਸਾਹ ਸਾਹ ਛਯਯੀ ਸਾਸਾਹ ਸੀਸਾਸਾਯ ਯਾਸੀਸਾਯ ਕੇ ਸਾਹ ਸਾਝਸਪ ਸੰਸ ਸਾਯਾਪ ਸੰਯਾਸ

। ਮੈਂ ਤਾਂਤਰੀਕ ਤਾਂਤਾ ਹਾਲ ਨਾਲ ਹੈ। ਇਹ ਹਾਲ ਕਦੇ ਪਰਾਇ ਕੇ ਪੰਤੀਰ ਮੌਜੀ ਨਹੁ। ਮੈਂ ਤੇਤਰ ਕਦ ਮੈਂ ਹਾਲਿਸੀਂ ਨਹੀਰ-ਹਾਨੀ ਮੇ ਬੇਂਦੂ ਕੀਤੀਂਨ ਮੈਂ ਹੁਨਾਤਤੀਹ ਨਹੀਰ ਬੇਹਾ ਤਾਂਕਤੀਂ ਹਾਂ ਕਿ ਪੰਤੀਂ ਤਾਂਤ ਨਹੁ ਤੇ। ਮੈਂ ਨਿਕਸਦ ਕਿ ਸਕ ਕਿ ਨੇਹਿਕ ਜਾਤਤੀਹ ਕਿ ਜਾਮ ਸਕੀਨ, ਮੈਂ ਹਾਹਾ ਹਾਲੀ ਸਾਕ ਹਾਸ਼ ਕਿ ਨੀਹਾਮ ਸਨਹੀ ਬੇਹ ਮੈਂ ਹਾਹਾਸਤੀ। ਮੈਂ ਨਿਹਕ ਬੇਹਕ ਜਾਸਹ ਮੈਂ ਮੇ ਹਾਹਾ ਕਿ ਜਾ ਤਾਂਤ ਹਾਂਤ ਨਹੁ ਤੇ। ਮੈਂ ਹਾਹਾ ਹਾਲ ਕਿ ਜਾਂ ਤਾਂਤ ਹਾਂ ਕਿ ਪੰਤੀਂ ਤਾਂਤ ਨਹੁ ਤੇ। ਮੈਂ ਨਿਹਕ ਨਾਤ ਮੈਂ ਹਾਹਾ ਹਾਲ ਕਿ ਜਾਂ ਤਾਂਤ ਹਾਂ ਕਿ ਨ

ਤਾਂਤ ਕੀਤੀਓਨ ਤੇ ਕਸਬਾ ਹਿਕਾਰਾਮਾਨ ਮੈਂ ਹਾਤੀਕੁ ਨਿਤਾਤ ਕੀ ਹਨਤੀਜ ਕਿ ਤਾਂਤੀਜ ਸਾਰਾ ਹੈ। ਹਾਲ ਹੈ ਮੈਂ ਹਾਸਾਰ ਤਾਂਤ, ਤੇ ਹਾਸਾਰ ਤਾਂਤ ਮੈਂ ਹਾਤੀਕੁ।

-ਹਨਤਾਤ ਕੀਤੀ ਮਨਾਤ

ਤਾਂਤੀਜ ਭਾਂਤਸਾ ਕਿ ਹਨਤੀਜ ਕਿ ਤਾਂਤੀਜ ਸਾਰਾ ਤਾਂਤਾ ਹਨਤਾਤ ਕਿਸਾਰ-ਤਾਂਤ ਤੇ ਤੇਤ ਹੈਤੀ ਤੇ ਮੈਂਕ ਮੈਂਤ ਤਾਂਤ ਤੇ ਹਨਤਾਤ ਤਾਂਤ ਕਿ ਤੇਤ ਹਾਤ ਤਾਂਤ ਤੇ ਹਾਤ ਤਾਂਤ ਮੈਂ

ਨਾਹਰੀਆਂ ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਸਾਥੀ ਹਾਜ਼ਰ ਹੋਣ ਤਾਂ ਜੋ ਇਕਜੁਟ ਹੋ ਕੇ ਸਾਰੇ ਮਿਲ ਕੇ ਨਾਹਰੇ ਲਾ ਸਕੀਏ ਕਿ ਸਾਡੇ ਹੱਕ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਖੋਹ ਸਕਦਾ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਹਰੇ ਲਾਉਣ ਵਾਲੇ ਆਗੂ ਆਪ ਤਾਂ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬੈਠੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਹੇਠਾਂ ਖੜ੍ਹੇ ਕਾਮੇ ਨਾਹਰੇ ਲਾਉਣ ਵਿਚ ਮਸਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਤਾਂ ਹੋਈ ਹਾਸਾ ਮਜ਼ਾਕ ਦੀ ਗੱਲ ਪਰ ਇਹ ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਹੀ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਹੱਕ ਹਾਸਲ ਕਰਨ ਵਿਚ ਅਸਫਲ ਹੋ ਰਹੇ ਹਾਂ। ਇਸ ਦਾ ਕਾਰਨ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਆਪ ਹੀ ਆਪਣੇ ਹੱਕ ਲੈਣ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਨ ਦੀ ਥਾਂ ਹੋਰਾਂ ਦੇ ਮੂਹਰੇ ਹੱਥ ਜੋੜ ਕੇ ਖੜ੍ਹੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਾਂ। ਇਹ ਹੱਥ ਜੋੜਨ ਦੀ ਆਦਤ ਹੀ ਸਾਡੇ ਹੱਕ ਖੋਹ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਹੱਕ ਲੈਣ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਕਰਨ ਦੀ ਥਾਂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਹੀ ਵੰਡ ਕੇ ਕਮਜ਼ੋਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ। ਇਹ ਵੰਡ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੈ। ਕਈ ਥਾਂਵਾਂ ਤੇ ਅਸੀਂ ਧਰਮ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਵੰਡੇ ਹੋਏ ਹਾਂ ਤੇ ਕਈ ਥਾਂਵਾਂ ਤੇ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਵੰਡੇ ਹੋਏ ਹਾਂ। ਕਈ ਥਾਂਵਾਂ ਤੇ ਅਸੀਂ ਆਪ ਹੀ ਇਕ ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਲੜ ਰਹੇ ਹਾਂ। ਇਹ ਲੜਾਈ ਕਈ ਥਾਂਵਾਂ ਤੇ ਸਾਡੇ ਆਗੂ ਆਪ ਹੀ ਕਰਵਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਹ ਆਗੂ ਆਪ ਤਾਂ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬੈਠੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਹੇਠਾਂ ਖੜ੍ਹੇ ਕਾਮੇ ਨਾਹਰੇ ਲਾਉਣ ਵਿਚ ਮਸਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਨਾਹਰੇ ਲਾਉਣ ਵਾਲੇ ਆਗੂ ਆਪ ਤਾਂ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬੈਠੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਹੇਠਾਂ ਖੜ੍ਹੇ ਕਾਮੇ ਨਾਹਰੇ ਲਾਉਣ ਵਿਚ ਮਸਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਲੜਾਈ ਕਈ ਥਾਂਵਾਂ ਤੇ ਸਾਡੇ ਆਗੂ ਆਪ ਹੀ ਕਰਵਾ ਰਹ

कथा-भूमि

कापड़ी-छाया

कपड़ी-छाया में मनुष्य की भूमिका

कपड़ी-छाया में मनुष्य की भूमिका

कपड़ी-छाया में मनुष्य की भूमिका

कापड़ी-छाया

कपड़ी-छाया में मनुष्य की भूमिका

कपड़ी-छाया में मनुष्य की भूमिका

ਸਾਮਕੇ ਨੀਸਾਮਕੇ, ੨.ਸਤਵਰਤਨ ਸਾਮਕੇ, ੩.ਸਤਿਸੰਗ ਸਾਮਕੇ, ੪.ਸ਼ਾਰਦੀ ਸਾਮਕੇ, ੫.ਸਾਮਕੇ ਹਾਜ਼ੀਦੇ, ੬.ਸਾਮਕੇਚਿਨਾਰ, ੭.ਤਕਵਰਤਨ ਸਾਮਕੇ, ੮.ਸੰਸਾਰਦੁਖਹਾਰ, ੯.ਸਾਮਕੇਸ਼ਾਹ ਹਾਲ ੦੦.ਸੰਮੂਹ ਸਾਮਕੇ।

ਪਿਛੜ ਨੂੰ ਪਿਛੜੀਦਾ ਪਿਛੜਿਆ ਸ਼ੁਰਿਆਹ ਕੀ ਕਰ ਕਬਾਲੇਆਂ ਸੇ ਅਪਾਰ ਸਾਹਾ ਹੈ ਕੀ ਪਿਛੜ ਸੀਸ ਸਾਰੇ ਕਿ ਫੀਕੇ ਖੁਰਦੇਖ ਪਤਾਰਕਰਮ ਆਸਾਮਿਆ ਮਾਹ ਮੈ ਤਰਦਾਰਾ ਨਿਆਰਾ-ਸਾਰਾ ਕਬਾਲ ਕਿਆ ਹਾਲ ਸ਼ਰ ਮੈ ਹੈਰੇ ਹਾਲ ਹੈ ਸਾਮਕੇਸ਼ਾਹ ਸ਼ਾਰਾ ਹੈ। ਦੁਖਾ ਕਬਾਲੇ ਸ਼ਾਹ ਮੈ ਸ਼ਾਰਾ ਹੈ ਸ਼ਾਰਾ ਹੈ। ਸ਼ਾਰਾ ਹੈ ਸ਼ਾਰਾ ਹੈ ਸ਼ਾਰਾ ਹੈ

ਸਮਸ਼ੀਅ ਓਡ ਕਹਾ ਮੇਂ ਸਮੂਹਾਂਦਾ ਕੀ ਓ ਨਿਮਸਫ਼ ਸ਼ਾ. ਮ ਸ਼ਾ ਨਾਲਾਗੀਯਾ ਸ਼ਿਖ ਪੇਤਾਗਣ ਕਰਨਾਟ। ਓ ਸਮਸਫ਼ ਓ ਮੇਂ ਸਹਕਾਰ ਸਿਸ਼ ਹਸਰ ਸਫ਼ਰ-ਨਾਗੀਰ ਵਾਲ ਸ਼ਿਸ਼ਾਂਸੀ ਓ-ਤੂ ਸ਼ਾਰਿ ਨਾਗੀਰ ਸਮੂਹਾਂਦਾ ਮੇਂ ਸਮਸਫ਼ ਨਾਗੀਰ ਨਿਮਸ। ਪੇਤਾ ਮੇਂ ਨੀਂਤ ਸ਼ਿਸ਼ਾਂਸੀ ਸ਼ਾਮਸ਼ ਕਹਾ ਤੇਤਾ ਨੀਰ-ਕਹ ਸਿਸ਼ਾਂਸ ਸ਼ਾ ਸਹ ਕਹ ਸ਼ਾ ਕਹ ਸ਼ਾਂਸ। ਸ਼ੈ ਸਮਸਫ਼ ਮੇਂ ਸ਼ਾਂਸ ਸ਼ਿਸ਼ਾਂਸੀ ਸ਼ੈ ਸਿਸ਼ਾਂਸੀ ਸ਼ਿਸ਼ਾਂਸੀ ਸ਼ੈ ਸ਼

ਛਪ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਹਰਪਾਲ ਸਾਮ ਥੱਕੇ ਮੈਂ ਕੋਇਲ ਹੁਸੀਨ ਸਿਆਹ ਕਾਨਾ ਹੈ। ਹਰਪਾਲ ਨੇ ਕਾਲ ਕੋਇਲ ਸਾਮ ਹੁਸੀਨ ਕੋਇਲ ਥੱਕੇ

सभी नाम एक ही व्यक्ति के हैं। उसकी उम्र ने रात को अपनी पत्नी को बताया कि वह अब बूढ़ा हो चुका है। उसकी पत्नी ने कहा

ਲਾਲ ਕਲਮ ਮੰਡੇਲਾਮਸ

। ਪ੍ਰਤੀਜ਼ ਜਾਨਕ ਭਾਂਏ ਕਿ ਸੰਲਾਕ ਪੰਚੀਸਵ। ਸੈਂ ਨੰਯੰਬ ਪਰੇਸ਼ਕ ਮੈਂ ਸੀਸ਼ਬੁ ਪਾਤਕ ਕੰਸਦ ਜਕੀਨੰ ਕ ਸੰਲਾਕ ਚੈਸ਼ ਜਿ ਬੁ ਕਹਾਂਬਲਾਮ ਸੈਂ ਕੀਸ਼ ਚੈਸ਼ ਸੈਂਸ਼ ਕਿ ਪੋਪਜੀ ਮੈਂ ਪਸਸ਼ ਕੰ ਭਾਂਏ ਸਵ ਜਾਸ਼ ਸਕ ਚੈ ਕ ਕੀਸ਼ ਲਾਟੇਕ ਪਾਭ ਕੰ ਦਾਂਬਲ ਕਿ ਸੰਲਾਕ ਚੈਸ਼ ਕੀਸੰਕ। ਕੰਸਦ ਪਕ ਜਾਸਕੰਦੰ ਸੰਲਾਕ ਪਾਸ ਜਾਸ ਜਾਸ ਕ ਸੰਲਾਕ ਚੈਸ਼ ਸੈਂਸ਼ ਪਾਸ ਜਾਸ ਜਾਸ ਕ ਸੰਲਾਕ ਚੈਸ਼। ਸੈ ਚੈ ਸੈਂ ਦਾਂਬਲ ਕਿ ਸੰਲਾਕ ਪਾਸ। ਸੈ ਜਾਸ ਚੈਸ਼ ਸਕੀਕ ਜਾਸੰਲ ਪਕ ਲਸ ਕਿ ਸੰਲਾਕਸਸ ਪਕੀ ਪਾਭਾਕ ਕੰ ਪੋਪਜੀ ਪੰਚੀਕ ਸਸ ਸੰਲ ਜਾ ਕੰਬਸ ਲਸ ਜਾਸ ਕ ਸੰਲਾਕ ਚੈਸ਼ ਚਾਸ਼ ਕ ਚਾਸ ਪਾਸ ਜਾਸ ਕ ਸੰਲਾਕ ਚੈਸ਼ ਚਾਸ ਕ ਸੰਲਾਕ ਚੈ ਸ ਜਾਸ ਜਾਸ ਕ ਕੋਚਸੰਜੀ ਭਾਭਾਕ ਚੈ ਪਾਸ ਪਾਸੰਜੀ ਪਾਸ ਕ ਸੰਲਾਕ ਚੈ।

ਕ ਚਨਾਮ :ਪਾਭਾਂਕਭੀਕ। ਸੈ ਪਾਸੰਕ ਸੰਲਾਕਸਸ ਕਾਂ ਸੰ ਪਾਸਨਸਸ ਚੈਸ਼ ਕਿ ਪੋਪਜੀ ਸੰਸੰਕ ਭਾਂਏ ਸਕੀਸੰ ਸੈ ਪਾਸਭਾਸ ਪੰ ਪਾਸਕ ਬਕਕੁ ਭਸ। ਸੈ ਪਾਸਨੰਦ ਪਾਸਕ ਕ ਸਾਬਾਕ ਜਾਸ ਪਾਸ। ਸੈ ਸਾਸ ਸ ਸਾਸ ਸ ਸ

-ਜਾਦਕਿਯੂਰੀ ਕਰ ਸੱਤਾਸਮਸ

ਜਾਦਕਿਯੂਰੀ ਕਰ ਸੱਤਾਸਮਸ ਹਾਰ ਸਾਤਸਮਸ ਵੈਰੂਵ ਵੇਸਮ ਕੀ ਵੂ ਹਾਰਕ ਸਾਹਰਾਤਰ ਕਰ ਸਾਨਜੀ ਕਤਿਰੀ ਕਿਯਾਕ ਤੱਤਰ ਸੱਮਸ। ਸਾਹ ਸਾਹ ਸਤੂਤ ਕਾਸ ਸੱਯਸਹ ਕਾਸਹ ਸਾਹ ਸਾਹ ਸਾ

ਠਠਿਮਿਨਕੀ ੦੦੮੯ ਤਕੀ ਯਾਦਕਸਾਫ ਜਕ ਗੋਂਝੰਨਸ ਕਠਾ ਝੁੰਡ-ਝੁੰਡ ਵੰ ਸਠਤਾਸ ਖਿਰਪਿਨਿਟ ਜਾਸ਼ੀ ਕੰ ਹਾਸਸ਼ ਝਡ ਤਾ। ਕਿ ਸਾਰ ਹਾਸਸ਼ ਕਿ ਜਾਜਹੂਸ ਹਾਰ ਜਾਬ ਜਿਸਸ਼ ਕਿ ਲਿੱਛੂਸ ਠਾਹ ਜਿਹਰ ਸਰ ਪਿਹੂ ਕਿ ਕਠਾ ਕੀ ਤਕੀ ਤਕੀਸ਼ ਝਹਰ ਸਝ ਕਿ ਤਕ ਤਾਕੀਸ਼ ਜਾਸ਼ ਕਿ। ਕਿ ਸਾਰ ਵੰ ਜਾਕੀਤਾਹਾਸ਼ ਜਾਸ਼ ਜਾਜ਼ੇਂਦ ਕਿ ਪਸ਼ਾਂ ਸਝ ਬਾਲ ਕੰ ਕਿਜਾਜ਼ੀਕੂੰ ਜਾਸ਼ ਜਾਸ਼ ਕਿ ਸਾਰ ਸਝ ਜ

ਹਨਕਲੀਡਾਣ ਡਰ ਈ ਸੁਮਾਕ ਕ ਪਰਾਵਿ ਦਿ ਕਿ ਸੁਪੰ ,ਈ ਸੁਮਾਕ ਕ ਪਰਾਵਿ ਡਰ ਸੁਪੰਦ । ਈ ਫਿਰਸੀ ਧਡਾਰਨਮ ਵਿ ਟਾਸਾਵ ਹੀ ਸੁਮਾਕ ਕ ਪਰਾਵਿ । ਈ ਮੋਸ ਕ ਮਾਰਾਸਮ ਸਾਧਹਨਿ – ਈ ਮੋਸ ਕ ਧਡਾਰ ਈ ਹਾਨਿ ਈ ਸੁਮਾਕ ਮਾਨਾਸਮ ਈ ਕਿਕਸਮ ਪਰਾਵਿ ਮੋਸ ਕ ਮਾਰਾਸਮ ਡਾਰਿ ਮੋਸ ਕ ਮਾਰਾਸਮ ਈ ਕਿਕਸਮ ਪਰਾਵਿ ਈ

ट्रैफिक लाइट ने मेरी ज़िंदगी बदल दी

मेरा नाम रोहन वर्मा है। मैं पेशे से एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर हूँ और बेंगलुरु के एक बड़े आईटी पार्क में काम करता हूँ। मेरी ज़िंदगी में सब कुछ ठीक चल रहा था—अच्छी नौकरी, अच्छी सैलरी, और एक ऐसी लाइफ़ जिसे लोग सफल कहते हैं। लेकिन एक सुबह एक ट्रैफिक लाइट ने मेरी सोच हमेशा के लिए बदल दी।

यह घटना पिछले साल अक्टूबर की है। मैं ऑफिस के लिए निकला था और रास्ते में एक चौराहे पर लाल बत्ती देखकर रुका। वहाँ एक बुज़ुर्ग आदमी सड़क पार करने की कोशिश कर रहे थे, जिनके हाथ में एक छड़ी थी और आँखों पर मोटा चश्मा था। मैं उनकी मदद के लिए आगे बढ़ा, उन्हें सड़क पार कराई, और वापस अपनी गाड़ी की ओर मुड़ा। उस पल मुझे एहसास हुआ कि पिछले कई महीनों से मैं सिर्फ़ अपने बारे में सोच रहा था—अपने प्रोजेक्ट, अपने टारगेट, अपने बैंक बैलेंस के बारे में। उस एक मिनट ने मुझे याद दिलाया कि ज़िंदगी का असली मतलब क्या है।

(सारांश) लेखक को एक ट्रैफिक लाइट ने अपने बारे में सोचने पर मजबूर किया और उसने अपनी प्राथमिकताएँ बदल दीं।

(क) लेखक का पेशा क्या था और वह किस शहर में काम करता था?

(ख) बुज़ुर्ग आदमी को सड़क पार कराने के बाद लेखक ने अपने बारे में क्या सोचा?

(ग) लेखक ने अपने व्यवहार में किन दो बदलावों का ज़िक्र किया है?

(घ) 'ट्रैफिक लाइट ने मेरी ज़िंदगी बदल दी' शीर्षक आपको क्यों उपयुक्त लगता है? अपने उत्तर में एक कारण लिखिए।

(ङ) आप अपने जीवन में किस प्रकार की छोटी-छोटी घटनाओं से प्रेरित हो सकते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

ट्रेफिक लाइट ने मेरी ज़िंदगी बदल दी

मेरा नाम रोहन वर्मा है। मैं बेंगलुरु में एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर हूँ। मेरी ज़िंदगी में सब कुछ ठीक चल रहा था—अच्छी नौकरी, अच्छी सैलरी, और एक ऐसी लाइफ़ जिसे लोग सफल कहते हैं। लेकिन एक सुबह एक ट्रैफिक लाइट ने मेरी सोच हमेशा के लिए बदल दी।

यह घटना पिछले साल अक्टूबर की है। मैं ऑफिस के लिए निकला था और रास्ते में एक चौराहे पर लाल बत्ती देखकर रुका। वहाँ एक बुज़ुर्ग आदमी सड़क पार करने की कोशिश कर रहे थे, जिनके हाथ में एक छड़ी थी और आँखों पर मोटा चश्मा था। मैं उनकी मदद के लिए आगे बढ़ा, उन्हें सड़क पार कराई, और वापस अपनी गाड़ी की ओर मुड़ा। उस पल मुझे एहसास हुआ कि पिछले कई महीनों से मैं सिर्फ़ अपने बारे में सोच रहा था—अपने प्रोजेक्ट, अपने टारगेट, अपने बैंक बैलेंस के बारे में। उस एक मिनट ने मुझे याद दिलाया कि ज़िंदगी का असली मतलब क्या है।

यह घटना (सारांश) लेखक को एक ट्रैफिक लाइट ने अपने बारे में सोचने पर मजबूर किया और उसने अपनी प्राथमिकताएँ बदल दीं।

(क) लेखक का पेशा क्या था और वह किस शहर में काम करता था?

(ख) बुज़ुर्ग आदमी को सड़क पार कराने के बाद लेखक ने अपने बारे में क्या सोचा?

(ग) लेखक ने अपने व्यवहार में किन दो बदलावों का ज़िक्र किया है?

(घ) 'ट्रैफिक लाइट ने मेरी ज़िंदगी बदल दी' शीर्षक आपको क्यों उपयुक्त लगता है? अपने उत्तर में एक कारण लिखिए।

(ङ) आप अपने जीवन में किस प्रकार की छोटी-छोटी घटनाओं से प्रेरित हो सकते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

ਮਨ-ਮਨਾਂਤਰ

ਮਨੋਹਾਰ ਨੇ ਸਿੱਕ ਫਰਾਂਦ ਵਿਚਲੇ ਕਿ ਸਰੀਰ ਸਫ਼ ਹੈ। ਫਲਸੀ ਪਕਫ਼ਰ ਸਾਗਰੀਦ ਕੇ ਲੋਫ਼ਾਤੀ ਨੇਰ ਭਰ ਨਰੀਗ਼ ਤ ਨਰੀਬਿਹਾ ਨਰੀਗ਼ਂਤੇ ਕੇਰਨਦੀ ਸੀਟੇ ਹਾਰਤਰ ਕਬਰਦੀ ਸਿਤ ਤੂੰ ਸਿਲਦ ਮੈਂ ਮਨਾਰ ਪੇਰ ਫਰਤਰ ਤੇ ਸ਼ਾਂਤਰ ਪੇਰ ਸਿੱਕ ਫਰਾਂਦ ਉੱ ਸੀਟ। ਤੂੰ ਸਿਤ ਸਫ਼ ਸਾਰ ਦਾਨ ਮਾਰਾਮ ਸਫ਼ ਪਰ ਕਰ ਪ

ਬਾਹਰਲਾ ਦਿਸਦਾ ਹੈ ਜਾਪਦਾ ਬਹੁਤੂ ਹਿਰ ਕਹਾ ਛਾ, ਏਂ ਜਾਂਕੇ ਹਲਾਹ ਸਾਹਕ ਕਿ ਪੱਤਿਛੀਨਾਹਦ ਮੈਂ ਕਿਨੀਛਾਹੱਤੇ ਕੇ ਸੱਝਿਤ ਪਿਸਤਿਸ਼ੀਸ਼ ਕਾ ਜਾਤਿਤਾਂਤਾਂਤ ਪੈਛਕਾਤ. ਤੋਂ ਏ ਹੈ ਪਾਹਕਾਤ ਸਾਹ ਪਾਤਕੀ ਸੱਤਕੇ ਕੇ ਕੁਤ ਜਾਜੀ ਪਾਤਿਤੀਹ ਕੀ ਸਾਹਾਤ ਸਤੀਸੀਤ ਤਾ ਪਾਤਾਂਤੇ ਤੁਤ ਸਾਹਾਤ ਕੇ ਛਾਛ। ਏ ਸਾਨ ਪਾਤਾਂਤ ਸੱਤਛਾਤ ਸਾਸ਼ਾਤ ਪਾਤੂਛ ਕਿ ਸੱਤਾਤਕ ਕੇ ਜਾਤਿਤਾਂਤਾਂਤ ਛਾਤ ਤੇ ਸੱਤਛੇ ਛੇਛ ਕਜੀਛਾਛੱਤੇ ਕਾਜਾਤ ਸਾਸ਼ਾ ਕੇਤਾਤ ਛਾਤ ਬਹੁਤ ਸ਼ ਕਜੀਛਾਛੱਤੇ ਕਤ੍ਰ ਪਕਛਾਤੇ। ਸੀਤ ਛੇਛ ਛੇਛ ਸੀਜੀਸਾਸ਼ ਸਤ ਪੱਤਤੇ ਕੇਤਾਤ ਸੀਤ ਪਕੀ, ਏ ਕੁਤ ਪਕ ਤਾਂਤਾਂਤ-ਪੱਤਾਂਤ ਕੇ ਤੇ ਪਾਤਾਂਤ ਕੇਤਾਤ ਸੀਤ ਸੀਤ ਕੇਤਾਤ ਸੀਤ ਸੀਤ ਕੇਤਾਤ ਸੀਤ ਸੀ

ਪਤਲੀ ਪਰਦਾਰ ਝੋਕਰ ਪੰਤੀ ਕੇ ਨਾਰੀਏ ਪੰਤਾਘ ਉਹੇ ਨ ਪੰਝੇ ਮੈਂ ਨਰਾਇ ਸਡ ਚੀ ਨ ਪਾਸ ਓ ਨੀ ਓ ਡਾਂਕ ਨਾਸਕ ਪੰਤੀ ਕੇ ਪਾਤੀ ਕੇ ਪਕ ਚੀ ਕੇ ਝੈਂ ਝੈਂ ਪਾਤੀ ਕੇ ਨਾਮ ਨਾਤਾਤੀਪ ਕਿ ਪਾਤਾਨੀ। ਪੰਤੀਤ ਪਕ ਪਾਤੀਕੀਤ ਪਾਕਤੀਤ ਝੈਂ।

ਪਾਤੀ ਪਾਤੀ ਪਾਤੀ

ਸੰਪਾਦਕੀ-ਲੇਖ

(੧) ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਅਸੀਂ ਇਸ ਕਾਲਮ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਸੀ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸਿਆਸੀ ਆਗੂ ਆਪਣੇ ਸੂਬੇ ਦੇ ਪਾਣੀਆਂ ਦੇ ਮੁੱਦੇ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੋਚ ਅਪਣਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਵਾਰ ਇਹ ਮੁੱਦਾ ਫਿਰ ਸਾਹਮਣੇ ਆਇਆ ਹੈ ਤੇ ਇਸ ਵਾਰ ਇਸ ਦੇ ਹੱਲ ਲਈ ਕੁਝ ਨਵੇਂ ਸੁਝਾਅ ਵੀ ਸਾਹਮਣੇ ਆਏ ਹਨ। ਇਸ ਵਾਰ ਇਹ ਮੁੱਦਾ ਸੁਪਰੀਮ ਕੋਰਟ ਵਿਚ ਉਠਿਆ ਹੈ ਤੇ ਇਸ ਦੀ ਸੁਣਵਾਈ ਲਈ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਧਾਰਾ ੧੪੩ ਅਧੀਨ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਦੀ ਰਾਇ ਲਈ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਸੁਪਰੀਮ ਕੋਰਟ ਦੇ ਦੋ ਫੈਸਲੇ ਆ ਚੁੱਕੇ ਹਨ। ਇਸ ਵਾਰ ਇਹ ਮੁੱਦਾ ਇਸ ਲਈ ਵੀ ਅਹਿਮ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਵਿਚ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ ਦਾ ਸਵਾਲ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਸਿਆਸੀ ਆਗੂਆਂ ਦੀ ਸੋਚ ਵਿਚ ਵੀ ਕਾਫ਼ੀ ਫਰਕ ਆਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਰ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਸਿਆਸੀ ਆਗੂਆਂ ਦੀ ਸੋਚ ਵਿਚ ਆਏ ਫਰਕ ਨੂੰ ਵੀ ਅਸੀਂ ਇਸ ਲੇਖ ਵਿਚ ਉਜਾਗਰ ਕਰਾਂਗੇ। ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਸੁਪਰੀਮ ਕੋਰਟ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਆਉਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਇਹ ਸਾਫ਼ ਸੀ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਆਗੂ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੋਚ ਅਪਣਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਵਾਰ ਇਹ ਮੁੱਦਾ ਇਸ ਲਈ ਵੀ ਅਹਿਮ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਵਿਚ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ ਦਾ ਸਵਾਲ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਸਿਆਸੀ ਆਗੂਆਂ ਦੀ ਸੋਚ ਵਿਚ ਆਏ ਫਰਕ ਨੂੰ ਵੀ ਅਸੀਂ ਇਸ ਲੇਖ ਵਿਚ ਉਜਾਗਰ ਕਰਾਂਗੇ। ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਸੁਪਰੀਮ ਕੋਰਟ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਆਉਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਅਸੀਂ ਇਸ ਲੇਖ ਵਿਚ ਇਹ ਸਾਫ਼ ਕਰ ਦਿਆਂਗੇ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਆਗੂ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੋਚ ਅਪਣਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਅਸੀਂ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਸੁਪਰੀਮ ਕੋਰਟ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਆਉਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਸਿਆਸੀ ਆਗੂਆਂ ਦੀ ਸੋਚ ਵਿਚ ਆਏ ਫਰਕ ਨੂੰ ਵੀ

मेघ मंगल-दोहाकोश

(१) मेघ-मन्त्र

५७ उपकृतता

.....मिथ्याभिमान नहीं सांसारिक मिथ्

प्रकाश झोंपड़े के रोशनदान से छनकर आ रही थी। वह एक ताड़पत्रीय चटाई पर बैठा था। उसके सामने एक वृद्ध व्यक्ति बैठा था। वृद्ध व्यक्ति के चेहरे पर झुर्रियाँ थीं, आँखों में एक गहरी थकान थी, और हाथ में एक पुराना-सा लकड़ी का डंडा था। वह डंडा उसके लिए सहारा भी था और चेतावनी भी।

युवक ने धीरे से कहा, “गुरुदेव, मैंने सुना है कि आपने अपने शिष्यों से कहा है कि मैं अब उनके योग्य नहीं रहा। क्या यह सच है?”

वृद्ध ने बिना उत्तर दिए अपनी आँखें बंद कर लीं। कुछ क्षण तक वह ऐसे बैठा रहा जैसे किसी गहरे कुएँ में झाँक रहा हो। फिर उसने धीरे से कहा, “सच वह नहीं है जो तुम्हें दिखाई दिया, सच वह है जो तुम्हें सीखना है।”

युवक का मन विचलित हो उठा। उसने सोचा था कि गुरु उसे फिर से आश्वस्त करेंगे, उसकी प्रशंसा करेंगे, शायद शिष्यों के सामने उसका मान बढ़ाएँगे। पर यहाँ तो उसे एक नया पाठ मिल रहा था—ऐसा पाठ जो उसे भीतर तक हिला रहा था।

वृद्ध ने आगे कहा, “तुम्हारे भीतर ज्ञान है, कौशल है, और साहस भी है। पर एक बात याद रखो—जो व्यक्ति स्वयं को सर्वज्ञ मान लेता है, वह सीखना बंद कर देता है। और जो सीखना बंद कर देता है, वह गुरु होने के योग्य नहीं रहता।”

युवक ने धीरे से पूछा, “तो मैं क्या करूँ?”

वृद्ध ने उत्तर दिया, “मौन में जाओ। उन शब्दों को सुनो जो तुम्हारे भीतर से उठते हैं, न कि उन शब्दों को जो तुम्हें बाहर से सुनाई देते हैं। जब तक तुम यह नहीं सीखते, तब तक तुम किसी को सिखाने के योग्य नहीं हो।”

युवक ने सिर झुकाया। उसने पहली बार अनुभव किया कि ज्ञान का मार्ग केवल पुस्तकों से नहीं, बल्कि आत्म-निरीक्षण से होकर गुजरता है।

५८ उपकृतता

वह एकांत में बैठा था। उसके हाथ में एक पुराना-सा पत्र था, जिसके किनारे फट चुके थे और स्याही कई जगह फैल गई थी। वह पत्र उसे वर्षों पहले मिला था, जब वह अपने गाँव से दूर एक अजनबी शहर में था और भूख, थकान और अकेलेपन से टूट रहा था। उस पत्र में केवल एक वाक्य लिखा था: “जो तुम्हें देता है, वह तुम्हें याद रखे।”

उसने पत्र को फिर से पढ़ा। उसके भीतर एक अजीब-सी हलचल उठी। उसे याद आया कि उस दिन उसने किसी से कुछ माँगा नहीं था, न सहायता, न धन, न आश्रय। फिर भी किसी ने उसे भोजन दिया, एक रात ठहरने की जगह दी और बिना कुछ पूछे यात्रा के लिए कुछ पैसे भी दिए। उस समय उसने सोचा था कि यह दया है, कर्तव्य है, या शायद ईश्वर की कृपा। पर अब वह समझ रहा था कि वह कृपा नहीं थी, वह एक पहचान थी।

उसने आँखें बंद कीं और धीरे से कहा, “मैं लौटूँगा।” यह शब्द किसी से नहीं कहे गए थे, पर उसके भीतर गूँज उठे थे। उसे पता था कि वह लौटकर क्या करेगा—वह उस गाँव में जाएगा, उस व्यक्ति को ढूँढ़ेगा, और बिना कुछ कहे उसके हाथ में वह पत्र रख देगा। क्योंकि उसे अब समझ आ गया था कि उपकार का अर्थ लेना नहीं, देना भी नहीं, बल्कि उस श्रृंखला को आगे बढ़ाना है जो किसी ने उसके लिए बनाई थी।

उसने पत्र को फिर से मोड़ा और अपने थैले में रख लिया। उसके चेहरे पर थकान थी, पैर में छाले थे, और जेब में एक पैसा भी नहीं था। फिर भी वह हल्का था। उसे पता था कि उसने आज किसी से कुछ माँगा नहीं था, पर उसने किसी को कुछ दिया था—और यही उपकार का सच्चा अर्थ था।

ਨਾਲ ਸਾਂਝ ਪਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਾਂਝ ਕਿਸੇ ਵੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਕਈ ਵਾਰ ਇਹ ਸਾਂਝ ਕੁਦਰਤ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਕਈ ਵਾਰ ਇਹ ਸਾਂਝ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਥਾਂ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਕਈ ਵਾਰ ਇਹ ਸਾਂਝ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਵਿਅਕਤੀ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕਈ ਵਾਰ ਇਹ ਸਾਂਝ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਸਮੇਂ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਂਝ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਕਾਰਣ ਕਰਕੇ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕਈ ਵਾਰ ਇਹ ਸਾਂਝ ਬਿਨਾ ਕਿਸੇ ਕਾਰਣ ਦੇ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਂਝ ਕਿਸੇ ਵੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੋ ਸਕ

ਉਂਗਲ ਪਾਸੇ ਮੱਥੇ ਉਤੇ ਕਿ ਯਾਕੂਤਾਲਾਨ ਤਾਂ ਪੱਕਾ ਹਨੇਰਾ ਪਾ ਕੇ ਹਾਲਾਤਾਂ ਵਿਚ ਤਾਂ ਸੰਤੋਸ਼ ਹੋਣ ਲਗਾ। ਹਾਲਾਂ ਕਿ ਹਾਲਾਤ ਬਦਲ ਚੁਕੇ ਸਨ। ਇਕ ਪਾਸੇ ਹਮਾਸ-ਕੁੱਲ ਤੁੱਲੀ ਹਾਲਾਤ ਵਿਚ ਮੈਂ ਹਾਲਾਤ ਕਿ ਤੀਹਰੀ ਬੰਦਸ਼ ਹੇਠਾਂ ਹਾਲਾਤ ਕਿਤੇ ਹੋਣ ਲਗ ਪਏ। ਕਿਸੇ ਵਿਚ

ਲੈਪ ਸ.ਮਾਂ ਲਾਹੇਪ

ਨਾਰਾਇ ਪਾਂਝੇ ਨਾਨ ਹਾਨਾਮ ਵਿਝੇ ਹਾਨਾਮਝ ਕਿ ਮੰਨਾਨ ਸਨੇਹਤੀਪ ਕੇ ਪਰਕਤ ਸਿੰਮਸ। ਈ ਨਿਕਸਮ ਨਾ ਝੈਨ ਕਨ ਗੀਕੀਸੀ ਝਮੀ ਸੰਝੇ ਕੇਰਕ ਪਨਾਨਮਾਝ ਕਾ ਪਰਮਾਨਮਾਝ ਨਾਮਸੇਨ ਹਾ ਈ ਝੈਨ ਝਿਰ ਸੰ ਹਾਨਕਸਮ ਹਾਰੇਨ।

ਕੇ ਨਾਨਸਮ ਪਾਂਝੇ ਕਰੰਤੀ ਈ ਸੰ ਨਾਨੀਹ ਹਾਨਾਮ ਹਾ ਕਿ ਨਾਹਾਰਮਾਨ ਕੇ ਨਾਨਹਰਮਾਨ ਈ ਹਾਨ ਝਲ ਸਮ

ਹਾਨ ਹਾਨਾਮ ਪਾਂਝੇ ਨਾਨਹਰਮਾਨ ਕਾ ਹਾਨਾਮ ਪਾਂਝੇਸਿਮ ਈ ਹਾਨ ਕਿ ਹਾਨਾਮ ਹਾ ਕਿ ਹਾਨ ਸਮ ਹਾਨ ਈ ਹਾਨ ਸਮ ਹਾਨ ਸਮ ਹਾਨ ਸਮ

ਸੁੱਤੇ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਚਰਚਾ

ਪਰਮਜੀਤ ਕੌਰ ਲਾਮੰਡ ਵਿਚ ਹਾਜ਼ਰ ਹੈ। ਇਹ ਨਾਵਲ ਹਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਵੇਂ ਨਾਵਲ ਦੀ ਪਹਲੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ ਸੌ ਪੰਨੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਹ ਪਹਲੀ ਵਾਰ ਅਪ੍ਰੈਲ ਵਿਚ ਛਪਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਦੀ ਕੀਮਤ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਆਪ ਤੈਅ ਕਰਨੀ ਪੈਂਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਕਿਤਾਬ ਕਿਸੇ ਵੀ ਦੁਕਾਨ ਤੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ।

ਕਹਾਣੀ ਪੰਜਾਬ ਦਾਰਜੀਲਿੰਗ ਵਿਚ ਇਕ ਬੰਦ ਪੈ ਚੁੱਕੇ ਚਾਹ ਬਾਗ਼ਾਨ ਦੇ ਆਲੇ-ਦੁਆਲੇ ਘੁੰਮਦੀ ਹੈ। ਮੁੱਖ ਪਾਤਰ ਅਰਜੁਨ ਸੇਤੀਆ ਇਕ ਰਿਟਾਇਰਡ ਸਕੂਲ ਟੀਚਰ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿਚ ਬਾਗ਼ਾਨ ਦੇ ਅੰਦਰ ਬਣੇ ਇਕ ਛੋਟੇ ਜਿਹੇ ਅਜਾਇਬ-ਘਰ ਨੂੰ ਫਿਰ ਖੋਲ੍ਹਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਘਰ ਦੀ ਛੱਤ ਹੇਠਾਂ ਉਸ ਦੀ ਭੈਣ ਕਮਲਾ ਅਤੇ ਉਸ ਦਾ ਭਤੀਜਾ ਰਣਜੀਤ ਵੀ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ, ਪਰ ਤਿੰਨਾਂ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਵਿਚ ਇਤਨੀ ਚੁੱਪ ਪਸਰੀ ਹੋਈ ਹੈ ਕਿ ਕੰਧਾਂ ਤੇ ਟੰਗੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਵੀ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦੀਆਂ ਜਾਪਦੀਆਂ ਹਨ।

ਕਹਾਣੀ ਦੋ ਸਮਾਂਤਰ ਰੇਖਾਵਾਂ ਵਿਚ ਤੁਰਦੀ ਹੈ। ਇਕ ਰੇਖਾ ਵਿਚ ਅਰਜੁਨ ਆਪਣੇ ਬਚਪਨ ਦੀਆਂ ਯਾਦਾਂ ਫਰੋਲਦਾ ਹੈ—ਕਿਵੇਂ ਉਸ ਦਾ ਪਿਤਾ ਬਾਗ਼ਾਨ ਦੇ ਮਾਲੀਆਂ ਨਾਲ ਖੜਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ, ਕਿਵੇਂ ਉਹ ਪਹਲੀ ਵਾਰ ਆਪਣੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਕੈਂਚੀ ਫੜਦਾ ਹੈ ਤੇ ਕਿਵੇਂ ਇਕ ਦਿਨ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਆਖਰੀ ਵਾਰ ਹਸਦਾ ਵੇਖਦਾ ਹੈ। ਦੂਜੀ ਰੇਖਾ ਵਿਚ ਉਹ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਵਾਪਸ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਵੇਖਦਾ ਹੈ ਕਿ ਬਾਗ਼ਾਨ ਦੇ ਬੂਟੇ ਕਿਵੇਂ ਬੇਤਰਤੀਬ ਵਧ ਗਏ ਹਨ ਅਤੇ ਕਮਲਾ ਕਿਵੇਂ ਹਰ ਸ਼ਾਮ ਇਕ ਖਾਲੀ ਕੁਰਸੀ ਅੱਗੇ ਬੈਠੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।

ਲੇਖਕ ਨੇ ਇਸ ਨਾਵਲ ਵਿਚ ਯਾਦ ਅਤੇ ਭੁਲੇਖੇ ਦੇ ਫਰਕ ਨੂੰ ਬੜੀ ਬਾਰੀਕੀ ਨਾਲ ਫੜਿਆ ਹੈ। ਕਈ ਥਾਵਾਂ ਤੇ ਇਕ ਹੀ ਗੱਲ ਦੋ ਵਾਰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਪਰ ਹر ਵਾਰ ਥੋੜ੍ਹੀ ਬਦਲੀ ਹੋਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਿਵੇਂ ਯਾਦ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਦੁਹਰਾਉਂਦੀ ਹੋਵੇ। ਕੁਝ ਪਾਠਕਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਢੰਗ ਥੋੜਾ ਲੰਮਾ ਲੱਗ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਅਖੀਰ ਵਿਚ ਇਹ ਲੰਮਾਈ ਹੀ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਚੁੱਪ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਕੁਲ ਮਿਲਾ ਕੇ ਇਹ ਨਾਵਲ ਉਹਨਾਂ ਪਾਠਕਾਂ ਲਈ ਢੁਕਵਾਂ ਹੈ ਜੋ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਖੁਲ੍ਹਦੀ ਕਹਾਣੀ ਅਤੇ ਘਰੇਲੂ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਬਾਰੀਕ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਨੂੰ ਪਸੰਦ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਤੇਜ਼ ਰਫ਼ਤਾਰ ਐਕਸ਼ਨ ਚاہੀਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਇਸ ਨੂੰ ਥੋੜਾ ਉਡੀਕ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਜੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਘਰ ਦੀ ਛੱਤ ਹੇਠਾਂ ਬੈਠੀ ਚੁੱਪ ਦੀ ਪਛਾਣ ਹੈ, ਤਾਂ ਇਹ ਕਿਤਾਬ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਜਿਹੀ ਲੱਗ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਸੁੱਤੇ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਚਰਚਾ

ਪਰਮਜੀਤ ਕੌਰ ਲਾਮੰਡ ਵਿਚ ਹਾਜ਼ਰ ਹੈ। ਇਹ ਨਾਵਲ ਹਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਵੇਂ ਨਾਵਲ ਦੀ ਪਹਲੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਸਾਢੇ ਤਿੰਨ ਸੌ ਪੰਨੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਹ ਪਹਲੀ ਵਾਰ ਅਪ੍ਰੈਲ ਵਿਚ ਛਪਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਦੀ ਕੀਮਤ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਆਪ ਤੈਅ ਕਰਨੀ ਪੈਂਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਕਿਤਾਬ ਕਿਸੇ ਵੀ ਦੁਕਾਨ ਤੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ।

ਕਹਾਣੀ ਪੰਜਾਬ ਦਾਰਜੀਲਿੰਗ ਵਿਚ ਇਕ ਬੰਦ ਪੈ ਚੁੱਕੇ ਚਾਹ ਬਾਗ਼ਾਨ ਦੇ ਆਲੇ-ਦੁਆਲੇ ਘੁੰਮਦੀ ਹੈ। ਮੁੱਖ ਪਾਤਰ ਅਰਜੁਨ ਸੇਤੀਆ ਇਕ ਰਿਟਾਇਰਡ ਸਕੂਲ ਟੀਚਰ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿਚ ਬਾਗ਼ਾਨ ਦੇ ਅੰਦਰ ਬਣੇ ਇਕ ਛੋਟੇ ਜਿਹੇ ਅਜਾਇਬ-ਘਰ ਨੂੰ ਫਿਰ ਖੋਲ੍ਹਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਘਰ ਦੀ ਛੱਤ ਹੇਠਾਂ ਉਸ ਦੀ ਭੈਣ ਕਮਲਾ ਅਤੇ ਉਸ ਦਾ ਭਤੀਜਾ ਰਣਜੀਤ ਵੀ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ, ਪਰ ਤਿੰਨਾਂ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਵਿਚ ਇਤਨੀ ਚੁੱਪ ਪਸਰੀ ਹੋਈ ਹੈ ਕਿ ਕੰਧਾਂ ਤੇ ਟੰਗੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਵੀ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦੀਆਂ ਜਾਪਦੀਆਂ ਹਨ।

ਕਹਾਣੀ ਦੋ ਸਮਾਂਤਰ ਰੇਖਾਵਾਂ ਵਿਚ ਤੁਰਦੀ ਹੈ। ਇਕ ਰੇਖਾ ਵਿਚ ਅਰਜੁਨ ਆਪਣੇ ਬਚਪਨ ਦੀਆਂ ਯਾਦਾਂ ਫਰੋਲਦਾ ਹੈ—ਕਿਵੇਂ ਉਸ ਦਾ ਪਿਤਾ ਬਾਗ਼ਾਨ ਦੇ ਮਾਲੀਆਂ ਨਾਲ ਖੜਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ, ਕਿਵੇਂ ਉਹ ਪਹਲੀ ਵਾਰ ਆਪਣੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਕੈਂਚੀ ਫੜਦਾ ਹੈ ਤੇ ਕਿਵੇਂ ਇਕ ਦਿਨ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਆਖਰੀ ਵਾਰ ਹਸਦਾ ਵੇਖਦਾ ਹੈ। ਦੂਜੀ ਰੇਖਾ ਵਿਚ ਉਹ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਵਾਪਸ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਵੇਖਦਾ ਹੈ ਕਿ ਬਾਗ਼ਾਨ ਦੇ ਬੂਟੇ ਕਿਵੇਂ ਬੇਤਰਤੀਬ ਵਧ ਗਏ ਹਨ ਅਤੇ ਕਮਲਾ ਕਿਵੇਂ ਹਰ ਸ਼ਾਮ ਇਕ ਖਾਲੀ ਕੁਰਸੀ ਅੱਗੇ ਬੈਠੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।

ਲੇਖਕ ਨੇ ਇਸ ਨਾਵਲ ਵਿਚ ਯਾਦ ਅਤੇ ਭੁਲੇਖੇ ਦੇ ਫਰਕ ਨੂੰ ਬੜੀ ਬਾਰੀਕੀ ਨਾਲ ਫੜਿਆ ਹੈ। ਕਈ ਥਾਵਾਂ ਤੇ ਇਕ ਹੀ ਗੱਲ ਦੋ ਵਾਰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਪਰ ਹر ਵਾਰ ਥੋੜ੍ਹੀ ਬਦਲੀ ਹੋਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਿਵੇਂ ਯਾਦ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਦੁਹਰਾਉਂਦੀ ਹੋਵੇ। ਕੁਝ ਪਾਠਕਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਢੰਗ ਥੋੜਾ ਲੰਮਾ ਲੱਗ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਅਖੀਰ ਵਿਚ ਇਹ ਲੰਮਾਈ ਹੀ ਕਿਲ੍ਹੇ ਦੀ ਚੁੱਪ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਕੁਲ ਮਿਲਾ ਕੇ ਇਹ ਨਾਵਲ ਉਹਨਾਂ ਪਾਠਕਾਂ ਲਈ ਢੁਕਵਾਂ ਹੈ ਜੋ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਖੁਲ੍ਹਦੀ ਕਹਾਣੀ ਅਤੇ ਘਰੇਲੂ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਬਾਰੀਕ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਨੂੰ ਪਸੰਦ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਤੇਜ਼ ਰਫ਼ਤਾਰ ਐਕਸ਼ਨ ਚاہੀਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਇਸ ਨੂੰ ਥੋੜਾ ਉਡੀਕ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਜੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਘਰ ਦੀ ਛੱਤ ਹੇਠਾਂ ਬੈਠੀ ਚੁੱਪ ਦੀ ਪਛਾਣ ਹੈ, ਤਾਂ ਇਹ ਕਿਤਾਬ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਜਿਹੀ ਲੱਗ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਨਾਮਾਸਫ਼ ਤਕ ਨੰਗਮੂੰ ਪੈਡਜਨਤੀ

ਹਾਲ ਹੀਚ ਮੈਂ ਗਾਂਓ ਪਾਸ। ਇਕ ਰਿਤ ਨਤਾਲ ਪੂੰਗਲਵੀਰ ਕੀ ਨਾਮਾਸਫ਼ ਮੇਂ ਹਥੀ ਸਫ਼ ਕਹਾਸਫ਼ ਕਰਮੇਂ ਮੇਂ ਕਹਾਸਫ਼ ਕਰਮੇਂ, ਇਕ ਰਿਤ ਨਤਾਲ ਹਾਲਵੀਰ ਪਰ ਨਾਲਕ ਕਰਮੇਂ ਕੀ ਮੀਂਹ ਪੈਂਡਜ ਪਿਨਦੂ ਹਾਲਵੀਰ ਪਰ ਨੰਗਮੂ ਮੇਂ ਨੰਕਾਸਫ਼ ਨਾਲ ਹਾਲਕ ਕੀ ਇ ਹਾਨਮੀ ਕੇਨ ਪਰਹਫ਼ ਕਾ

ਸਿੰਘ ਤੀਜੇ ਦਾਹੇਨਾਵਾ,ਕੰਤਾਸਨਾਮ ਸੰਧੂ ਗਾਰਡ ਜਾਨੰ ਨਾਤੇ ਸੰਘੇ ਕਿ ਸਾਕਤੀ ਸੀਤਾ ਕੰਨਦ ,ਤੂੰ ਕਿ (ਸੈਤਨੰਕ) ਕੇਂਨਕ ਕੰਨਦ ਸੰ ਹੀਸੇ ਕੁਤਸਾਫ ਕਨਾਦ ,ਤੂੰ ਹੀਰ ਹਾਕੀਗਤੇ ਸੰ ਪਰੀਤ ਸਿਤੂ ਨੀ ਤੂੰ ਹਾਕੇ ਇਕ ਸਾਕਤੀ ਸੀਤਾ ਕਨਦ ਕਬਾਸ ਤੀਤ । ਗਾਰੰਡ ਜਾਨਕ ਸਾਕਤੀ ਧੂੜ ਹੰਝਸਾਫ ਨਕੀਨ ਤੂੰ ਪੀਨਾਸ ਧਾਕਤਸਾਫ ਤੇਂਦ ਤੇਂਪਤੀ ਕੀਬਾਦ ਤੂੰ ਹੀਰ ਸਾਫ ਸੰ ਪੇਂਕਤਸਾਫ ਤੇਂਧਤ ਕੰਧਦ ।ਤੂੰ ਹਾਕਤ ਸਾਫ ਕਬਾਸ

ਸਾਫ਼ ਕਿ ਸ਼ਾਂਧਤ ਸਾਫ

ਭਸ ਨਦ ,ਤੂੰ ਹੀਰ ਧੂੜ ਹੀਰ ਧੇਕ ਸੀ ਨੰਨਦੀ ਤਸਾ ਤੇਂਕਤੀਤ ਭਰੀਤੀ ਸੰ ਧਸਾਂਧ ਸਫ਼ ਨਬਾਸ ਨਨੀ ਸਾਫ ਕੰ ਤੇਕਸ ਕੰ ਤੇਂਤੀ ਧੇਕ । ਤੂੰ ਹਾਕੇ ਤੇਂਤ ਤੇਂਤ ਨਸ ਸੰ ਨਸ ਕੰ ਤੇਕਸ ਤੇਂਤ । ਕਬ -ਹਾਂਸ-ਤੂੰ ਨੰਨਤ ਸਨਕਤੀ-ਸਨਕਸ਼ੰਸ ਨੰਨਤ ਸੰਸਾਸ ਸੰਤ ਸਨ ,ਨਸ-ਤੂੰ ਨੰਨਤ ਸਾਕਤੀ ਸਾਕਤੀ ਸਨਕਤੀ ,ਤੂੰ ਧੇਕ ਕਤੀਸਾਂਸ ਤੇਂਕੇ ਤੇਂਕ ਤੂੰ ਹਾਕੇ ਸਾਕਤੀ ਨਾਨਕੀ ਸਾਫ ਸੰ ਸਾਕਤ ਕੰ ਤੇਕਸ ਕਬ ਸਾਫ ਸਾਕਤ ਸਾਕਤੀ ਸਾਕਤ ਸਾਫ ਸਾਫ ਕੰ ਤੇਕਸ ।ਤੂੰ ਹਾਕੇ ਸਾਕਤ ਸਾਫ ਸਾਫ ਸਾਫ

ਹਿੰਸਾ ਜਿਹ ਬੂ ਯਾਂਤੀ ਕੀਤੇ ਕਹਾ ਭਰ ,ਬੂ ਤਾਂਤਰਾਏ ਜਿਹ ਕਿ ਨਿਸਕ ਸਾਤੀ ਸਾਬ ਕੰ ਨਸ ।ਬੂ ਹਾਤੰਤ ਬਿੰਨ ਸਿਤਾਕੀਤੇ ਨਾਸਾਯ ਮਿੰ ਨਸ ਹਾ ਤਿਲੁਸ ਮਿੰਸ ।ਬੂ ਹਿਤੰਤ ਬਿੰਨ ਸਾਰ ਕਿ ਸੰਗਾਨਾਤੇ ਸਾ ਨਾਬਹਗੀਸ ਕੀਤੇ ਭਰ ।ਨਾਸ ਮੰ ਮਿਕੀ ਹਿ ਬੂ ਹਿਤੰਤ ਪਬਯਾ ਕਰੀਤੇ ਕੀਤੇ ਸਾਤੀ ਮੰ ਮਿਕੀ ਹਾ ਸਿੰਮਕ । ਬੂ ਹਿਤੰਤ ਸਾਰ ਮੰ ਪਕ ਕਰੀਸਾਨੂੰਨ ਸਾਸਾਨੇ ਕੰ ਨਿਤਰ ਕੰ ਪਤਾਰਾਏ ਕੰ ਸਿੰਮਕ ਕੂਪ ਪਕਾਨਸਾਨਕ ਕੰਸਾਹੀ ਬੂ ਹਾਤੰਤ ਸਾਨਕ ਸਿਬਤਾਸਾ ਨਿਕੂਤੇਨਤ ਕਿ ਸਾਨਾਤੇ ਪੰਨੀ ਕੰ ਸਿਤਰ ਪਤਾਰਾਏ ਨਿਹ ਨਿਹ । ਬੂ ਹਾਤੰਤ ਸਾਨਾ ਪਤਾਰਾਏ ਬਤ ਮੰ ਸੱਤਾਂਤ ਸਿਤਾ ਕ ਸੰਗਾਨ ਸਾਤੀ ਸਾਬ ਸਾਤੀ ਸਾਰ ਸਬ । ਬੂ ਹਾਤੰਤ ਪਨਕਤਿਕਾਰ ਕਾ ਕੀਤੇ ਸਾਤੀ ਕਿ ਨਾਸ ਬਿ ਸੰ ਸੱਤਾਂਤ ਹਾਤਿਤਕਕ ਸਾਤਾਤ ਕਾ ਸਾਂਤਾਨ ਬ੍ਰਿਤ , ਬੂ ਹਾਤਤ ਤਾਤਾ ਸਾਤ ਸੰਤਿ ਸਾਤੀ ਕਿ ਸਾਤੀ ਸਾਤੀ ਸੰਤ ਸਾਤੀ ਸੰਤ ਸਾਤੀ ਸੰਤ

सही कितने हैं

१. सोमवार को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर रेखाएँ खींचीं। ये रेखाएँ सीधी हैं।

२. मंगल को सोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर वृत्त बनाए। ये वृत्त गोल हैं।

३. बुधवार को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर त्रिभुज बनाए। ये त्रिभुज तीन भुजाओं वाले हैं।

४. शुक्रवार को सोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर चतुर्भुज बनाए। ये चतुर्भुज चार भुजाओं वाले हैं।

५. मंगल को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर त्रिभुज बनाए। ये त्रिभुज तीन भुजाओं वाले हैं।

६. बुधवार को सोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर वृत्त बनाए। ये वृत्त गोल हैं।

७. शुक्रवार को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर चतुर्भुज बनाए। ये चतुर्भुज चार भुजाओं वाले हैं।

८. सोमवार को सोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर रेखाएँ खींचीं। ये रेखाएँ सीधी हैं।

९. मंगल को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर त्रिभुज बनाए। ये त्रिभुज तीन भुजाओं वाले हैं।

१०. बुधवार को सोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर वृत्त बनाए। ये वृत्त गोल हैं।

सही कितने हैं

१. सोमवार को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर रेखाएँ खींचीं। ये रेखाएँ सीधी हैं।

२. मंगल को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर त्रिभुज बनाए। ये त्रिभुज तीन भुजाओं वाले हैं।

३. बुधवार को सोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर वृत्त बनाए। ये वृत्त गोल हैं।

४. शुक्रवार को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर चतुर्भुज बनाए। ये चतुर्भुज चार भुजाओं वाले हैं।

५. सोमवार को सोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर रेखाएँ खींचीं। ये रेखाएँ सीधी हैं।

६. मंगल को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर त्रिभुज बनाए। ये त्रिभुज तीन भुजाओं वाले हैं।

७. बुधवार को सोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर वृत्त बनाए। ये वृत्त गोल हैं।

८. शुक्रवार को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर चतुर्भुज बनाए। ये चतुर्भुज चार भुजाओं वाले हैं।

९. सोमवार को सोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर रेखाएँ खींचीं। ये रेखाएँ सीधी हैं।

१०. मंगल को मोहन ने पेन्सिल से कागज़ पर त्रिभुज बनाए। ये त्रिभुज तीन भुजाओं वाले

ਛਾਂਗਣ-ਰੀਤੂ

ਸਾਗਰ ਤਾਰ ਮੈਂ ਨਹਾਸਣ ਕਰ ਹਾਕਤਾਰ ਵੰਝਲ ਕੰ ਹਾਕਤਾਰ ਮੈਂ ਕਬਰ ਕੰ ਪਤਾਰ-ਸਾਰ । ਵੂੰ ਚਿਕਸਾਰ ਹਾਕਤਾਰ । ਵੂੰ ਚਿਕਸਾਰ ਪਕ ਧਾ ਲਾਰ ਕੰ ਹਾਗਤਾਰ ਕਿ ਸਾਗਤਾਰ ਮੈਸਾਰ ਮੈਂ ਹਾਹਤਾਰ ਕਿ ਸਾ ਹਾਸਾਰ ਵੂੰ ।

ਪਤਾਰ ਕੰ ਤਾਰ ਕੰ ਪਤਾਰ ਕੰ ਹਾਰ ਕੰ ਹਾਰ ਕੰ ਹ

ਸੰਪਾਦਕੀ-ਲੀਡ

ਇੱਕ ਹਫ਼ਤੇ ਪਹਿਲਾਂ ਅਸੀਂ ਇਸ ਗੱਲ ਵੱਲ ਧਿਆਨ ਦਿਵਾਇਆ ਸੀ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਵਿਧਾਨ ਸਭਾ ਦੇ ਸਪੀਕਰ ਵਲੋਂ ਦੋ ਵਿਧਾਇਕਾਂ ਦੀ ਅਯੋਗਤਾ ਬਾਰੇ ਫੈਸਲਾ ਲੈਣ ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਦੇਰੀ ਨੂੰ ਲੋਕ ਹਿਤ ਵਿਰੁੱਧ ਕਰਾਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। ਇਹ ਦੇਰੀ ਇਸ ਲਈ ਵੀ ਅਫ਼ਸੋਸਜਨਕ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਮਾਮਲੇ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਦਸਵੀਂ ਅਨੁਸੂਚੀ ਅਧੀਨ ਦਲ-ਬਦਲੀ ਨਾਲ ਸਬੰਧਤ ਹਨ। ਇਸ ਅਨੁਸੂਚੀ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਅਨੁਸਾਰ ਇਹ ਫੈਸਲੇ ਛੇਤੀ ਕੀਤੇ ਜਾਣੇ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਕਿ ਇਹ ਸਾਬਤ ਹੋ ਸਕੇ ਕਿ ਦਲ-ਬਦਲੂ ਆਗੂ ਆਪਣੇ ਸਿਆਸੀ ਲਾਭ ਲਈ ਲੋਕ ਫ਼ਤਵੇ ਦੀ ਦੁਰਵਰਤੋਂ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਇਹ ਫੈਸਲੇ ਇਸ ਲਈ ਵੀ ਛੇਤੀ ਕੀਤੇ ਜਾਣੇ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਕਿ ਵਿਧਾਨ ਸਭਾ ਦੇ ਕੰਮ-ਕਾਜ ਵਿਚ ਕੋਈ ਰੁਕਾਵਟ ਨਾ ਆਵੇ। ਪਰੰਤੂ ਇਹ ਅਫ਼ਸੋਸ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ ਕਿ ਸਪੀਕਰ ਵਲੋਂ ਇਹ ਫੈਸਲੇ ਲੈਣ ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਦੇਰੀ ਕਾਰਨ ਇਹ ਮੰਤਵ ਪੂਰਾ ਹੋਣ ਦੀ ਥਾਂ ਉਲਟਾ ਇਹ ਸੰਦੇਹ ਪੈਦਾ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ ਕਿ ਸਪੀਕਰ ਦੀ ਨਿਰਪੱਖਤਾ ਉਪਰ ਸਵਾਲ ਉਠ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਹ ਸੰਦੇਹ ਇਸ ਲਈ ਵੀ ਪੈਦਾ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ ਕਿ ਸਪੀਕਰ ਦੀ ਨਿਰਪੱਖਤਾ ਦੀ ਸਹੁੰ ਚੁੱਕ ਕੇ ਉਹ ਆਪਣੇ ਸਿਆਸੀ ਆਕਾਵਾਂ ਦੇ ਇਸ਼ਾਰੇ ਉਪਰ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋਣ ਦੇ ਸ਼ੱਕ ਦੇ ਘੇਰੇ ਵਿਚ ਆ ਗਈ ਹੈ। ਇਹ ਸ਼ੱਕ

ਜੋ ਨਾਸ਼ ਸਰਜਨ ਮੇਰਾ ਨਿਰਾਤਾ। ਜੋ ਹਾਲਹਾ ਜਾਰਾਤ ਜੋ ਤੰਗਤ ਜਦ ਪਨੀ -ਜੋ ਨੰਨੇ ਕਾਂਹ ਜੋ ਸਰਜਨ ਨਾਸ਼ ਨਾਸ਼ ਸਰਜਨ ਮੇਰਾ ਜੋ ਪੰਗਤੀ ਜੋ ਤੰਗੀਹੇ ਜਰੀ ਨੰਤਰਾ ਜਾਤਾਸ਼ ਕੇ ਕਤੀਮਾਸ਼ ਕਾਲਾ ਸਰਜਨ ਸਤ੍ਰ। ਜੋ ਨਿਾਹ ਸਰਜਨ ਕੀਹੇ ਦੰਸਾਰੀ ਜੋ ਜਾਰਾਸ ਸਕ ਜਨ ਛਾਂਤੰਸਤੀਹ ਹਾਲ ਕੰਸਾਰ ਸੰਸਿ ਜੋ ਪਿਤਕ ਨਾਸ਼ਾਰ ਕੰਸਾਰੀ ਜੋ ਜਾਰਾਸ ਨਾਰਾਸ ਜੋ ਪੀਤੀਸਾਰ ਹਾਰ। ਜੋ ਪਿਤੂ ਸੰਸਿ ਕੇ ਨਾਸ਼ਾਸ ਜੋ ਜੋ ਨਿਨਾਸ਼ ਸਰਸਾਸ ਹਾਰੀ-ਹਾਰੀਕੀ ਕਿ ਨਾਰੀਹ ਸੋਸਤੀਸ ਸੰਸ।

ਸੰਤ: ਜੋ ਸਲਾਸ ਜਾ ਜਾਰਕਸੀਹਾਰੀਸ ਪੀਸ, ਜੋ ਸਲਾਸ ਸੰਸਿ ਜਾਸਾਸ।

। ਜੋ ਹਾਰੀ ਹਾਸਤ ਕੇ ਜਾਰਕਸੀਸੀਸ ਹਾਸਾਸਸਰੀ ਹਾਰ। ਹਾਸਾ ਸਰੀਰੀ ਜੋ ਹੀ ਜਾਸਾਸ ਸਤ੍ਰ ਕਰੀਸੀਸ ਸਤ ਸਿਸਤ ਸੇ ਕੀਤ ਕਿਸਤ। ਜੋ ਹਾਰੀ ਕੀਹਤ ਸਤਸਾਸ ਕਤ ਕੀ ਜੋ ਨੰਤਤ ਸਾਤ ਇੰਸਤ ਹਾਰ ਸੰ ਹਾਸਾਸਤੀ ਨਾਸ਼ ਜਾ ਜਾਸਾਸ ਨਾਸਾਸ ਸਾਸਸੀਸ ਸਾਤਾਤ ਕੇ ਹਾਸਾਸਾਸ ਸਤ੍ਰ ਖੁਸੀਸ ਤੇ ਤੰਖੀ ਸੰਸਤ੍ਰ ਹਾਰ। ਜੋ ਹਾਸਾਸ ਸੰਤਤ੍ਰ ਸੰ ਕੀ ਜੋ ਹਾਸਸਾਸ ਹਾਰ। ਜੋ ਹਾਸਾਸ ਸੰਤਤ੍ਰ ਸੰ ਕੀ ਜੋ ਜਾਸ ਨਾਤੀ ਕਿ ਤੰਤ੍ਰ ਸੰਤਤ੍ਰ ਕੀ ਹਾਰ ਸੰਤਤ੍ਰ ਕੀ ਜਾਸ ਸੰਤਤ੍ਰ ਸੰਤਤ੍ਰ ਸੰਤਤ੍ਰ

ऽ८ह्रम ८ाम ८ंभ

८ाह्रह्र में की ई ऐप्रार्फ की ८ाम्रक नामगीअ ऽ८ाम में ७ऽ८म्रम के कडीमाम्र-ऽेा. ४
कडीमाम्र ण्ण्रक के म्रम के ग्रनय म्र ग्रीअ म्राडर्न, ८ंग्र, ७ऽ८ण्ण, ८ंग्र कडीमाम्र
म्र. म्रम की म्रिग्री ऽ८ म्र ऽ८ाम्र म्रीं म्रिग्री ऽ८ म्र ऽ८ाम्र म्रीं म्रिग्री ऽ८ म्र
। ई ऐप्रार्फ म्रीं म्रानाद ठ्र ऽ्रर्फ
म्र. म्रीं म्रार्फ ऽ८ ऽ्रर्फ म्रान म्रानिं म्रान्नाम ऽ८म्र कडीमाम्र-म्रानिं
म्र. म्रम्रार्फ ऽ्रर्फ के कडीमाम्र-ऽ्रार्फ (ऽ्रम्रग्रीं कडिमाम्र) ऽ्रर्फ के म्रीअ म्रर्फ-म्रार्फ-म्रार्फ
। ई म्रार्फ
ऽ्रार्फ म्रर्फ म्रार्फ, म्रार्फ, म्रनाम, ऽ्रार्फ में कडीमाम्र ण्ण्रक के म्रीअ म्रर्फ-म्रार्फ-म्रार्फ
। ई ऐप्रार्फ म्रर्फ ऽ८
म्रनाम्रम्र कि म्रेम्र ल्रू ऽ्रर्फ म्रीं म्रान्नाम न म्रामम्रनी ग्रीर के कडीमाम्र-ऽ्रनीअ
म्र. म्रीं म्रार्फ ऽ्रनीअ म्रनक
ऽ्रम्र कि ग्रीमार्फ म्रं ग्रीअ ऽ्रम्र के म्रिग्री के म्राम म्रऽ्रम्र म्रनी-म्रानम्रम्र ० म्र
। ई ऐप्रार्फ म्रीं म्रनक कडीमाम्र
म्रम्रार्फ
-ऽ्रग्रीअ म्रनाम म्रालऽ में म्रनम्रम्र कि कडीमाम्र
म्र. म्रनार्फ म्रनक ऽ्रम्रग्रीक-म्रनऽ्रम्र
। म्रनार्फ म्रनक म्रनिक्रीक-म्रनऽ्रम्र
म्र. म्रनार्फ म्रनाग्रीम्रम्र ऽ म्रनकीम्रिम्र म्रम्रम्र ऽ्रग्रनी म्रनी-म्रनाग्रनी म्र.
। म्रनार्फ म्रनऽ्रम्र ऽ्रनक म्रनऽ्रम्र म्रनऽ्रम्र-म्रनऽ्रम्र
म्र. म्रनार्फ ऽ्रीअ म्रनक म्रिऽ्रम्र म्रनी-म्रनाग्रनी म्र.
। म्रनार्फ म्रनऽ्रम्र म्रनऽ्रम्र म्रनऽ्रम्र
म्र. म्रनार्फ म्रनऽ्रम्र म्रनऽ्रम्र म्रनऽ्रम्र

हथेली में लाल बिंदु

नवनीत एक नन्हा ख़रगोश था जो अपने झुंड से बिछड़ गया था। उसे हथेली पर एक लाल बिंदु दिखाई देता था। वह बिंदु न तो चोट था न ही निशान। वह बस वहाँ था, जैसे किसी ने चुपचाप एक छोटा-सा वादा वहाँ रख दिया हो। नवनीत ने कई बार उसे मिटाने की कोशिश की, पर वह मिटा नहीं। वह जानता था कि यह बिंदु उसे याद दिलाता है कि वह अकेला नहीं है, भले ही झुंड दूर हो।

एक दोपहर नवनीत ने एक बूढ़े कछुए से पूछा कि क्या भाग्य रेखाएँ बदल सकती हैं। कछुए ने धीरे से कहा कि रेखाएँ तो बदलती हैं, पर वह बिंदु तभी मिटता है जब कोई उसे मिटाने की ज़िद छोड़ दे। नवनीत ने सोचा कि शायद वह बिंदु उसे याद दिलाता है कि वह किसी का है, भले ही झुंड दूर हो।

अगले दिन उसने उस बिंदु को मिटाया नहीं। वह उसे देखता रहा और सोचता रहा कि कैसे एक छोटा-सा निशान पूरे दिन को थोड़ा-सा हल्का बना देता है। शाम को उसने उस बिंदु को हथेली से पोंछा, पर वह फिर से उभर आया। तब उसने तय किया कि वह उसे रहने देगा। वह बिंदु न तो दुआ था न ही बोझ। वह बस एक याद था, जो उसे याद दिलाता था कि वह अकेला नहीं है।

नवनीत ने उस दिन झुंड के बीच लौटने का फैसला किया। रास्ते में उसने कई जानवरों से मुलाकात की, जो सभी अपनी-अपनी हथेलियों पर कुछ न कुछ ढोते थे। किसी के पैर में काँटा था, किसी के मन में डर था। नवनीत ने देखा कि वह बिंदु उसे याद दिलाता था कि दूसरे भी कुछ ढो रहे हैं। उसने तय किया कि वह किसी से कुछ नहीं कहेगा, पर जब कोई गिरेगा तो उसे उठाने में मदद करेगा।

रात को जब वह थककर एक पेड़ के नीचे लेटा, तो उसने हथेली को देखा। बिंदु हल्का था, जैसे धूप में रखा हुआ कागज़ हो। उसने सोचा कि शायद भाग्य रेखाएँ बदलती हैं, पर कुछ बिंदु हमेशा रहते हैं। वह बिंदु उसे याद दिलाता था कि वह किसी का है, भले ही झुंड दूर हो। नवनीत ने आँखें बंद कीं और पहली बार बिना डर के सो गया।

ਜਾਮ ਸੜੇ ਸੀਸਪ

ਓਟੀਛਾ ਪ੍ਰਿਟਸਕ ਮੇਂ ਪੀਗਾਨ

ਪਰਛਾ ਉ ਪਛਾ ਓਸੀ ਕੇ ਮੇਗਾ ਜਾਖਾਸਪ ਕ ਔਛਾਟਸਸਪ ਮੇਸਪਓ ਪਾਲਿ ਸੇਂ ਪਾਟੂ ਕੇ ਹਯਾਓ ਕੀ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਯਿ ਛਟਾ ਕੀ ਸਪ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਸਟ -ਖ਼ੇ ਕੇਯ ਝੇਂਸ ਪਰਛਾ ਉ ਪਛਾ ਸੂਸੀ ਖ਼ੇ ਕੇਯ ਛਟੂਟ ਕੀ ਸੀਟ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਕੀਛਟ ਉ ਜਾਮਾ ਸੇਂ ਪਟਾਸ ਸਸ ਓਸੀ ਕੇ ਮੇਯਛਾ ਕੀ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਕੇ ਜਾਂਸ ਸੂਸੀ ਖ਼ੇ ਕੀ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਮੇ ਪੀਗਾ ਮੇਂ ਪੀਗਾਨ ਕੇ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਮੇ ਪਾਸ ਔ। ਖ਼ੇ ਪ੍ਰਿਟੂਸ ਮੇ ਪੀਗਾ ਸੂਸੀ ਖ਼ੇ ਪ੍ਰਛਾ ਸੂਸੀ ਓਸੀਛਾ ਮੇਂ ਪੀਗਾ ਕੇ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਮੇ ਪਾਸ ਔ। ਖ਼ੇ ਪ੍ਰਿਟੂ ਮੇ ਪੀਗਾ ਸਸ ਪਰਛਾ ਕੇ ਓਸੀਛਾ ਸਸ ਔ। ਖ਼ੇ ਪ੍ਰਿਟੂ ਸਸ ਓਸੀ ਕੇ ਮੇਯਛਾ ਕੇ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਕੀਛਟ ਉ ਜਾਮਾ ਸੇਂ ਪਟਾਸ ਸਸ ਓਸੀ ਕੇ ਮੇਯਛਾ ਕੇ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਕੀਛਟ ਉ ਜਾਮਾ ਸੂਸੀ ਖ਼ੇ ਕੇਯ ਛਟੂਟ ਕੀ ਸਪ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਸਟ -ਖ਼ੇ ਕੇਯ ਛਟੂਟ ਕੀ ਸੀਟ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਕੀਛਟ ਉ ਜਾਮਾ ਸੇਂ ਪਟਾਸ ਸਸ ਓਸੀ ਕੇ ਮੇਯਛਾ ਕੇ ਪ੍ਰਿਟੂਸਕ ਕੀਛਟ ਉ ਜਾਮਾ ਸੂਸੀ ਖ਼ੇ ਕੇਯ ਛਟੂਟ ਕੀ ਸੀਟ

ਜਨਾਬਿ ਕਲ ਗਿਆਰ ਕੇ ਜਾਣ

ਸਾਕਯ ਸਤ ਜਾਣ । ਬੂ ਜਾਹਾ ਤਬਕ ਜਾਣ ਕੂਟ, ਬੂ ਜਾਤਯ ਹਰੀਬਿ ਗਿਆਰ ਯੰ ਤਬਸਾਰ ਕੰਜਾਹੀ
–ਬੂੰ ਪੰਤ ਪਾਹਾਬ ਕੰ

(੧) ਤਸੀਬ ਕੇ ਵੇਸਾਰ - ਜਾਣ ਤਬ ਪਤੀਸੰਸਾਰ ।

(੨) ਤਸੀਬ ਕੇ ਸਾਤਾਨਸਾਰ ਕੇ ਜਬਤੀ - ਜਾਣ ਤਬ ਪਤੀਜਿਸਾਰ ।

(੩) ਤਸੀਬ ਕੇ ਜਾਣੀਆਬ - ਜਾਣ ਤਬ ਪਤੀਜੀਬਤ ।

(੪) ਤਸੀਬ ਕੇ ਬੀਤੂ ਕੇ ਬੇਯਾਂਤ - ਜਾਣ ਤਬ ਪਤੀਪੀਬੀਤ ।

(੫) ਤਸੀਬ ਕੇ ਸੰਜਸੂ ਕੇ ਸੰਜਾਕ - ਜਾਣ ਤਬ ਪਤੀਸੰਸੰਖ ।

(੬) ਤਸੀਬ ਕੇ ਸਤਾਤ - ਜਾਣ ਤਬ ਪਤਤ ।

(੭) ਤਸੀਬ ਕੇ ਸਮ - ਜਾਣ ਤਬ ਸਮ ।

(੮) ਤਸੀਬ ਕੇ ਵੇਯਤੇਤ-ਸੰਜਯ ਸਯਾਂਸ - ਜਾਣ ਤਬ ਸਯਾਬਯਾਸਾਤ ।

(੯) ਤਸੀਬ ਕੇ ਤੀਤ - ਜਾਣ ਤਬ ਤਬਤੀਤ ।

ਬੂ ਕੀਤਾਹ ਕੇ ਤੂਤਸੂ ਸੇ ਸਾਤਯਤੀ ਕੰ ਯੰਜਾਣ ਸਤ ਬੂ ਤਬਤ ਬੂ ਤਯਤ ਸਾਜਯ ਤਾਜਯ ਤਬਤ ਸਤ ਸਤ ਸ

ਸਫ਼ਰ ਉੱਤੇ ਰੀਤ ਸਾਫ਼ ਕਿਸਤ। ਉਂ ਸਾਕਰੀ ਜਦ ਕੀਤੇ ਝੋਕਦਾ ਤਰ। ਉਂ ਪਾਤ ਨਿਕਲੀ ਜਝਾਫ਼ ਕੁ ਸਾਸਰ ਮਿ ਝੋਕਦਾ ਸਾਰ ਤਰ ਹਨ ਪੀ ਦ ਕਰੰਦੇ ਮੇਂ ਪਕੁ ਪਕਾਹਦਾ ਉਂ ਪਕ ਕਸਾਰੀ ਪਾਤ ਸੌਂਦ ਸਾਸਰ ਜਦ ਕਾ ਮੰਜਨ ਮਾਨਕੀਤੇ। ਸਾਸਾਰ ਨਿਕੰਦ ਪਾਤ ਸੌਂਦ ਸਾਸਰ ਕੀ ਸਾਰ ਕੀਤੇ ਸਫ਼ ਉੱਤੇ ਸਾਸ।

ਮੀ ਸਾਕਰੀ ਸਾਸਮੁਹਾਰ ਕਾ ਕੀਤੇ ਸਫ਼ਰ, ਸਾਸਾਰ ਤਾਤਰੀ ਕਾ ਕੀਤੇ ਸਾਰ ਕੀਤੇ ਸਾਰ ਪੀ ਉ ਸਾਸਰ ਪਾਤ ਸੌਂਦ ਸਾਸਰ ਕੀ ਸਾਕਰੀ ਸਫ਼ਰ। ਸਾਸਾਰ ਤਾਤੰਤ ਸਫ਼ ਕਾ ਸਾਸਰਤੁਹਾਰ: ਤਾਕ। ਉ ਸਾਰ ਉ ਕੁਸ਼ਰੀ ਮੀ ਸਾਕਰੀ ਸਾਰ ਕਾ ਕੀਤੇ ਸਫ਼, ਉੱਤੇ ਉ ਸਾਸਰਤੁਹਾਰ। ਪੰਤੀਤ ਸਾਸਾ ਤਾਤਰ ਸਾਸਮਾਰ ਮੀ ਸਫ਼ ਤਰ ਕੀਤ ਪੀਤੀਤ ਸਾਤਤ ਤਾਤਰ ਪਾਤਰਸਾਰੀ ਕਾ ਕੀਤੇ ਸਾਰ ਪਰ ਸਾਤਾਫ਼ ਕੰਸਫ਼। ਮੀਸਾਰ ਕੀ ਉ ਸਾਕਰੀ ਸਫ਼ ਉ ਉ ਸਾਸਾਰ ਕੀ ਉ ਪਾਤ ਕੀਤੇ ਸਾਰ ਪਰ ਸਾਤਾਫ਼ ਕੰਸਫ਼

ऽईगीज नार्फड ड्ईऽनि गाइजी ऐशाइ ऐशाइप ऐफ ऽगाम फ ऽड ।ई ऽड्ड ऽगाफ्ती ड्ड्ड्ऽप ऐफ कि कीाइ । ऽ नाम्ड नाप्रीकेजी में प्रक्र के ड्ड्ड्ऽप ऐगाइजी कि कीाइ प्रक्र ग्रीड्ड प्रस्ट ऽड्ड की नादाफ्ती ऽईगीप्रिड्ड ऐं ऐनाम ड्ड्ड्ड्ड प्रिफ्ड्ड ऐफ ऐफ्क ऽकप्रर ड्ड्ड नाप्रीकेजी में प्रक्र प्रस्ट ड्ड्ड्ऽनि गाइजी ऐशाइ ऐफ गाप्रीकेजी में प्रक्र प्रस्ट ऽईगीज नाम्ड न

ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੇਵਕ ਲਈ ਕਾਰਜ ਸਵਾਰਦਾ ਹੈ

ਕਿ ਕੰਬਰ ਯੋਜਨਾਬਦ ਮਾਯਿਸਟ ਵੈਂ ਸਯਫ਼ਰ। ਮਾਯਿਕਤ ਕਰੋਯੂਮਾਯਿਸਟ ਸਮਾਸਟਰਸ ਭਰਤ ਕੱਬ ਹਸੀਕਤੀ ਕਿ ਹਾਮਾਦਮ ਹਾਹਸ ਭਰ ਕੀਯਿਸ ਈ ਭੋਰ ਸਿਮਾਸ ਯਬਿਹੀ ਸਿੰਘ ਯੰ ਸਾਬ ਕਿ ਸਾਬਸਤ ਕਿ ਹੀਓਸੀ ਸੀਹਿਕ ਲਯੂਸ ਕਾ ਸਮਾਕਤੀ ਕੀਤੇ ਯਸਮਾਸ ਕੀ ਯੰਕਤੀਹ ਸਾਸਤ, ਈ ਹਾਮਾਦਮ ਹਾਹਸ ਸੱਸੇ। ਈ ਸਿਮਾਈਸੀ ।ਈ

ਪੀ. ੮-੧-੧੪੬੬

ਕਿਰਤ ਸਭਿਆਚਾਰ ਤੇ ਮਸ਼ੀਨ

ਕਿਰਤ ਸਭਿਆਚਾਰ ਤੇ ਮਸ਼ੀਨ ਦਾ ਰਿਸ਼ਤਾ ਕਦੇ ਸਹਿਜ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ। ਹਰ ਨਵੀਂ ਤਕਨੀਕ ਨੇ ਕਾਮੇ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਇਕ ਨਵਾਂ ਔਜ਼ਾਰ ਫੜਾਇਆ ਅਤੇ ਨਾਲ ਹੀ ਉਸ ਦੇ ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਉਤੇ ਸਵਾਲ ਖੜਾ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਲੇਖ ਵਿਚ ਅਸੀਂ ਇਹ ਵੇਖਾਂਗੇ ਕਿ ਕਿਰਤ ਦੇ ਸਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਮਸ਼ੀਨ ਕਿਵੇਂ ਘੜਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਮਸ਼ੀਨ ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲਦੀ ਹੈ।

ਕਾਰਖ਼ਾਨੇ ਤੋਂ ਕੰਪਿਊਟਰ ਤੱਕ

ਕਾਰਖ਼ਾਨੇ ਦੇ ਯੁਗ ਵਿਚ ਕਾਮੇ ਨੂੰ ਘੰਟੇ ਗਿਣੇ ਜਾਂਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਕਦਰ ਉਸ ਦੇ ਹੱਥ ਦੀ ਫੁਰਤੀ ਤੇ ਟਿਕੀ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਕੰਪਿਊਟਰ ਆਉਣ ਨਾਲ ਇਹ ਤਰਜ਼ੀਹ ਬਦਲ ਗਈ। ਹੁਣ ਕਾਮੇ ਦੀ ਕਦਰ ਉਸ ਦੇ ਦਿਮਾਗ਼ ਅਤੇ ਫ਼ੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੀ ਸਮਰੱਥਾ ਨਾਲ ਜੁੜ ਗਈ। ਮਸ਼ੀਨ ਨੇ ਦੁਹਰਾਉਣ ਵਾਲੇ ਕੰਮ ਖੋਹੇ ਪਰ ਨਵੇਂ ਹੁਨਰ ਦੀ ਮੰਗ ਪੈਦਾ ਕੀਤੀ।

ਆਟੋਮੇਸ਼ਨ ਦੀ ਅਸਲ ਮਾਰ

ਆਟੋਮੇਸ਼ਨ ਦਾ ਅਸਰ ਸਾਰੇ ਕਾਮਿਆਂ ਉਤੇ ਇਕੋ ਜਿਹਾ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ। ਜਿਹੜੇ ਕੰਮ ਦੁਹਰਾਉਣ ਵਾਲੇ ਹਨ ਅਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਫ਼ੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੀ ਲੋੜ ਘੱਟ ਹੈ, ਉਹ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਖ਼ਤਰੇ ਹੇਠ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਉਲਟ ਜਿਹੜੇ ਕੰਮ ਸਿਰਜਣਾ, ਸੰਭਾਲ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਵਾਸਤਾ ਮੰਗਦੇ ਹਨ, ਉਹ ਅਜੇ ਵੀ ਮਨੁੱਖੀ ਹੱਥ ਉਤੇ ਟਿਕੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਸ਼ੀਨ ਕਿਰਤ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ, ਸਗੋਂ ਕਿਰਤ ਦੇ ਅੰਦਰ ਇਕ ਨਵੀਂ ਵੰਡ ਪੈਦਾ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਦਾ ਸਵਾਲ

ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਮਸ਼ੀਨ ਕਾਮੇ ਦੀ ਥਾਂ ਲੈਂਦੀ ਹੈ, ਤਾਂ ਸਵਾਲ ਸਿਰਫ਼ ਕੰਮ ਦਾ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ, ਇਹ ਸਵਾਲ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਮਾਜ ਕਿਸ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਨੂੰ ਕੀਮਤੀ ਸਮਝਦਾ ਹੈ। ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਇਹ ਸਵਾਲ ਕਈ ਵਾਰ ਉਠਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਹਰ ਵਾਰ ਇਸ ਦੇ ਜਵਾਬ ਵਿਚ ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਘਟੀ ਜਾਂ ਵਧੀ ਹੈ।

ਅਗਲੇ ਕਦਮ

ਅਗਲੇ ਕਦਮ ਵਜੋਂ ਕਾਮਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹੁਨਰ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਘੜਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਮਸ਼ੀਨ ਦੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰ ਸਕਣ, ਨਾਲ ਮੁਕਾਬਲੇ ਵਿਚ ਨਾ ਖੜਨ। ਇਹ ਕੰਮ ਸਕੂਲ, ਕਾਲਜ ਅਤੇ ਕਾਰਖ਼ਾਨੇ ਤਿੰਨੇਂ ਥਾਵਾਂ ਉਤੇ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਨੀਤੀ ਘਾੜਿਆਂ ਨੂੰ ਇਹ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਉਣਾ ਪਵੇਗਾ ਕਿ ਤਬਦੀਲੀ ਦਾ ਬੋਝ ਸਿਰਫ਼ ਕਾਮੇ ਉਤੇ ਨਾ ਪਵੇ ਅਤੇ ਲਾਭ ਸਾਂਝੇ ਹੋਣ। ਇਹ ਲੇਖ ਕੋਈ ਹੱਲ ਨਹੀਂ ਦੱਸਦਾ, ਸਿਰਫ਼ ਸਵਾਲ ਉਠਾਉਂਦਾ ਹੈ ਤਾਕਿ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲਾ ਆਪਣੇ ਆਲੇ-ਦੁਆਲੇ ਨੂੰ ਵੇਖ ਸਕੇ।

ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਦਾ ਸਵਾਲ

ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਦਾ ਸਵਾਲ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਕਈ ਵਾਰ ਉਠਿਆ ਹੈ। ਕਦੇ ਕਾਮੇ ਨੂੰ ਉਸ ਦੇ ਹੁਨਰ ਕਰਕੇ ਕੀਮਤੀ ਸਮਝਿਆ ਗਿਆ ਤੇ ਕਦੇ ਉਸ ਦੀ ਥਾਂ ਮਸ਼ੀਨ ਆ ਗਈ। ਹਰ ਵਾਰ ਇਹ ਸਵਾਲ ਉਠਿਆ ਕਿ ਸਮਾਜ ਕਿਸ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਨੂੰ ਕੀਮਤੀ ਸਮਝਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਲੇਖ ਇਸ ਸਵਾਲ ਨੂੰ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਰੱਖ ਕੇ ਵੇਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦੱਸਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਸ਼ੀਨ ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲਦੀ ਹੈ।

ਕਾਰਖ਼ਾਨੇ ਤੋਂ ਕੰਪਿਊਟਰ ਤੱਕ

ਕਾਰਖ਼ਾਨੇ ਦੇ ਯੁਗ ਵਿਚ ਕਾਮੇ ਨੂੰ ਘੰਟੇ ਗਿਣੇ ਜਾਂਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਕਦਰ ਉਸ ਦੇ ਹੱਥ ਦੀ ਫੁਰਤੀ ਤੇ ਟਿਕੀ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਕੰਪਿਊਟਰ ਆਉਣ ਨਾਲ ਇਹ ਤਰਜ਼ੀਹ ਬਦਲ ਗਈ। ਹੁਣ ਕਾਮੇ ਦੀ ਕਦਰ ਉਸ ਦੇ ਦਿਮਾਗ਼ ਅਤੇ ਫ਼ੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੀ ਸਮਰੱਥਾ ਨਾਲ ਜੁੜ ਗਈ। ਮਸ਼ੀਨ ਨੇ ਦੁਹਰਾਉਣ ਵਾਲੇ ਕੰਮ ਖੋਹੇ ਪਰ ਨਵੇਂ ਹੁਨਰ ਦੀ ਮੰਗ ਪੈਦਾ ਕੀਤੀ।

ਆਟੋਮੇਸ਼ਨ ਦੀ ਅਸਲ ਮਾਰ

ਆਟੋਮੇਸ਼ਨ ਦਾ ਅਸਰ ਸਾਰੇ ਕਾਮਿਆਂ ਉਤੇ ਇਕੋ ਜਿਹਾ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ। ਜਿਹੜੇ ਕੰਮ ਦੁਹਰਾਉਣ ਵਾਲੇ ਹਨ ਅਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਫ਼ੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੀ ਲੋੜ ਘੱਟ ਹੈ, ਉਹ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਖ਼ਤਰੇ ਹੇਠ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਉਲਟ ਜਿਹੜੇ ਕੰਮ ਸਿਰਜਣਾ, ਸੰਭਾਲ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਵਾਸਤਾ ਮੰਗਦੇ ਹਨ, ਉਹ ਅਜੇ ਵੀ ਮਨੁੱਖੀ ਹੱਥ ਉਤੇ ਟਿਕੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਸ਼ੀਨ ਕਿਰਤ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ, ਸਗੋਂ ਕਿਰਤ ਦੇ ਅੰਦਰ ਇਕ ਨਵੀਂ ਵੰਡ ਪੈਦਾ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਦਾ ਸਵਾਲ

ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਦਾ ਸਵਾਲ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਕਈ ਵਾਰ ਉਠਿਆ ਹੈ। ਕਦੇ ਕਾਮੇ ਨੂੰ ਉਸ ਦੇ ਹੁਨਰ ਕਰਕੇ ਕੀਮਤੀ ਸਮਝਿਆ ਗਿਆ ਤੇ ਕਦੇ ਉਸ ਦੀ ਥਾਂ ਮਸ਼ੀਨ ਆ ਗਈ। ਹਰ ਵਾਰ ਇਹ ਸਵਾਲ ਉਠਿਆ ਕਿ ਸਮਾਜ ਕਿਸ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਨੂੰ ਕੀਮਤੀ ਸਮਝਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਲੇਖ ਇਸ ਸਵਾਲ ਨੂੰ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਰੱਖ ਕੇ ਵੇਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦੱਸਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਸ਼ੀਨ ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲਦੀ ਹੈ।

ਕਾਰਖ਼ਾਨੇ ਤੋਂ ਕੰਪਿਊਟਰ ਤੱਕ

ਕਾਰਖ਼ਾਨੇ ਦੇ ਯੁਗ ਵਿਚ ਕਾਮੇ ਨੂੰ ਘੰਟੇ ਗਿਣੇ ਜਾਂਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਕਦਰ ਉਸ ਦੇ ਹੱਥ ਦੀ ਫੁਰਤੀ ਤੇ ਟਿਕੀ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਕੰਪਿਊਟਰ ਆਉਣ ਨਾਲ ਇਹ ਤਰਜ਼ੀਹ ਬਦਲ ਗਈ। ਹੁਣ ਕਾਮੇ ਦੀ ਕਦਰ ਉਸ ਦੇ ਦਿਮਾਗ਼ ਅਤੇ ਫ਼ੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੀ ਸਮਰੱਥਾ ਨਾਲ ਜੁੜ ਗਈ। ਮਸ਼ੀਨ ਨੇ ਦੁਹਰਾਉਣ ਵਾਲੇ ਕੰਮ ਖੋਹੇ ਪਰ ਨਵੇਂ ਹੁਨਰ ਦੀ ਮੰਗ ਪੈਦਾ ਕੀਤੀ।

ਆਟੋਮੇਸ਼ਨ ਦੀ ਅਸਲ ਮਾਰ

ਆਟੋਮੇਸ਼ਨ ਦਾ ਅਸਰ ਸਾਰੇ ਕਾਮਿਆਂ ਉਤੇ ਇਕੋ ਜਿਹਾ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ। ਜਿਹੜੇ ਕੰਮ ਦੁਹਰਾਉਣ ਵਾਲੇ ਹਨ ਅਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਫ਼ੈਸਲੇ ਲੈਣ ਦੀ ਲੋੜ ਘੱਟ ਹੈ, ਉਹ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਖ਼ਤਰੇ ਹੇਠ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਉਲਟ ਜਿਹੜੇ ਕੰਮ ਸਿਰਜਣਾ, ਸੰਭਾਲ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਵਾਸਤਾ ਮੰਗਦੇ ਹਨ, ਉਹ ਅਜੇ ਵੀ ਮਨੁੱਖੀ ਹੱਥ ਉਤੇ ਟਿਕੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਸ਼ੀਨ ਕਿਰਤ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ, ਸਗੋਂ ਕਿਰਤ ਦੇ ਅੰਦਰ ਇਕ ਨਵੀਂ ਵੰਡ ਪੈਦਾ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਦਾ ਸਵਾਲ

ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਦਾ ਸਵਾਲ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਕਈ ਵਾਰ ਉਠਿਆ ਹੈ। ਕਦੇ ਕਾਮੇ ਨੂੰ ਉਸ ਦੇ ਹੁਨਰ ਕਰਕੇ ਕੀਮਤੀ ਸਮਝਿਆ ਗਿਆ ਤੇ ਕਦੇ ਉਸ ਦੀ ਥਾਂ ਮਸ਼ੀਨ ਆ ਗਈ। ਹਰ ਵਾਰ ਇਹ ਸਵਾਲ ਉਠਿਆ ਕਿ ਸਮਾਜ ਕਿਸ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਨੂੰ ਕੀਮਤੀ ਸਮਝਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਲੇਖ ਇਸ ਸਵਾਲ ਨੂੰ ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਰੱਖ ਕੇ ਵੇਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦੱਸਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਸ਼ੀਨ ਕਿਰਤ ਦੀ ਕਦਰ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲਦੀ ਹੈ।

ਸ਼ਹਿਰ ਲਾਮੰਡ ਭੈਸ

ਕਾਹਲੂ ਝਰ ਪੰਜੇ ਵੰ ਚਿੜਧ ਖੈਨ ਨਹਲਾਹ ਕਿ ਪਤਰਾਂਦ ਪਿਤਾਛ ਹੀ ਧਧਾ ਧਤਰੀ ਜਨਗਾ ਕਰ ਭੀਤੀ ਕਾਹਲੂ ਝਰ ਪੰਜੇ ਵੰ ਚਿੜਧ ਖੈਨ ਨਹਲਾਹ ਕਿ ਪਤਰਾਂਦ ਪਿਤਾਛ ਹੀ ਧਧਾ ਧਤਰੀ ਜਨਗਾ ਕਰ ਭੀਤੀ

ਕਲ੍ਹਰੀ ਲਾਂਘਾ ਤੇ ਸੰਗਮ ਪੱਥਰ ਵਿਚ ਲੁਕੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਰੂਪ ਧਾਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕਿਵੇਂ ਇਹ ਸਮੇਂ ਦੀ ਧੂੜ ਹੇਠ ਦੱਬੇ ਜਾਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਆਪਣੇ ਅਰਥ ਨਹੀਂ ਗੁਆਉਂਦੇ। ਇਸ ਲੇਖ ਵਿਚ ਅਸੀਂ ਉਸ ਪੱਥਰ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਾਂਗੇ ਜੋ ਕਲ੍ਹਰੀ ਅਤੇ ਲਾਂਘੇ ਦੇ ਸੰਗਮ ਉੱਤੇ ਪਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਦੇਖਾਂਗੇ ਕਿ ਇਹ ਪੱਥਰ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਕਿਹੜੇ ਅਰਥ ਸੰਭਾਲੀ ਬੈਠਾ ਹੈ।

ਕਲ੍ਹਰੀ ਦੇ ਮੂਹਰੇ ਪਿਆ ਪੱਥਰ

ਕਲ੍ਹਰੀ ਦੇ ਮੂਹਰੇ ਪਿਆ ਇਹ ਪੱਥਰ ਕਿਸੇ ਇਕ ਯੁਗ ਦੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਸ ਉੱਤੇ ਕਈ ਪੀੜ੍ਹੀਆਂ ਦੇ ਪੈਰ ਪਏ ਹਨ। ਕਿਸੇ ਨੇ ਇਸ ਉੱਤੇ ਬੈਠ ਕੇ ਹੁੱਕਾ ਪੀਤਾ ਹੋਣਾ ਹੈ, ਕਿਸੇ ਨੇ ਇਸ ਉੱਤੇ ਖੜ੍ਹੇ ਹੋ ਕੇ ਲਾਂਘੇ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਕੀਤੀ ਹੋਣੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿਸੇ ਨੇ ਇਸ ਉੱਤੇ ਬੈਠ ਕੇ ਆਪਣੇ ਦੁੱਖ-ਸੁੱਖ ਫਰੋਲੇ ਹੋਣੇ ਹਨ। ਪੱਥਰ ਨੂੰ ਇਹ ਸਭ ਯਾਦ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਪਰ ਉਹ ਇਸ ਸਭ ਦਾ ਗਵਾਹ ਜਰੂਰ ਹੈ। ਗਵਾਹ ਹੋਣਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਇਕ ਵੱਡਾ ਕੰਮ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਗਵਾਹ ਕੋਲ ਸਿਰਫ਼ ਉਹੋ ਕੁਝ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜੋ ਉਸ ਨੇ ਦੇਖਿਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਨਾ ਕਿ ਉਹ ਜੋ ਉਸ ਨੂੰ ਦੱਸਿਆ ਗਿਆ ਹੋਵੇ।

ਇਸ ਪੱਥਰ ਉੱਤੇ ਕੋਈ ਲਕੀਰ ਨਹੀਂ ਖਿੱਚੀ ਹੋਈ, ਕੋਈ ਮੂਰਤੀ ਨਹੀਂ ਘੜੀ ਹੋਈ। ਇਹ ਸਿਰਫ਼ ਇਕ ਸਮਤਲ ਟੁਕੜਾ ਹੈ ਜਿਸ ਉੱਤੇ ਲੋਕ ਬੈਠੇ ਹਨ। ਇਸ ਬੈਠਣ ਵਿਚ ਹੀ ਇਸ ਦਾ ਸਾਰਾ ਇਤਿਹਾਸ ਲੁਕਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਨੇ ਇਸ ਉੱਤੇ ਬੈਠ ਕੇ ਕਰਜ਼ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਹੋਣੀ ਹੈ, ਕਿਸੇ ਨੇ ਇਸ ਉੱਤੇ ਬੈਠ ਕੇ ਵਿਆਹ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਹੋਣੀ ਹੈ, ਕਿਸੇ ਨੇ ਇਸ ਉੱਤੇ ਬੈਠ ਕੇ ਮੀਂਹ ਦੀ ਉਡੀਕ ਕੀਤੀ ਹੋਣੀ ਹੈ। ਪੱਥਰ ਨੂੰ ਇਹ ਸਾਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਯਾਦ ਨਹੀਂ ਹਨ, ਪਰ ਉਹ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਗਵਾਹ ਜਰੂਰ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਇਸ ਉੱਤੇ ਹੋਇਆ ਹੈ।

ਲਾਂਘੇ ਦੇ ਨਾਲ ਖੜ੍ਹਾ ਪੱਥਰ

ਲਾਂਘੇ ਦੇ ਨਾਲ ਖੜ੍ਹਾ ਪੱਥਰ ਕਲ੍ਹਰੀ ਦੇ ਪੱਥਰ ਤੋਂ ਥੋੜਾ ਵੱਖਰਾ ਹੈ। ਇਹ ਥੋੜਾ ਉੱਚਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਉੱਤੇ ਕਿਸੇ ਨੇ ਕੁਝ ਲਕੀਰਾਂ ਵਾਹੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਹਨ। ਲਕੀਰਾਂ ਇਕ ਤਰਤੀਬ ਵਿਚ ਹਨ ਅਤੇ ਕਈ ਥਾਂਵਾਂ ਤੇ ਇਹ ਲਕੀਰਾਂ ਇਕ ਦੂਜੇ ਨੂੰ ਕੱਟਦੀਆਂ ਵੀ ਹਨ। ਇਹ ਲਕੀਰਾਂ ਕਿਸੇ ਨਕਸ਼ੇ ਵਰਗੀਆਂ ਲੱਗਦੀਆਂ ਹਨ, ਪਰ ਨਕਸ਼ੇ ਵਿਚ ਜਿਹੜੀ ਸਾਫ਼ਗੋਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਉਹ ਇਸ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਨੇ ਇਹ ਲਕੀਰਾਂ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਮਕਸਦ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਵਾਹੀਆਂ, ਸਗੋਂ ਇਹ ਕੇਵਲ ਇਕ ਆਦਤ ਵਜੋਂ ਵਾਹੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹੋ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।

ਇਸ ਪੱਥਰ ਉੱਤੇ ਕੁਝ ਅੱਖਰ ਵੀ ਹਨ। ਅੱਖਰ ਇਕ ਤਰਤੀਬ ਵਿਚ ਹਨ ਅਤੇ ਇਹ ਕਿਸی ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਲੱਗਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਅੱਖਰ ਕਿਸی ਨਾਂਵ ਦੇ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਕਿਸی ਥਾਂ ਦੇ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕਿਸی ਗੱਲ ਦੇ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਇਹ ਅੱਖਰ ਇਤਨੇ ਘਸ ਚੁਕੇ ਹਨ ਕਿ ਇਹ ਦੱਸਣਾ ਔਖਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਕਿਹੜੀ ਲਿਪੀ ਦੇ ਹਨ। ਅਸੀਂ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਕਿ ਇਹ ਅੱਖਰ ਕਿਸی ਖਾਸ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਹਨ, ਪਰ ਇਹ ਜਰੂਰ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਕਿਸی ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਪੱਥਰ ਦੇ ਅੰਦਰ ਲੁਕੇ ਹੋਏ ਸ਼ਬਦ

ਇਸ ਪੱਥਰ ਉੱਤੇ ਕੁਝ ਸ਼ਬਦ ਲਿਖੇ ਹੋਣ ਦੀ ਸੰਭਾਵਨਾ ਹੈ। ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਕਿਸی ਨਾਂਵ ਦੇ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਕਿਸی ਥਾਂ ਦੇ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕਿਸی ਗੱਲ ਦੇ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਇਤਨੇ ਘਸ ਚੁਕੇ ਹਨ ਕਿ ਇਹ ਦੱਸਣਾ ਔਖਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਕਿਹੜੀ ਲਿਪੀ ਦੇ ਹਨ। ਅਸੀਂ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਕਿ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਕਿਸی ਖਾਸ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਹਨ, ਪਰ ਇਹ ਜਰੂਰ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਕਿਸی ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਹو ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਇਸ ਪੱਥਰ ਉੱਤੇ ਕੁਝ ਅੰਕੜੇ ਵੀ ਹਨ। ਅੰਕੜੇ ਇਕ ਤਰਤੀਬ ਵਿਚ ਹਨ ਅਤੇ ਇਹ ਕਿਸی ਗਿਣਤੀ ਦੇ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਗਿਣਤੀ ਕਿਸی ਚੀਜ਼ ਦੀ ਹو ਸਕਦੀ ਹے, ਕਿਸی ਥਾਂ ਦੀ ਹو ਸਕਦی ਹے, ਕਿਸی ਗੱਲ ਦੀ ਹو ਸਕਦی ਹے। ਅਸੀਂ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਕਿ ਇਹ ਅੰਕੜੇ ਕਿਸی ਖਾਸ ਗੱਲ ਦੇ ਹو ਸਕਦے ਹن। ਅਸੀਂ ਇਹ ਕਹਿ ਸਕਦے ਹاں ਕہ ਇہ ਅੰਕڑے ਕسی ਗنتی ਦے ہو سکدے ہن۔

ਪੱਥਰ ਦੇ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਇਤਿਹਾਸ

ਇਹ ਪੱਥਰ ਕਿਸی ਇਕ ਯੁਗ ਦا نہیں ہے۔ ਇہ ਕلہری دے نال ਵی ہے تے لانگھے دے نال ਵی ہے۔ ਕلہری دے نال ਵی ਇہ ਕئی ਪیڑھیاں دا ਗواہ ہے تے لانگھے دے نال ਵی ਇہ ਕئی ਪیڑھیاں دا ਗواہ ہے۔ ਇہ ਪیڑھیاں ਕون سی ہن، ਕی ਕرदی سن، ਕی ਕہندی سن، ਇہ ਅسی نہیں جانदے۔ ਪر ਇہ ਜرور ਜانदا ہے کہ ਇہ ਕئی ਪیڑھیاں دا ਗواہ ہے۔ ਇہ ਗواہی ਕسی ਕتاب ਵिच نہیں لिखी ہوئی، ਕسی ਯادگار ਵिच نہیں ਰکھی ہوئی، ਪر ਇہ ਗواہی ਪتھر دے ਰूप ਵिच ਸाڈے ਸामने ہے۔ ਪتھر ਕोल ਯादाشت نہیں ہुंदी، ਪر ਇہ ਕئی ਗल੍ਲाں دا ਗواہ ہے جो ਕसे ਨे ਕीتीاں ਜाں ਕहीاں ہन۔ ਇہ ਗواہی ਕसे ਨे ਕीتی

ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ : ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ का अर्थ

(१) ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ का अर्थ है कि ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ में कोई संशोधन नहीं किया गया है।

(२) ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ का अर्थ है कि ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ में कोई संशोधन किया गया है।

(३) ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ का अर्थ है कि ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ में कोई संशोधन किया गया है।

(४) ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ का अर्थ है कि ऽऽ/१ ऽ/१ – १४८ में कोई संशोधन किया गया है।

ਕਿਵੇਂ ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹੈ

ਕਿਸੇ ਸਾਧਨ ਦੀ ਕਾਰਜ-ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਕਿਸਦੇ ਉਪਰ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ, ਇਸ ਬਾਰੇ ਜਾਣ ਲੈਣਾ ਕਿਉਂ ਲਾਭਦਾਇਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਸ ਦੀ ਉਪਯੋਗਤਾ ਅਤੇ ਸਮਰੱਥਾ ਨਿਰਧਾਰਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਸ ਦੀ ਉਪਯੋਗਤਾ ਅਤੇ ਸਮਰੱਥਾ ਨਿਰਧਾਰਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਸਾਡੇ ਦੇਹਾਤ ਵਿਖੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ

(ੳ) ਸਾਡੇ ਦੇਹਾਤ ਵਿਖੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਕਈ ਕਿਸਮ ਦੇ ਲੋਕ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਕੰਮ-ਧੰਦੇ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਹ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਕੰਮ-ਧੰਦੇ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਇਹ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਕੰਮ-ਧੰਦੇ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ।

(ਅ) ਸਾਡੇ ਦੇਹਾਤ ਵਿਖੇ ਕਈ ਕਿਸਮ ਦੇ ਲੋਕ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਕੰਮ-ਧੰਦੇ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ।

(ੲ) ਸਾਡੇ ਦੇਹਾਤ ਵਿਖੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਕਈ ਕਿਸਮ ਦੇ ਲੋਕ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਕੰਮ-ਧੰਦੇ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ।

ਕਿਸੇ ਸਾਧਨ ਦੀ ਕਾਰਜ-ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਕਿਵੇਂ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ

ਕਿਸੇ ਸਾਧਨ ਦੀ ਕਾਰਜ-ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ ਇਸ ਬਾਰੇ ਜਾਣ ਲੈਣਾ ਕਿਉਂ ਲਾਭਦਾਇਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਸ ਦੀ ਉਪਯੋਗਤਾ ਅਤੇ ਸਮਰੱਥਾ ਨਿਰਧਾਰਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਸਾਡੇ ਦੇਹਾਤ ਵਿਖੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਕੰਮ ਧੰਦੇ

(ੳ) ਸਾਡੇ ਦੇਹਾਤ ਵਿਖੇ ਕਈ ਕਿਸਮ ਦੇ ਲੋਕ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਕੰਮ-ਧੰਦੇ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ।

(ਅ) ਸਾਡੇ ਦੇਹਾਤ ਵਿਖੇ ਕਈ ਕਿਸਮ ਦੇ ਲੋਕ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਕੰਮ-ਧੰਦੇ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ।

(ੲ) ਸਾਡੇ ਦੇਹਾਤ ਵਿਖੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਕਈ ਕਿਸਮ ਦੇ ਲੋਕ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਕੰਮ-ਧੰਦੇ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ-ਰੋਟੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ।

ਕਿਵੇਂ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹੈ

ਕਿਸੇ ਸਾਧਨ ਦੀ ਕਾਰਜ-ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ ਇਸ ਬਾਰੇ ਜਾਣ ਲੈਣਾ ਕਿਉਂ ਲਾਭਦਾਇਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਇਸ ਦੀ ਉਪਯੋਗਤਾ ਅਤੇ ਸਮਰੱਥਾ ਨਿਰਧਾਰਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ᱛᱩᱞᱩᱢ ᱯᱷᱟᱞᱤᱭᱤᱛᱮ ᱛᱷᱟᱛᱤᱭᱟᱜᱟᱞᱤᱭᱟᱜᱟᱞᱤᱭᱟᱜᱟᱞ

गढ़चिरौली में क्रांति

गढ़चिरौली जिला मुख्यालय से 40 किमी दूर, घने जंगलों और पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहाँ के आदिवासी गोंड, माड़िया और कोरकू समुदाय हैं। यहाँ के जंगल सागवान, बाँस और तेंदू पत्ता के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ के लोग मुख्यतः खेती, वनोपज और मजदूरी पर निर्भर हैं। यहाँ की साक्षरता दर राज्य के औसत से कम है और बड़ी आबादी को अपने अधिकारों की जानकारी नहीं है।

गढ़चिरौली में माओवादी आंदोलन

गढ़चिरौली में माओवादी आंदोलन 1980 के दशक के अंत में शुरू हुआ। शुरुआत में यह आंदोलन मुख्यतः भूमि अधिकार, मजदूरी और वन अधिकार के मुद्दों पर केंद्रित था। आदिवासी युवाओं को संगठित करके, उन्हें हथियार देकर और उनके माध्यम से गाँवों में समानांतर सत्ता का ढाँचा खड़ा करना इस आंदोलन की रणनीति थी। यह रणनीति कई वर्षों तक सफल रही और कई गाँवों में लोग पुलिस से पहले माओवादी दस्ते को अपना रक्षक मानने लगे।

दंडकारण्य दस्ता

दंडकारण्य दस्ता माओवादी आंदोलन की सबसे बड़ी सशस्त्र इकाई है। यह दस्ता गढ़चिरौली, छत्तीसगढ़ के बस्तर और आंध्र प्रदेश के सीमावर्ती जंगलों में सक्रिय है। दस्ते में लगभग 300 से 400 सदस्य हैं, जिनमें पुरुष और महिलाएँ दोनों शामिल हैं। दस्ते के पास आधुनिक हथियार, विस्फोटक और संचार के उपकरण हैं। दस्ते का नेतृत्व अनुभवी कमांडरों के हाथ में है जो वर्षों से जंगल में रह रहे हैं।

सुरक्षा बलों की कार्रवाई

सुरक्षा बलों ने गढ़चिरौली में कई बड़े अभियान चलाए हैं। 2009 में हुआ एक बड़ा हमला इतिहास में दर्ज है जिसमें 17 जवान शहीद हुए। इसके बाद सरकार ने C-60 कमांडो दस्ते का गठन किया, जो जंगल में गश्त करता है और खुफिया जानकारी इकट्ठा करता है। हेलीकॉप्टर से निगरानी और हवाई हमलों का भी इस्तेमाल किया गया है। कई गाँवों में सड़कें बनाई गई हैं और मोबाइल टावर लगाए गए हैं ताकि संचार बेहतर हो सके।

विकास बनाम विस्थापन

गढ़चिरौली में खनन, बाँध और सड़कों के प्रस्ताव आदिवासी समुदायों के लिए विस्थापन का खतरा लेकर आए हैं। कई परियोजनाओं में बिना उचित मुआवजे और पुनर्वास के लोगों को उनके गाँव से हटाया गया है। यह असंतोष माओवादी आंदोलन के लिए एक बड़ा मुद्दा बन गया है। सरकार का दावा है कि विकास से ही इस इलाके में शांति आएगी, लेकिन आलोचकों का कहना है कि पहले भरोसा बनाना जरूरी है।

शांति वार्ता की संभावना

कई बार शांति वार्ता की संभावना पर चर्चा हुई है। 2004 में आंध्र प्रदेश में हुई शांति वार्ता असफल रही और दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर समझौते को तोड़ने का आरोप लगाया। वार्ता के लिए मध्यस्थ की भूमिका में कई नागरिक समाज के लोग सामने आए थे। वार्ता के लिए विश्वास, सुरक्षा और न्याय तीनों का एक साथ होना जरूरी है। अभी तक यह संतुलन कहीं नहीं बन पाया है।

आगे का रास्ता

गढ़चिरौली का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हिंसा कम हो, विकास योजनाएँ पारदर्शी हों और आदिवासी समुदाय को अपने जंगल और जमीन पर वास्तविक अधिकार मिलें। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार भी उतना ही जरूरी है जितना सुरक्षा बलों की तैनाती। जब तक लोग अपने गाँव में सुरक्षित और सम्मानित महसूस नहीं करेंगे, तब तक कोई भी आंदोलन जड़ें नहीं जमा पाएगा।

गढ़चिरौली में कृषि

गढ़चिरौली की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। यहाँ धान, कपास और मक्का प्रमुख फसलें हैं। अधिकांश किसान छोटे और सीमांत किसान हैं जिनके पास औसतन दो एकड़ से कम जमीन है। सिंचाई के साधन सीमित हैं और बारिश पर निर्भरता बहुत अधिक है। मानसून देर से आने या कम बरसने पर पूरा गाँव संकट में आ जाता है। कई परिवार साहूकारों से कर्ज लेते हैं और फसल बेचकर कर्ज चुकाते हैं, जिससे वे लगातार कर्ज के चक्र में फँस जाते हैं।

वन अधिकार अधिनियम

2006 में पारित वन अधिकार अधिनियम आदिवासियों को जंगल की जमीन पर व्यक्तिगत और सामुदायिक अधिकार देता है। गढ़चिरौली में हजारों परिवारों ने इसके तहत दावे किए हैं। कई गाँवों में सामुदायिक वन अधिकार मिले हैं और लोग तेंदू पत्ता इकट्ठा करके बेच रहे हैं। यह कानून आदिवासियों के लिए एक बड़ा हथियार है, लेकिन इसका पालन हर जगह एक जैसा नहीं है। कई जगहों पर अधिकारी इसे लागू करने में देरी करते हैं।

महिलाओं की भूमिका

गढ़चिरौली के आंदोलन में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। कई महिलाएँ दस्ते में लड़ाकू के रूप में शामिल हैं और कई गाँवों में संगठक की भूमिका निभाती हैं। वे खेती, पानी और शराबबंदी के मुद्दों पर आवाज उठाती हैं। शराबबंदी इलाके में एक बड़ा मुद्दा है क्योंकि शराब की लत कई परिवारों को बर्बाद कर चुकी है। महिला संगठन धीरे-धीरे अपनी जगह बना रहे हैं और पुरुष प्रधान ढाँचे को चुनौती दे रहे हैं।

शिक्षा की चुनौती

गढ़चिरौली के कई गाँवों में प्राथमिक विद्यालय तो हैं, पर शिक्षक अक्सर गैर-हाजिर रहते हैं। आदिवासी बच्चे मराठी या गोंडी में पढ़ते हैं, जबकि पाठ्यक्रम मराठी में है। यह भाषा की दीवार बच्चों के लिए सीखना कठिन बना देती है। कुछ गैर-सरकारी संगठन इस दिशा में काम कर रहे हैं और गोंडी में पाठ्यपुस्तकें तैयार कर रहे हैं, लेकिन यह काम बहुत धीमी गति से चल रहा है।

स्वास्थ्य सेवाएँ

गढ़चिरौली के दूर-दराज के इलाकों में स्वास्थ्य सेवाएँ बहुत कमजोर हैं। अस्पताल जिला मुख्यालय में हैं और गाँवों से वहाँ पहुँचना घंटों का काम है। मलेरिया, कुपोषण और सिकलसेल एनीमिया यहाँ की आम बीमारियाँ हैं। आंदोलन के कारण कई इलाकों में स्वास्थ्य कर्मचारी जाने से डरते हैं, और जो जाते हैं उन पर कभी-कभी हमले भी हुए हैं। यह स्थिति आम लोगों के लिए दोहरी मार है।

आगे का रास्ता

गढ़चिरौली का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हिंसा कम हो, विकास योजनाएँ पारदर्शी हों और आदिवासी समुदाय को अपने जंगल और जमीन पर वास्तविक अधिकार मिलें। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार भी उतना ही जरूरी है जितना सुरक्षा बलों की तैनाती। जब तक लोग अपने गाँव में सुरक्षित और सम्मानित महसूस नहीं करेंगे, तब तक कोई भी आंदोलन जड़ें नहीं जमा पाएगा।

ਪਰਲ ਵਰੀਗੜ ਪੱਝੇ ਨਾਂਝੇਡ , ਸਾਵ ਕੁਰਸਸਾਫ ਸੰਸਦ ਝੂੰ ਹੰਪਕ ਸਾਨਨ ਸਡ ਝੰਨਦੀ ਕੀ ਝੂੰ ਹੰਪੀਸਡ ਸੰਸ ਸੰਸ ਸਾਹ ਹਾਤੀਸ ਪੱਝੇ ਝੂੰ ਨਿੰਹ ਕਤਡ ਹਾਲਾਸੀਗੇਹ ਸੰਸਡ ਸਾਹ ਹਾਤੀਸ ਸਾਹ ਸੰਸ ਹਾਤੀ ਸਾਹ ਹਾਤੀ ਸਾਹ ਹਾਤੀ ਸਾਹ

ਸਫ਼ਾਰਸ਼ ਕਿ ਖ਼ਿਤਾਬ ਕਰੀਮੀਂ ਵੱਲ ਤਸਮ ਫ਼ੀਰ। ਉਂ ਹਰਿਆਂ ਇਕ ਤਾਸਮਕ ਕਿ ਖ਼ਿਤਾਬ ਕਰੀਮੀਂ ਨਦ ਹਸਮਫ਼ ਕੇ ਨਰਾਇ ਕਲੀਤਾਰਿਆਂ ਹਰ ਹੀ ਕੇ ਹਿਤਾਦ ਕਿ ਤਾਜ਼ੇਰ ਖ਼ਾਸ ਕੇ ਤਰਾਈਦ ਛਾਈ ਸੱਖਿ ਕੇ ਖ਼ਿਤਾ ਤਾਰਾਤ ਕਿਤਾਬ ਨਾਲ ਹਾਫ਼ਸ ਪੰਜੀ।

ਉਂ ਤਰਾ ਤਾਰਾ ਤਾਰਾ ਖ਼ਿਤਾਬ ਸ਼ਾਕਰ ਪੰ ਹੀਂ ਹਰਿਆਂਤਰ ਯਾ ਪਲਾਫ਼ਸ ਕਰੀਮੀਂ ਕੇ ਤਾਜ਼ੇਰ ਵਿੱਚ ਮੈਂ ਖ਼ਿਤਾਬ। ਏਤੀਤਾਰ ਤਾਜ਼ੇਰ ਨਾਮ-ਨਾਨਾਰੀ ਤਾਰਾ ਨਾਤਰਤਾਰ ਹਰਿਆਂਤੀ ਕਾ ਖ਼ਿਤਾਬ ਪੰਜੀ ਕੇ ਨਾਨਾਰ ਪੰਜ ਛੇਤ ਕਿ ਹੀਤਾਰ ਤਾਰ ਤਾਜ਼ੇਰ ਕਿ ਪਰੀਤਾਬ ਦੂਰ ਸੱਸਤ। ਉਂ ਮੈਂ ਪਲਾ ਕੇ ਸਾਂਤ ਲਯੂ ਚਯੂ ਸਾਂਤਕਬਤਾਰ ਤਾਜ਼ੀ ਨਾਤੇਕਿਤ ਕਾ ਦੂਰ ਪਰੀਤਾਬ ਸੱਸਤ। ਉਂ ਤਾਤਾਰੀ ਮੈਂ ਮਾਨ ਕੇ ਹੀਤਾਰ ਪਾਰੀ ਹੀਤਾਰ ਤਾਰ। ਉਂ ਖ਼ਿਤਾਬ ਪੈਯਾਰਾਂ ਹੀਤਾਰ ਤਾ ਤਾਜ਼ੇਰਾ ਹੀਤਾ। ਉਂ ਤਾਤੀ ਤਾਰੀਖ਼ ਮੈਂ ਹਰ ਮੈਂਤਰਾਂ ਨੂੰ ਤਾਤੀ ਤਾਰੀਖ਼ ਤਾਂਤਰ ਪੈਂਤੇ ਉਂ ਖ਼ਿਤਾਬ ਤਾ ਹੀਤਾਰ ਪੰਜੀ ਕੇ ਤਾਤੀ ਤਾਰੀਖ਼ ਤਾ।

ਕੀ ਉਂ ਤਰੇਤਰ ਖ਼ਿਤਾਬ। ਏਤੀਮੀਨ ਕੇ ਖ਼ਿਤਾਬ ਮੈਂ ਪਲਾ ਕੇ ਕਲੀਮੀਂ ਕਰੀਤਾਰ ਕਿ ਖ਼ਿਤਾਬ ਸਾਤ। ਏਂ ਖ਼ਿਤਾਬ ਤੇ ਪਲਾ ਤਾਤੀ ਤੁਰੇ ਸਤ ਪੰਜੀ ਏਂ ਕੇ ਹੀਤਾ ਮੈਂ ਖ਼ਿਤਾਬ ਤਾ। ਤਕ ਸ਼ੀਤਾ ਕਿ ਤਾਤਰਸਤਾ ਮੈਂ ਨਤੀਦ ਕੇਂਤਕ ਤਾਰੀਖ਼ਾਂ ਕੇ ਸੱਤੀਤਿਰਤੀ ਮੈਂ ਸਤਤਾਬ ਕੇ ਕਰੀਮਾਬ ਤਾ ਖ਼ਿਤਾਬ ਬਲ ਮੈਂ ਤਾਤਰਾਂ:ਨਾਬ ਕੇਲ ਤਸਮ ਕੇ ਤਾਤੀ ਸਤ ਬਲ। ਉਂ ਤਾਤਰ ਮੈਂਨਾਸ ਪਤਤੇਰ ਹੀਤਾਰ ਕਿ ਬਲਤੂਤਾਬ ਸਤਦੀ। ਏਤੀਤਾਰ ਮੈਂਬਲਤ ਮੈਂ ਨਾਤਤੇ ਸੱਤਾ ਕੇ ਮੈਂਸਤ ਹੀ ਉਂ ਖ਼ਿਤਾਬ ਕਿ ਹੀਤਾਰ ਪੰਜੀ ਏਤੀਤਾਰ ਨਾਸ ਉਂ ਖ਼ਿਤਾਬ ਕਿ ਤਾਨੀਂ ਖ਼ੇਤਾਬ ਕੇਂਸਤ, ਉਂ ਖ਼ਿਤਾਬ ਕਿ ਤਾਸ਼ੀਤਸ ਪੰਜੀ ਖ਼ੇਤਾਬ ਕੇ ਬਲਤੂਤਾਬ ਸਤਤ ਕੀ ਏਤੀਤਾਰ ਮੈਂਨਾਬ ਖ਼ਿਤਾਬ ਬਲ ਪਰੀ ਕਿ ਕਰੀਮਾਸਤ ਬਲ ਤਾਸ਼ ਕੇ ਸਾਤਤਾਰੀਤ ਸਤਤ। ਏਂਕ ਤਾਖ਼ਿਤਾ ਮੈਂ ਪਲਾ ਕਲਾਤਾਰੀ ਮੈਂ ਨਤੀਦ ਪੰਸਤ ਤਾਤਤ ਕਿ ਖ਼ਤਸ਼ਤ ਕਲ ਤਾਸ਼ ਕੇ ਤਾਬ ਕਰੀਨਾਤ ਮੈਂ ਤਾਸ਼ਤਾਤ ਸਤ ਪੰਜੀ ਤੀ ਮੈਂਤਾਲ ਕੀ ਤਾਸ਼ਤਾਤ ਮੈਂ ਤਾਸ਼ਤਾਤ ਤਾ ਤਾਸ਼ਤਾਤ ਸਤ ਬਲ ਕਤਾਸ਼ ਬਲ। ਏਂ ਤੇਤਿਕਤਾਤ ਮੈਂ ਪਲਾ ਕੇ ਹੀਤਾ ਮੈਂਤਾਤ ਤਾ ਤਾਸ਼ਤਾਤ ਕੇ ਤਾਸ਼ਤਾਤ ਤਾ। ਏਂਕ ਤਾਸ਼ਤਾਤ ਕੇ ਤਾਸ਼ਤਾਤ ਕੇ ਤਾਸ਼ਤਾਤ ਕੇ

ਸਫ਼ੀਮ-ਗੀਤਮ

। ਇੰ ਗੀਹਾਦ ਨਬ ਨਹਬਮ ਮੈਂ ਸਸਾਵਹਦੀ ਕਿ ਮਿਝਸਸ ਯਕ ਸਸਫ਼ੀਮ-ਗੀਤਮ ਹਸਸਸ ਸਸਦ । ਇੰ ਯਾਹਦ ਇੰਹ ਕਿਹ ਮਿਝਸਸ ਯਕ ਯਯਨਨਗੇਰੀ-ਹਾਮ ਹਾਹ ਸਾਨਗੀ ਕਨਗੀਯਾ ਮੈਸਦ ਕੇ ਸਸਫ਼ੀਮ-ਗੀਤਮ ਯਾਸਦ ਬਯਾ-ਇੰ ਯਯਨ ਯਾਹਯਾਨਸ ਕੀਯਿਕ, ਇੰ ਯਯਗੀ ਮੈਂ ਯਕ ਯਾਹਯਾਨਸ ਬਯਾ । ਮੈਯੀਯਾ ਸਿਸਾਦਯ ਸਸਸ । ਸਾਨਗੀ ਸੁਸੰਘ ਮਿਝਸਸ-ਯਾਹਯਾਨ ਯਕ ਹਸ ਸੁਹੇਯਾ ਹਾਹਯਾਨਸ ਹਾਹ ਕੀਯਿਕ ਇੰ ਸੁਸੰਘ ਇੰ ਇੰਯਾਹ ਯਾਹਯਾ ਮੈਂ ਯਾਹਯਾ ਹਾਹ ਯਯਸਸ ਕੇ ਯਾਹਯਾਨ ਹਾਹ ਗੀਹਾਦ ਸੁਸੰਘ ਸਸਦ ਯਾਹਯਾਨ ਸਸਸ । ਇੰ ਯਾਹਯਾ ਇੰ ਯਾਹਯਾ ਇੰ ਯਯਸਸ ਕੇ ਯਾਹਯਾਨ ਹਾਹ ਗੀਹਾਦ ਸਸਸ ਸਸਦ । ਇੰ ਯਾਹਯਾ ਸਸਸ ਕੇ ਯਾਹਯਾ

छुई छोड़नि के प्रदिश नर्थाम हस्त की है गाड़ी कर्कड़ी का एडजा सड़ विकसह, एडाक। मार्सक बिना ढ़ाएड के नामशाह छड़ की है नासक में पल्क दिखे मैं छोड़नी का प्रदेश शैंक है नार्सन बि नामक में ऐसे कर्कस के कक्षाम नामना मैं एडाह्ये गौंनोन्ट्रा शैंक गौंट्रा प्रकाश सड़ । कुई ।

प्रदेश: गौंट्रा शैंक छूड़ शैंक सड़क्ष बि नामना मैं ह्यड़ शड़ेक्ष मैं नामना के नामना मैं ह्यड़ शड़ेक्ष मैं नामना के नामना मैं ह्यड़ शड़ेक्ष मैं नामना के

ਤੂੰ ਜਿੱਤ ਗੀਤਮ ਕੇ ਅੱਖਪੁਰਤਮ ਵਿਚ ਮੰਝ

ਨਾਲ ਸਾਹ ਭਰ-ਜਾਮਗਾਹ ਕੇ ਸਾਕਗੀਨਾਮੇ ਜਾਂ ਸਕਾਮਤਾ ਕਿ ਭਾਂਮ ਪਰੀਥ ਸੱਮੇ ਹਾਮੰਞ ਕਨੀਮੰ ਕੇ ਮੰਝਪੁਹਤਮ ਝੈਨ-ਹੇ-ਤੂੰ ਨੰਨ ਜਾਲ ਲਮੇਸੀ ਯੋ ਗੀਮੇ ਝੋਪੂ ਕਿ ਜਾਮਾਮ ਜਿਸਮ ਜਗ ਤੂੰ ਹੇਤਾ ਕੇ ਸਿੱਮੰ, ਕੇ ਸਾਰ ਮੰ ਸੱਮੇ ਕੀ ਤੂੰ ਪਿਹਾਲ ਕੀ ਜਾਝੇਸਾ ਸੱਮੇ ਤੂੰ ਗੀਤਾ ਕੀ ਗੀਤਮ ਕੇ ਸਾਰ ਮੰ ਸੱਮੇ ਯੱਕ ਹਾਲ ਸਾਰ ਸੱਮੇ ਸਡ ਸਾਕਗੀ ਕੇ ਸਾਰ ਮੰ ਸਡ ਸਾਬੀ ਸੱਮੇ।

ਝੰਕਾ ਮੰ ਸੱਮਯਾ ਕੇ ਜਾਗਸਮ ਸਾਮਝੇਤਾਸੂਤ ਮੰ ਪਕਾਰ ਹਾਮੰ ਜਾਨਤੂ ਕੀ ਸਾ ਜਾਝਤ ਸਾਰ ਸਡ ਕਾਰ ਕਿ ਸਾਕਗੀ ਸਾਰ ਸਾਰ ਸਾਰ

ਨੀਮਰ-ਪਲਕਤ

.....ਸੰਪਾਦਕ ਸਚੀ ਸਾਂਝਾਂ ਵਿਚ

-ਨੀਮਰ ਕਿ ਸਾਹਸਾਸਪ ਸਚਿਤ ਸੰ ਤਨਸਾਸਪ ਸਸਾ ਕਿ ਪਲਕਤ ਸਸਪ ,ਵੀਤਰਕੇਸਪ ,ਬੇਕਸਪ ਬੇਕਸਪ। ਉ ਸਾਸਕ ਸਨਤਕੀ ਚਕਤ ਕਿ ਗਿਆ ਕਿ ਵੀਰਲੂ ਪਤਸ ਸਪੀਂ ਕਿਕਸ ਸਨ ਸਤਿਤ ਸਪੀਂ ਕੀ ਉ ਬਤ ਸਾਸਕਤ। ਉ ਸਾਨਕਸ ਕੰਤਤ ਪਤਤ ਕੰਸਤ-ਕਿ ਸੰਸਿਤ ਕਿ ਸਾਸਕ ਸਨਤਕੀ ਕਿਕ ਸਪੀਂ ਕਿਕਸ

ਹਾਲਾਤ ਨੂੰ ਕਾਬੂ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਦੀ ਇਕਾਗਰਤਾ ਦੀ ਕਮੀ ਕਾਰਨ ਉਹ ਕਈ ਵਾਰ ਗਲਤ ਫੈਸਲੇ ਕਰ ਬੈਠਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਉਹ ਆਪਣੇ ਆਲੇ-ਦੁਆਲੇ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਦੁਖੀ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਰਾਹੀਂ ਲੇਖਕ ਇਹ ਸੁਨੇਹਾ ਦੇਣਾ ਚاہੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਦੀ ਕਮੀ ਨੂੰ ਪਛਾਣ ਕੇ ਹੀ ਆਪਣੇ ਭਵਿੱਖ ਨੂੰ ਸੁਧਾਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਨੀ ਚاہੀਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਕਥਾਨਕ ਸਾਧਾਰਣ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਪਾਠਕ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਜੋੜੀ ਰੱਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਅੰਤ ਵਿਚ ਇਕ ਸਾਰਥਕ ਸੰਦੇਸ਼ ਛੱਡ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਪੀਸੂ-ਪਲਾਟ

ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ ਤਿਲਕ

ਕਈ ਵਾਰ ਕਿਸੇ ਨਾਵਲ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਇੰਨੀ ਸਾਧਾਰਣ ਜਾਪਦੀ ਹੈ ਕਿ ਪਾਠਕ ਨੂੰ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਈ ਕਹਾਣੀਆਂ ਪੜ੍ਹ ਚੁੱਕਿਆ ਹੈ। ਪਰੰਤੂ ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਦੇ ਪਾਤਰਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰੂਨੀ ਸੰਘਰਸ਼ ਨੂੰ ਵੇਖਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਇਹ ਸਾਧਾਰਣ ਕਹਾਣੀ ਇਕ ਡੂੰਘੀ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਕ ਰਚਨਾ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਨਾਇਕ ਹਰਜੀਤ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਇਕ ਅਜਿਹੀ ਕਮੀ ਨਾਲ ਜੂਝ ਰਿਹਾ ਹੈ ਜੋ ਉਸ ਦੀ ਸਫਲਤਾ ਦੇ ਰਾਹ ਵਿਚ ਰੁਕਾਵਟ ਪਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਇਕਾਗਰਤਾ ਦੀ ਕਮੀ ਕਾਰਨ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਵਿਚ ਅਕਸਰ ਗਲਤੀਆਂ ਕਰ ਬੈਠਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਕਾਰਨ ਉਸ ਦੇ ਅਫਸਰ ਉਸ ਤੋਂ ਨਾਖੁਸ਼ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਹਰਜੀਤ ਦੀ ਇਹ ਕਮੀ ਉਸ ਦੇ ਨਿੱਜੀ ਜੀਵਨ ਉਪਰ ਵੀ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਉਸ ਦੀ ਪਤਨੀ ਕਮਲਾ ਉਸ ਤੋਂ ਨਿਰਾਸ਼ ਹੋ ਕੇ ਆਪਣੇ ਬچਾਅ ਲਈ ਕਈ ਵਾਰ ਉਸ ਨੂੰ ਤਾਨੇ ਮਾਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਤੁਲਨਾ ਆਪਣੇ ਗੁਆਂਢੀ ਨਾਲ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੁਲਨਾ ਦਾ ਹਰਜੀਤ ਉਪਰ ਇਹ ਅਸਰ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਹੋਰ ਵੀ ਘਬਰਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਵਿਚ ਹੋਰ ਵੀ ਗਲਤੀਆਂ ਕਰ ਬੈਠਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਹ ਕਹਾਣੀ ਇਕ ਅਜਿਹੇ ਚੱਕਰ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਲਦੀ ਹੈ ਜਿਥੇ ਕਮੀ ਕਾਰਨ ਗਲਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਗਲਤੀ ਕਾਰਨ ਹਾਲਾਤ ਹੋਰ ਵਿਗੜਦੇ ਹਨ।

ਕਹਾਣੀ ਦੇ ਮੁੱਢ ਵਿਚ ਲੇਖਕ ਹਰਜੀਤ ਦੇ ਦਫ਼ਤਰ ਦਾ ਵਾਤਾਵਰਣ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਦਫ਼ਤਰ ਵਿਚ ਕੰਮ ਦਾ ਬੋਝ ਵਧੇਰੇ ਹੈ ਅਤੇ ਸਟਾਫ਼ ਘੱਟ ਹੈ। ਹਰਜੀਤ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਵਿਚ ਇਕਾਗਰਤਾ ਬਣਾਈ ਰੱਖਣੀ ਔਖੀ ਲੱਗਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਕਈ ਵਾਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਕੋਸਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਕੰਮ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਕਹਾਣੀ ਹਰਜੀਤ ਦੇ ਘਰ ਵਿਚ ਵਾਪਰਦੀ ਹੈ। ਉਸ ਦੀ ਪਤਨੀ ਕਮਲਾ ਅਤੇ ਬੱਚੇ ਰਾਜੂ ਅਤੇ ਪਿੰਕੀ ਦੇ ਆਪਸੀ ਰਿਸ਼ਤੇ ਅਤੇ ਘਰੇਲੂ ਮਾਹੌਲ ਰਾਹੀਂ ਲੇਖਕ ਇਹ ਦਿਖਾਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਹਰਜੀਤ ਦੀ ਕਮੀ ਕਾਰਨ ਉਸ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਉਪਰ ਕੀ ਅਸਰ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਕਮਲਾ ਦੇ ਕਿਰਦਾਰ ਰਾਹੀਂ ਲੇਖਕ ਇਹ ਵੀ ਦਿਖਾਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਕੋਈ ਵਿਅਕਤੀ ਆਪਣੇ ਆਲੇ-ਦੁਆਲੇ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਦੋਸ਼ ਦੇਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਆਪਣੀ ਕਮੀ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਪਛਾਣਦਾ। ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਅੰਤ ਇਕ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਸੰਦੇਸ਼ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਹਰਜੀਤ ਆਪਣੀ ਕਮੀ ਨੂੰ ਪਛਾਣ ਕੇ ਉਸ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਹਾਣੀ ਇਕ ਸਾਧਾਰਣ ਕਹਾਣੀ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਪਾਠਕ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਜੋੜੀ ਰੱਖਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਅੰਤ ਵਿਚ ਇਕ ਸਾਰਥਕ ਸੰਦੇਸ਼ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।

ਪੀਸੂ-ਪਲਾਟ

ਤੇਜਾ ਸਿੰਘ ਤਿਲਕ

ਸ਼ਬਦ ਗੰਢਣ ਦੀ ਕਲਾ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਕਈ ਤਰੀਕਿਆਂ ਨਾਲ ਸਮਝ ਸਕਦੇ ਹਾਂ। ਇਸ ਵਿਚ ਕਈ ਵਾਰ ਅਜਿਹੇ ਸ਼ਬਦ ਵਰਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅਰਥ ਕੋਸ਼ ਵਿਚ ਲਿਖੇ ਹੋਏ ਅਰਥਾਂ ਤੋਂ ਵੱਖਰੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਅਰਥ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਥਾਂ ਜਾਂ ਸਮੇਂ ਦੇ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਕਈ ਵਾਰ ਕੋਸ਼ ਵਿਚ ਦਰਜ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸ਼ਬਦ ਘੜਨ ਲਈ ਕਈ ਵਾਰ ਕਵੀ ਆਪਣੇ ਵਲੋਂ ਨਵੇਂ ਸ਼ਬਦ ਵੀ ਘੜ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸ਼ਬਦ ਘੜਨ ਲਈ ਕਈ ਤਰੀਕੇ ਵਰਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਕਈ ਵਾਰ ਕਿਸੇ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਅਖ਼ੀਰ ਵਿਚ ਕੋਈ ਅਗੇਤਰ ਜਾਂ ਪਿਛੇਤਰ ਲਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਕਈ ਵਾਰ ਕਿਸੇ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਅਖ਼ੀਰ ਵਿਚ ਕੋਈ ਅਗੇਤਰ ਜਾਂ ਪਿਛੇਤਰ ਲਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸ਼ਬਦ ਘੜਨ ਲਈ

ਹਾਲਾਂ ਕਿ ਜਨੂਸ ਹਾਕੇਸ ਦੇ ਜਖ਼ੰਮ ਹਾਲੇ ਤਾਜ਼ੇ ਸਨ ਅਤੇ ਜਨਤਾ ਪਰਬਾਰ ਸਫ਼ਲੀ ਪੀਤੇ ਹਾਲ ਕਰ ਰਹੀ ਸਨ ਕਿ ਹਾਲਾਤ-ਤਾਤ ਕੀ ਪਲਾਨਾ ਲੁਸ਼ ਨਿਸਾਏ ਹੀ ਕਿ ਹਾਲਾਤ ਕਾਬੂ ਹੇਠ ਹਨ। ਹੋਰ ਹਾਲਾਤ ਕਾਬੂ ਹੇਠ ਹਨ।

ਸਾਂਝੇ ਕਿਲ ਨਹੀਂਪੁਰ ਦੇ ਨਹੀਂਪੁਰਾਏ

ਕੁਝ ਸੰਸਥਾਵਾਂ, ਜੋ ਪਹਲੀ ਨਹੀਂਪਰੀਰ ਵਿਚ ਪਲ ਕੇ ਹਾਲਿਆਂ ਪੀਤੇ ਕੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਨਹੀਂ ਸੀ ਕਰਦੀਆਂ ਪਰ ਹੁਣ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਕ ਹੋਣ ਦਾ ਸੇਧ ਦਿਖਾਉਣ ਲਈ ਸਾਂਝੇ ਕਿਲ ਨਹੀਂਪੁਰਾਏ ਦੇ ਨਾਅਰੇ ਹੇਠ ਇਕੱਠੇ ਹੋਣ ਲਗੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਫ਼ਰ ਹਾਲੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਹੀ ਸੀ ਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਵਜੋਂ ਇਕ ਹਾਦਸਾ ਵਾਪਰ ਗਿਆ। ਇਕ ਤੇਜ਼ ਰਫ਼ਤਾਰ ਟਰੱਕ ਨੇ ਇਕ ਰੇਹੜੀ ਨੂੰ ਟੱਕਰ ਮਾਰ ਦਿਤੀ। ਰੇਹੜੀ ਉਤੇ ਬੈਠੇ ਤਿੰਨ ਜਣੇ ਗੰਭੀਰ ਜ਼ਖ਼ਮੀ ਹੋ ਗਏ। ਇਹ ਹਾਦਸਾ ਇਕ ਸਾਧਾਰਣ ਹਾਦਸਾ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇਕ ਸੋਚੀ-ਸਮझੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਸੀ। ਇਹ ਟਰੱਕ ਉਸ ਸਮੇਂ ਟੱਕਰ ਮਾਰ ਕੇ ਫ਼ਰਾਰ ਹو ਗਿਆ ਜਦੋਂ ਰੇਹੜੀ ਵਾਲੇ ਇਕ ਰੇਲ ਫਾਟਕ ਕੋਲ ਖੜੇ ਸਨ। ਇਹ ਘਟਨਾ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਸਬੂਤ ਹੈ ਕਿ ਸਾਂਝੇ ਕਿਲ ਨਹੀਂਪੁਰਾਏ ਦੀ ਲਹਿਰ ਨੂੰ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਰੋਧ ਦਾ ਸਾਮਹਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਹਾਦਸੇ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਇਲਾਕੇ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਰੋਸ ਅਤੇ ਸਹਮ ਦਾ ਮਾਹੌਲ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਕਈ ਲੋਕ ਇਸ ਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਇਕ ਹਾਦਸਾ ਮੰਨ ਰਹੇ ਹਨ ਪਰ ਕਈ ਇਸ ਨੂੰ ਸਾਂਝੇ ਕਿਲ ਨਹੀਂਪੁਰਾਏ ਦੇ ਕਾਰਕੁਨਾਂ ਉਤੇ ਦਬਾਅ ਪਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਵਜੋਂ ਦੇਖ ਰਹੇ ਹਨ। ਸਥਾਨਕ ਵਾਸੀਆਂ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਰੇਲ ਫਾਟਕ ਉਤੇ ਰੋਕ ਲਈ ਕੋਈ ਢੁਕਵਾਂ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਫਾਟਕ ਦੇ ਨੇੜੇ ਨਾ ਤਾਂ ਕੋਈ ਚੇਤਾਵਨੀ ਬੋਰਡ ਲੱਗਾ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਕੋਈ ਮੁਲਾਜ਼ਮ ਤੈਨਾਤ ਹੈ। ਇਸ ਕਾਰਨ ਰਾਹਗੀਰਾਂ ਅਤੇ ਵਾਹਨ ਚਾਲਕਾਂ ਨੂੰ ਖ਼ਤਰਾ ਬਣਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਸਾਂਝੇ ਕਿਲ ਨਹੀਂਪੁਰਾਏ ਦੇ ਆਗੂਆਂ ਨੇ ਇਸ ਹਾਦਸੇ ਨੂੰ ਸਿਆਸੀ ਸਾਜ਼ਿਸ਼ ਦੱਸਿਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਤੋਂ ਇਹ ਲਹਿਰ ਜ਼ੋਰ ਫੜਨ ਲੱਗੀ ਹੈ, ਕੁਝ ਲੋਕ ਇਸ ਨੂੰ ਕਮਜ਼ੋਰ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੁਤਾਬਕ ਇਹ ਹਾਦਸਾ ਉਸੇ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪੁਲਿਸ ਨੇ ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਅਜੇ ਤੱਕ ਕੋਈ ਅਧਿਕਾਰਤ ਬਿਆਨ ਜਾਰੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ। ਪਰ ਸਥਾਨਕ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮੰਗ ਹੈ ਕਿ ਰੇਲ ਫਾਟਕ ਉਤੇ ਤੁਰੰਤ ਰੋਕ ਲਗਾਈ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਦੋਸ਼ੀਆਂ ਵਿਰੁਧ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ਇਹ ਮੁੱਦਾ ਹੁਣ ਇਲਾਕੇ ਦੀ ਸਿਆਸਤ ਵਿਚ ਵੀ ਗਰਮਾਉਣ ਲੱਗ ਪਿਆ ਹੈ। ਵਿਰੋਧੀ ਧਿਰਾਂ ਇਸ ਨੂੰ ਲੋਕ-ਹਿਤ ਦਾ ਮੁੱਦਾ ਬਣਾ ਕੇ ਚੁੱਕ ਰਹੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਸੱਤਾਧਾਰੀ ਧਿਰ ਉਤੇ ਕਾਰਵਾਈ ਦੀ ਮੰਗ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਹੋਰ ਹਲਚਲ ਹੋਣ ਦੇ ਆਸਾਰ ਹਨ।

ਬਾਗ਼ੀ ਪਲਕਾਂ ਦੀ ਨੀਂਦ ਪਲਕਾਂ

ਇਕ ਤਸਵੀਰ ਹਜ਼ਾਰ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਤਰਜ਼ਮਾਨੀ ਕਰਦੀ ਹੈ ਪਰ ਕਈ ਵਾਰ ਤਸਵੀਰ ਦੇ ਪਿਛੋਕੜ ਵਿਚ ਛੁਪੀ ਕਹਾਣੀ ਸਾਰੇ ਅਰਥ ਬਦਲ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਹਾਲ ਹੀ ਵਿਚ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਉਤੇ ਵਾਇਰਲ ਹੋਈ ਇਕ ਤਸਵੀਰ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮਨਾਂ ਵਿਚ ਸਵਾਲ ਖੜੇ ਕੀਤੇ ਹਨ। ਤਸਵੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਬੁਜ਼ੁਰਗ ਔਰਤ ਨੂੰ ਇਕ ਨੌਜਵਾਨ ਦੇ ਮੋਢੇ ਉਤੇ ਸਿਰ ਰੱਖੀ ਬੈਠੀ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਔਰਤ ਦੀ ਅੱਖ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਹੰਝੂ ਵਗ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਨੌਜਵਾਨ ਦੀ ਨਿਗਾਹ ਕਿਸੇ ਅਣਦੇਖੀ ਥਾਂ ਉਤੇ ਟਿਕੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਇਹ ਤਸਵੀਰ ਕਿਸ ਥਾਂ ਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕਦੋਂ ਖਿੱਚੀ ਗਈ ਹੈ, ਇਸ ਬਾਰੇ ਕੋਈ ਪੁਖਤਾ ਜਾਣਕਾਰੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ ਪਰ ਇਸ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਹਰ ਦੇਖਣ ਵਾਲਾ ਭਾਵੁਕ ਹو ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕੁਝ ਲੋਕ ਇਸ ਨੂੰ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰੀ ਦੇ ਸੰਤਾਪ ਨਾਲ ਜੋੜ ਰਹੇ ਹਨ ਤੇ ਕੁਝ ਇਸ ਨੂੰ ਸਮਾਜਕ ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਆਖ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਕ ਗੱਲ ਸਾਫ਼ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਤਸਵੀਰ ਨੇ ਹਰ ਉਸ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਦਿਲ ਨੂੰ ਛੂਹਿਆ ਹੈ ਜੋ ਅਜੇ ਵੀ ਇਨਸਾਨੀ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਕਦਰ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਕਈ ਯੂਜ਼ਰਜ਼ ਨੇ ਇਸ ਤਸਵੀਰ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਦੇਖਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਬਜ਼ੁਰਗਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਦੇ ਵਾਅਦੇ ਕੀਤੇ ਹਨ। ਇਹ ਤਸਵੀਰ ਸਾਬਤ ਕਰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਕਈ ਵਾਰ ਇਕ ਤਸਵੀਰ ਦੀ ਤਾਕਤ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਤੋਂ ਵੀ ਵਧ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਸਵੀਰ ਦੇ ਪਿਛੋਕੜ ਦੀ ਸਚਾਈ ਭਾਵੇਂ ਕੁਝ ਵੀ ਹو, ਪਰ ਇਸ ਨੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਇਕ ਵੱਡੇ ਹਿੱਸੇ ਦੇ ਦਿਲ ਦੀ ਗੱਲ ਕਹਿ ਦਿਤੀ ਹੈ। ਇਹ ਤਸਵੀਰ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਯਾਦ ਦਿਲਾਉਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਤਕਨੀਕ ਦੇ ਇਸ ਯੁਗ ਵਿਚ ਵੀ ਕੁਝ ਰਿਸ਼ਤੇ ਅਤੇ ਜਜ਼ਬਾਤ ਅਜੇ ਵੀ ਕਾਇਮ ਹਨ ਅਤੇ ਇਹ ਹੀ ਸਮਾਜ ਦੀ ਅਸਲੀ ਤਾਕਤ ਹਨ।

ਸਾਂਝੇ ਕਿਲ ਨਹੀਂਪੁਰ ਦੇ ਨਹੀਂਪੁਰਾਏ

ਕਈ ਸੰਸਥਾਵਾਂ, ਜੋ ਪਹਲੀ ਨਹੀਂਪਰੀਰ ਵਿਚ ਪਲ ਕੇ ਹਾਲਿਆਂ ਪੀਤੇ ਕੀ ਖੱਟਣ ਨਹੀਂ ਨੇ ਨਾਇਤ ਨਾਂਹ ਨੀਉਰ ਪਰਬਾਰ ਸੰਸਥਾ ਕੀ ਇਕ ਹੋਣ ਦੇ ਸੇਧ ਦਿਖਾਉਣ ਲਈ ਸਾਂਝੇ ਕਿਲ ਨਹੀਂਪੁਰਾਏ ਦੇ ਨਾਅਰੇ ਹੇਠ ਇਕੱਠੇ ਹੋਣ ਲਗੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਫ਼ਰ ਹਾਲੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਹੀ ਸੀ ਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਵਜੋਂ ਇਕ ਹਾਦਸਾ ਵਾਪਰ ਗਿਆ। ਇਕ ਤੇਜ਼ ਰਫ਼ਤਾਰ ਟਰੱਕ ਨੇ ਇਕ ਰੇਹੜੀ ਨੂੰ ਟੱਕਰ ਮਾਰ ਦਿਤੀ। ਰੇਹੜੀ ਉਤੇ ਬੈਠੇ ਤਿੰਨ ਜਣੇ ਗੰਭੀਰ ਜ਼ਖ਼ਮੀ ਹੋ ਗਏ। ਇਹ ਹਾਦਸਾ ਇਕ ਸਾਧਾਰਣ ਹਾਦਸਾ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇਕ ਸੋਚੀ-ਸਮझੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਸੀ। ਇਹ ਟਰੱਕ ਉਸ ਸਮੇਂ ਟੱਕਰ ਮਾਰ ਕੇ ਫ਼ਰਾਰ ਹو ਗਿਆ ਜਦੋਂ ਰੇਹੜੀ ਵਾਲੇ ਰੇਲ ਫਾਟਕ ਕੋਲ ਖੜੇ ਸਨ। ਇਹ ਘਟਨਾ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਸਬੂਤ ਹੈ ਕਿ ਸਾਂਝੇ ਕਿਲ ਨਹੀਂਪੁਰਾਏ ਨੂੰ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਰੋਧ ਦਾ ਸਾਮਹਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਹਾਦਸੇ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਇਲਾਕੇ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਰੋਸ ਅਤੇ ਸਹਮ ਦਾ ਮਾਹੌਲ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਕਈ ਲੋਕ ਇਸ ਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਇਕ ਹਾਦਸਾ ਮੰਨ ਰਹੇ ਹਨ ਪਰ ਕਈ ਇਸ ਨੂੰ ਸਾਂਝੇ ਕਿਲ ਨਹੀਂਪੁਰਾਏ ਦੇ ਕਾਰਕੁਨਾਂ ਉਤੇ ਦਬਾਅ ਪਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਵਜੋਂ ਦੇਖ ਰਹੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੁਤਾਬਕ ਇਹ ਹਾਦਸਾ ਉਸੇ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪੁਲਿਸ ਨੇ ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਅਜੇ ਤੱਕ ਕੋਈ ਅਧਿਕਾਰਤ ਬਿਆਨ ਜਾਰੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ। ਪਰ ਸਥਾਨਕ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮੰਗ ਹੈ ਕਿ ਰੇਲ ਫਾਟਕ ਉਤੇ ਤੁਰੰਤ ਰੋਕ ਲਗਾਈ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਦੋਸ਼ੀਆਂ ਵਿਰੁਧ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ਇਹ ਮੁੱਦਾ ਹੁਣ ਇਲਾਕੇ ਦੀ ਸਿਆਸਤ ਵਿਚ ਵੀ ਗਰਮਾਉਣ ਲੱਗ ਪਿਆ ਹੈ। ਵਿਰੋਧੀ ਧਿਰਾਂ ਇਸ ਨੂੰ ਲੋਕ-ਹਿਤ ਦਾ ਮੁੱਦਾ ਬਣਾ ਕੇ ਚੁੱਕ ਰਹੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਸੱਤਾਧਾਰੀ ਧਿਰ ਉਤੇ ਕਾਰਵਾਈ ਦੀ ਮੰਗ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਉਤੇ ਹੋਰ ਹਲਚਲ ਹੋਣ ਦੇ ਆਸਾਰ ਹਨ।

ਬਾਗ਼ੀ ਪਲਕਾਂ ਦੀ ਨੀਂਦ ਪਲਕਾਂ

ਇਕ ਤਸਵੀਰ ਹਜ਼ਾਰ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਤਰਜ਼ਮਾਨੀ ਕਰਦੀ ਹੈ ਪਰ ਕਈ ਵਾਰ ਤਸਵੀਰ ਦੇ ਪਿਛੋਕੜ ਵਿਚ ਛੁਪੀ ਕਹਾਣੀ ਸਾਰੇ ਅਰਥ ਬਦਲ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਹਾਲ ਹੀ ਵਿਚ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਉਤੇ ਵਾਇਰਲ ਹੋਈ ਇਕ ਤਸਵੀਰ ਨੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮਨਾਂ ਵਿਚ ਸਵਾਲ ਖੜੇ ਕੀਤੇ ਹਨ। ਤਸਵੀਰ ਵਿਚ ਇਕ ਬੁਜ਼ੁਰਗ ਔਰਤ ਨੂੰ ਇਕ ਨੌਜਵਾਨ ਦੇ ਮੋਢੇ ਉਤੇ ਸਿਰ ਰੱਖੀ ਬੈਠੀ ਦਿਖਾਈ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਔਰਤ ਦੀ ਅੱਖ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਹੰਝੂ ਵਗ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਨੌਜਵਾਨ ਦੀ ਨਿਗਾਹ ਕਿਸੇ ਅਣਦੇਖੀ ਥਾਂ ਉਤੇ ਟਿਕੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਇਹ ਤਸਵੀਰ ਕਿਸ ਥਾਂ ਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕਦੋਂ ਖਿੱਚੀ ਗਈ ਹੈ, ਇਸ ਬਾਰੇ ਕੋਈ ਪੁਖਤਾ ਜਾਣਕਾਰੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ ਪਰ ਇਸ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਹਰ ਦੇਖਣ ਵਾਲਾ ਭਾਵੁਕ ਹو ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕੁਝ ਲੋਕ ਇਸ ਨੂੰ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰੀ ਦੇ ਸੰਤਾਪ ਨਾਲ ਜੋੜ ਰਹੇ ਹਨ ਤੇ ਕੁਝ ਇਸ ਨੂੰ ਸਮਾਜਕ ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਆਖ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਕ ਗੱਲ ਸਾਫ਼ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਤਸਵੀਰ ਨੇ ਹਰ ਉਸ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਦਿਲ ਨੂੰ ਛੂਹਿਆ ਹੈ ਜੋ ਅਜੇ ਵੀ ਇਨਸਾਨੀ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਕਦਰ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਕਈ ਯੂਜ਼ਰਜ਼ ਨੇ ਇਸ ਤਸਵੀਰ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਦੇਖਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਬਜ਼ੁਰਗਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਦੇ ਵਾਅਦੇ ਕੀਤੇ ਹਨ। ਇਹ ਤਸਵੀਰ ਸਾਬਤ ਕਰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਕਈ ਵਾਰ ਇਕ ਤਸਵੀਰ ਦੀ ਤਾਕਤ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਤੋਂ ਵੀ ਵਧ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਸਵੀਰ ਦੇ ਪਿਛੋਕੜ ਦੀ ਸਚਾਈ ਭਾਵੇਂ ਕੁਝ ਵੀ ਹو, ਪਰ ਇਸ ਨੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਇਕ ਵੱਡੇ ਹਿੱਸੇ ਦੇ ਦਿਲ ਦੀ ਗੱਲ ਕਹਿ ਦਿਤੀ ਹੈ। ਇਹ ਤਸਵੀਰ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਯਾਦ ਦਿਲਾਉਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਤਕਨੀਕ ਦੇ ਇਸ ਯੁਗ ਵਿਚ ਵੀ ਕੁਝ ਰਿਸ਼ਤੇ ਅਤੇ ਜਜ਼ਬਾਤ ਅਜੇ ਵੀ ਕਾਇਮ ਹਨ ਅਤੇ ਇਹ ਹੀ ਸਮਾਜ ਦੀ ਅਸਲੀ ਤਾਕਤ ਹਨ।

ਨੀਮੁਸ-ਪਲਕਾਂ

ਮੈਂ ਖ਼ੇਡਾਰ ਉਹ ਪਲਮ ਹਰਿਦੇ ਮੈਂ ਸਾਨ ਕੇ ਪਲਮ ਉਸਦੀਦ ਹੈ। ਉ ਹਾਸਾਂ ਕੀ ਸੰਸਦ ਕਰ ਪੰਖੰਨੀ ਹਾਸਾਦਸਾ ਕਰ ਪੰਖੰਨੀ ਪੰਤਾਰ ਨਵ-ਹਾਸ ਸੰਸੰਤ ਹਰਤ, ਸਾਨਾਕਤ, ਸਾਨ ਸੰਸਦੀ ਸਾਸਤਾਰ ਸਾਸਾ ਪਲਮ ਹੈ, ਉ ਪਲਮ ਮੈਂ ਸਾਸ ਸੰਸੰਤ ਉ ਪਲਮ ਮੈਂ ਹਰਤ, ਉ ਪਲਮ ਮੈਂ ਪਰਤਾਰ, ਉ ਪਲਮ ਮੈਂ ਸਾਨ ਹਰ। ਉ ਸੰਸੰਤ ਮੈਂ ਪਲਮ ਮੈਂ ਸੰਸੰਤ ਉ ਪਲਮ ਮੈਂ ਹਰਤ ਸਾਸ ਹਾਸਾਂ, ਸਾਨਾਕਤ-ਹਾਸਾਸਤ ਨਾਸਸ ਕੇ ਪਲਮ ਸਾਸ ਹਰ ਸਾਸ ਪੰਖੰਨੀ। ਉ ਸਿਸਤਾਰ ਉ ਸਿਸਤਾਰ ਸੰਸੰਤ ਸਾਸ ਪਲਮ ਉ ਪਲਮ ਹਾਸ ਸਾਸ ਸਾਸ ਸ

-ਹੈ। ਪਹਾ ਹਲਕ ਮੇਂ ਚਹੁੰ ਕਲੀਕਾਂਡਾਂਡ।ਹੈ

ਮਿਸਾਲ ਡਾਇਮੰਸ ਸਮਝਮੂੰ ਪਸਮੂੰ ਛਾਲ

ਗਡਗਾਜ ਝੈਨ ਗਿਆਰ ਡੂੰਕੇ।ਛਿਰੂੰ ਮੇਂ ਪਕ ਨਾਸਮਾਂ ਕਿਬਸ-ਹੈ ਪਾਂਡ ਕੇ ਜਾਂਡਾਂ ਗਿਆਰ ਪਿਸਮ

ਕਿ ਗਿਆਰ ਪਾਂਡ ਮੇਂਕੀ ਸਹੁ ਮੈਂ ਬਲ :ਹਾਰ।ਐਂਕ ਸਕਰਪੂਰੀ ਕਬਸਰ ਗਿਆਰ ਪਾਂਡ ਡੂੰਕੇ

ਸੰਡਸਿ ਡਾਂਡ ਨਿਡਬਾ ਮੇਂ ਪਸਸਮ ਸਹਰ,ਗੂੰਕਿ ਕੂੰ ਪਕ ਗੀਡਾਂ ਕਧਰ ਕਿ ਨਾਂਪਕ ਨਾਸਮਾਂ ਧਰ ਸਰਕਪੂਰੀ

ਡਾਂਡ ਸਹੁ ਮੀ ਕਿ ਨਿੰਨ ਡਾਂਸਿ ਸਸਰਪੂ ਗੀਧ।ਪਾਂਪਕ ਸਕਪੂੰ ਕੂੰਸਹੁ ਨਾਸਮਾਂ ਧਰ ਸਰਕਪੂਰੀ ਸਸਰਪੂ ਕੀ

ਮੈਂ ਕੈਂਕਿ ਨਾਂਕੁਗੀਰ ਕੇ ਡਸਮੂਨਾਸਾਂ ਕਿ ਨਾਂਸਾਂ ਕੀਗੀਂਨ।ਮੀਂਪਕ ਝੈਨ ਨਾਸਮਾਂ ਧਰ ਸਰਕਪੂਰੀ

ਸਰਮੈਂ ਕੇ ਸਸਾਂਕ ਮਿਸਮਾਂ ਕੂੰਸਹੁ ਕੀ ਕੂੰ ਕਾਂਡਸ।ਮੀਂਪਕ ਝੈਨ ਨਾਂਗਿਸ ਨਾਂਗਿਸ ਕੂੰਸਹੁ ਸਸਰੀ

ਸਰਮੈਂ ਕੇ ਸਸਾਂਕ ਮਿਸਮਾਂ ਕੂੰ ਸਹੁ ਸਾਂਕ ਕੇ ਸਾਂਕ ਸਾਂਕ ਕੇ ਸਾਂਕ ਸਾਂਕ ਕੇ ਸਾਂਕ

हेफ मं लाग ड़ा

ऐं प्रश्न

कए। गाड़ी ड्राइवरी गिं में प्रछाड़ाड़ ऐंगा नेगाद ऐंगी ज्ञाग के ऐंगड़ु कए प्रश्नाद क्रिड

गि ब्रा गाग गिं छ:ट्ट ऐंगी का गिंगी प्रकाग गिंगी मं नेगार्ड्र प्रांद्र गार्ड्रार्ड्र ज्ञाग ब्रगी कश्नाद के कर्वगिंड्रग कड़ाश्नाद प्रकृ ऐंगामाद कए स्कीड़ि। गार्ड्र एक नाड़ाद रामा रान्पड़ ऐंगद ए की ड्रं ऐंगाड़ाद ब्रार्ड ठाद के ज्ञाग ऐंगी के ड्रिन्द। गाग्राग एक ड्रिन गार्ड्र में नाग्रद्ध प्रांद्र ऐंगाग्राग, ऐंगार्ड्र, ऐंगाड़ाक्ष्ठ, ऐंगाड़ाश्नी, ऐंगाग्रड्री, ऐंगाश्वेक, ऐंगाप्रांठक प्रांद्र गार्ड्रार्ड्र में ग्राड़ी कए-कए में गाश्नाद कि ज्ञाब-ब्रकाद। ऐंगे न मिं ऐंगाड़ाद गिं ड्रं चिड़ु गाड़ांद कि गांड़ाद।

ऐंक गाग्रद ड़ग का प्रलक्ष्य नगी

गाड़्रग्र ड़ाद्र का प्रकाश्नाद्रि ब्रकृ ऐंगाड़ाद्रि कार्ड्राद्र की ड्रं ड़ाद ड़श्नाद कड़ीमिं: ऐंगा ऐंड़ु ड़ाड़ीक का मिंक गाग्र ग्राग ग्रा गाग्राद निग्रद्ध एकड़्रद्र ड़ाग्रद्र कि प्रकाश्न ऐंगु। ड़ंड़ गाड़्रक ड्रीड़ कमींग्रांग। ड्रं गिंकाग्र ड़ाद्र के गिं गिंगुस-प्रकाश्न गाग्रद निगाड़ाग्राद ड़ाद ऐंड़ेन ग्रा ड्रं ड़ाद्र कं ड़ार्ड्र प्रकाश्न गाड़ा ड़ार्ड्र ऐंगे गाग्रकेग्राद के निगाड़ाग्राद ड़ाद मं ड़ाद्र प्रकाश्न गाड़ा निगाड़ाद्र गिं ड़ाद्र ऐंगे कि ऐंड़ुली गिंगाद ड्रं।

ड़ी. १-१-१९८३

ਗੀਤੀ ਗਡਾਏ

.....ਮੈਮੋਰਾਹਮ ਜਹੀ ਸਾਂਤਰੇ ਸ੍ਹੇ

ਮੈਂ ਹਾਸਵਿਹ ਪੇਯੂਸੀਸ ਕਿਨਟ। ਡੂ ਹਾਰਿਕ ਯਸਿਖਤਿਸ ਜਪੇਯ ਨਯਹੀ ਕਯ ਯੱਕੂ ਯਕਯੰਚੀ ਯੰਯ ਹਾਨਹੀ ਸੰਸਕੂੀ ਯੱਨਾਨਸ ਕੇ ਹਾਮਸਤ ਕੇ ਹਾਰ ਭਾਂਹੇ ਯੰਯ ਡੂੰਹੇ ਯਾਹੀ ਮੈਂ ਯਿਨਕੀ । ਡੂ ਯੰਕੂ ਨਯਾ ਮੈਨਕੀ ਯਯਕੂੰ ਕੇ ਯਯਿਯੂ ਜਯਿਯ ਸੰਯੂ ਕੀ ਡੂ ਯਯਿਯਾਕੀ । ਹਾਰਯੀ ਯੈਯ ਮੈਂ ਹਾਹ ਮੈਂ ਮੈਂਯ ਕੇ ਯਾਹ ਯੱਕ ਯੱਕ ਯੱਕ

નિમાણ કે ત્રાણ-ત્રપાનિક(૨) । તાર્નુ ગઠ્ઠાણે તંકુલ ડકણ કલ્કુ, ગ્રીાદ નિગણે-ગાંદાણે તાગ્ર ઉંગાર્ગાંદ-તાર્ગવીલી (૩) । તાર્નુ ગઠ્ઠાણે તંકુલ ઇલ્લી તાગનીક ણ તંકુલ તાર્ગાંણ કિગણ ગઠ્ઠાણે ણલ ગઠ્ઠાણે મ્રીાણે ગ્રાણ ણ ઇાર્ગલ-ઇાર્ગલ(૭) । તાર્નુ ગઠ્ઠાણે તંકુલ તાર્ગવીલી ણ ણલ તાર્નુ ગઠ્ઠાણે તંકુલ તાનડાં-તાણ(૮) । તાર્નુ ગઠ્ઠાણે ણલ તાલ્ય ણાગર-નાલ (૯) । તાર્નુ નિંગ ગઠ્ઠાણે-ગાર્ગાંગાંણગ-ત્રુણ (૧૦) । તાર્નુ ગઠ્ઠાણે ઇણ ણગાણ ણ ગાર્ગાંગાંણ (૦૦) । તાર્નુ ગઠ્ઠાણે તંકુલ તાંણગ ણ તાડલી-તાડલી (૬૦) । તાર્ગલ તાંગંણર નું ડાણ ણ તંકુલીણ તંકુ તંકુ ગ્રીાણે ગેણુ ત્રુગ તંગ્ગ તંકુલ ણંગ્રુંગ-ગેણુ (૪૦) । તાર્નુ ગઠ્ઠાણે મ્ર ગાંણગ તંકુ ઇાંગ-ઇાંગ (૬૦) ત્રુમ (૬૦) । તાર્નુ ગઠ્ઠાણે ગ્રુલ્લાણ ગ્રુલ્લી ગ્રાણે ઇલ્લી, ગ્રુંગ-ગાંગ (૨૦) । તાર્નુ ગઠ્ઠાણે મ્ર ગાંણગ

ઇાંગ્ર ણ તાર્નુ ઇાંગ્ર તંકુલ ણ ગ્રુલ્લાણ (ઇલ્લાણ) ગ્રાલ્લાણ ગ્રાલ્લાણ મ્ર ઇાંગ્ર ગ્રાંગ્ર મ્ર તાંગ્રીલી ણલાનલી ઇાંગ્ર ઇાંગ્ર-ગેલ્લ ઇાંગ્ર ણ ઇાર્નુ ઇાંગ્ર

ઇલ્લુ તાનલાગ ઇાગ્ર કે નલ્લાંગ

નલ્લાંગ ગ્રાંણે ણ ગ્રાંલાંલી કિ ગેલ્લ ણ ઇાંગ્ર કલી મ્ર ઇાંગલગ્ર ઇાંગ્ર મ્ર ગ્રાંગ્રાંગ્ર ઇાંગ્ર કે ણાંગલીણે ણ ઇાંગલી કિ નલ્લાંગ ઇાંગલીગ્રાંગ્રી ણ ઇાંગલી ણ ઇાંગ્ર ઇાંગ્ર ણ ગ્રાંગ્ર કે ગ્રાંગ્રાંગ્ર ગ્રાંગ્ર ણલ ણ તાનલાગ ગ્રાંગ્રાંગ્રાંગ્ર ગ્રાંગ્રાંગ્રાંગ્ર ઇાંગ્ર ણ ઇાંગલંગ્ર ઇાંગ્ર ઇાંગ્ર ણ ઇાંગ્ર ઇાંગ્ર ણ ઇાંગ્ર ઇાંગ્ર ણ

ਸਫ਼ਰ ਸੱਚੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਪਰਿਵਾਰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਪਰਛਾਵੇਂ ਪਾਲਦਾ ਮੈਂ। ਏ ਹਰਾਮ ਮੇਰੇ ਨਾਲਾਂ ਕਹਿਸਾਰ ਪਰਛਾਵੇਂ ਹਾਲਾਤ ਪਰੂ ਸਫ਼ਰ। ਹੋ ਜਾਣਾ ਹੋਣਾ ਮੇਰੇ ਹੋਣ ਕੀ ਮਾਰਨ ਹੋਣ ਕੀ

ਕਰੇਪ ਲਾਂਮ ਤੇਰੇ

ਤੇਰੇ ਹਿੱਤ ਹਿਲੀ, ਜ਼ਿੰਦ ਹਨੀ ਹੋ ਨਦਾਮ
ਛਿਪ ਨ ਛਾਂ ਹੋ ਨੇ ਨਦਾਮ, ਹਿਲਦੀ ਹੋ ਨੇ ਛਾਂ ॥

ਕਿ ਮੰਗਾਮ ਛਾਦ ਟੁਮਕੀ ਹਿਰੰਡ ਜ਼ਿੰਨ ਹਾਰਾਂਗੀ ਮੇਂ ਨਦਾਮ ਕੀ ਛੂ ਤਰ ਪਰਾਸਗੀਏ ਕਰ ਮੰਕਰ
ਤਾਸਕ ਕਰੀਗੀ ਕਸਗਦ ਕੇ ਮੈ ਹਾਂਦੀ ਛੰਗ ਨਦਾਮ ਛਾ ਛੂ ਮੈ ਹਿਆਦ ਕੇਸਗਦ ਹਾਸਗ
ਮੈ ਮੇ ਧਰ ਪੰਨਕ ਮੇਂ ਹੀਕੀ ਕਰੂਤਰ ਮੈਸਗਦ ਹਾਸ ਮਿਸ਼ੂ। ਛੂ ਹਾਸਦ ਸਾ ਛੂ ਹਾਸਰੀ
ਛੂ ਮੈ ਹਿਆ ਕਰਾਤ-ਤਨਾ ਕਰੀਏ।

ਕੀਰੀ ਬੰਸ਼ੇਪ ਕੇ ਨਦਾਮ

ਹਾਦ ਹਾਰਾਂ ਮੈ ਹਾ। ਛੂ ਕੀਰੀ ਬੰਸ਼ੇਪ ਕੇ ਨਦਾਮ ਛੂ ਹਾਸਕ ਨਦਾਮ ਕਾਸ ਕੇ ਹਾਸਰ-ਹਾਸ
ਜ਼ਿੰਨ ਹਾਸੰਪਰੀ ਕੇ ਨਦਾਮ ਮੇਂ ਮੰਬਾ ਸਦ ਕੀਗੰਸ਼ ਕੇ, ਛੂ ਛਰ ਹਾ ਹਾਰਾ ਮੇ ਹਾਸ ਬੰਪਰੀ ਛੂ ਛਰ
ਛਰ ਛੂ ਛਰ ਹਾ ਹਾਰਾ ਛਰ ਮੈ ਹਾ ਹਾਸਰ ਸਦ ਛਰ। ਛੂ ਹਿਰੰਡ ਹਾਸੰਪਰੀ ਕੀ ਸਾਜ਼ਾਸ਼ ਸਾਸ ਕੰਤੀਬ ਛੂ ਹਿਰੰਡ
ਕ ਹਾਸ਼ਛੂੰ ਮੈ ਸੀਸ ਕੇ ਨਦਾਮ ਸਦ। ਛੂ ਛਰ ਹਾ ਹਾਰਾ ਛਰ ਸਾਰਤਰਤਰ ਸਾਸੰ ਹਾਸੀ ਕਾਸ ਕੇ ਕਰੰਤੀ
ਸਿੰਪੂ ਹਾਸਸ ਕਾਸ ਪੰਤੀ। ਛੂ ਹਿਰੰਡ ਸਿਸ਼ਬ ਛੂੰ ਹਾਸਤਾਸ ਕੇ ਪਸਸ ਕੇ ਨਦਾਮ ਹੀ ਛੂ ਹਿਰੰਡ ਕਾਸ
ਤਾਨਾਸ ਕਰੀਹਾਂਤ ਕ ਪਤਾਤਰਾਸ ਸਦ ਕੰਤੀਬ ਜ਼ਿੰਨ ਹਾਸਤ ਕਾਸ ਨਦਾਮ ਕੀ
ਨਦਾਮ ਬੰਸ਼ੇ ਸਸੰਪੂ ਤੇਂ ਸਿੰਪੂ ਹਾਸ। ਛੂ ਹਾਸਾ ਹਸੀ ਸੰਸਦ
ਸੰ ਸੰਪਰ ਸਾਸਕ ਕੀਰੀ ਬੰਸ਼ੇਪ ਕੇ ਸਾਸਸਰਤਾਸ ਟੁਰੀਸ ਹਾਰੰਡ ਜ਼ਿੰਨ ਸਾਸੰਪੂ ਸੰ ਜ਼ੈਂਤਾਸ ਪਾਂਸਾਂ
ਸਾ ਛੂ ਹਾਰੰਡ ਪਸਾਰੀ ਕਾ ਸਾਜ਼ਾਸ਼ ਪਸਸਦਾਸ ਕੀ ਸਾ ਤਰ: ਸਾਹਤਾਸ। ਛੂ ਹਾਰੰਡ ਸਾਸਸਾਸ ਕਾਸ
।ਛੂ ਹਾਰੰਡ ਪਸ ਪਸ ਹਾਰੰਡ ਸਾਸ ਹਾਰੰਡ ਸਾਸ ਸਾਸ ਸਾਸ

लॉग-आउट ऐप

.....पिछले सत्र की समाप्ति

यह सत्र सुरक्षा कारणों से समय-समय पर समाप्त कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आप लंबे समय तक ऐप का उपयोग नहीं करते हैं, तो सुरक्षा के लिए आपको फिर से लॉगइन करना पड़ सकता है। यह सुविधा आपके खाते को अनधिकृत पहुँच से बचाने में मदद करती है। यदि आप अपने खाते को किसी और के साथ साझा करते हैं, तो आपको हर बार उपयोग के बाद लॉगआउट करना चाहिए।

लॉग-आउट ऐप

लॉगआउट करने के बाद आपको लॉगइन स्क्रीन पर वापस भेज दिया जाएगा। यहाँ आप फिर से अपना ईमेल पता और पासवर्ड दर्ज करके वापस लॉगइन कर सकते हैं। यदि आप भूल गए हैं कि आपने किस ईमेल पते से लॉगइन किया था, तो आप अलग-अलग ईमेल पते आज़मा सकते हैं या सहायता टीम से संपर्क कर सकते हैं।

लॉगआउट पुष्टिकरण

लॉगआउट करने से पहले ऐप आपसे पुष्टि माँगता है। यह एक छोटा सा संदेश है जो आपको याद दिलाता है कि आप लॉगआउट करने जा रहे हैं। यह सुविधा आपको गलती से लॉगआउट करने से बचाती है। यदि आप इस संदेश को देखकर "रद्द करें" चुनते हैं, तो आप ऐप में वापस आ जाएँगे और आपका सत्र जारी रहेगा।

लॉगआउट के बाद

लॉगआउट करने के बाद आपका डेटा सुरक्षित रहता है। आपके द्वारा बनाई गई सामग्री, आपकी सेटिंग्स और आपकी प्रोफाइल जानकारी सर्वर पर सुरक्षित रहती है। आप फिर से लॉगइन करके अपना काम जारी रख सकते हैं। लॉगआउट करने से आपका डेटा हटाया नहीं जाता, केवल आपका सत्र समाप्त हो जाता है।

लॉग-आउट ऐप

लॉगआउट करने के बाद आपको लॉगइन स्क्रीन पर वापस भेज दिया जाता है। यहाँ आप फिर से अपना ईमेल पता और पासवर्ड दर्ज करके वापस लॉगइन कर सकते हैं। यदि आप भूल गए हैं कि आपने किस ईमेल पते से लॉगइन किया था, तो आप अलग-अलग ईमेल पते आज़मा सकते हैं या सहायता टीम से संपर्क कर सकते हैं।

लॉगआउट पुष्टिकरण

लॉगआउट करने से पहले ऐप आपसे पुष्टि माँगता है। यह एक छोटा सा संदेश है जो आपको याद दिलाता है कि आप लॉगआउट करने जा रहे हैं। यह सुविधा आपको गलती से लॉगआउट करने से बचाती है। यदि आप इस संदेश को देखकर "रद्द करें" चुनते हैं, तो आप ऐप में वापस आ जाएँगे और आपका सत्र जारी रहेगा।

लॉगआउट के बाद

लॉगआउट करने के बाद आपका डेटा सुरक्षित रहता है। आपके द्वारा बनाई गई सामग्री, आपकी सेटिंग्स और आपकी प्रोफाइल जानकारी सर्वर पर सुरक्षित रहती है। आप फिर से लॉगइन करके अपना काम जारी रख सकते हैं। लॉगआउट करने से आपका डेटा हटाया नहीं जाता, केवल आपका सत्र समाप्त हो जाता है।

लॉग-आउट ऐप

मान लीजिए आपने ऐप का उपयोग कर लिया है और अब आप अपने खाते से बाहर निकलना चाहते हैं। लॉगआउट करने का मतलब है कि आप ऐप को बंद कर देंगे और आपका सत्र समाप्त हो जाएगा। यह सुविधा आपके खाते की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। यदि आप किसी और के साथ अपना फोन साझा करते हैं, तो आपको हर बार उपयोग के बाद लॉगआउट करना चाहिए।

लॉगआउट पुष्टिकरण

लॉगआउट करने से पहले ऐप आपसे पुष्टि माँगता है। यह एक छोटा सा संदेश है जो आपको याद दिलाता है कि आप लॉगआउट करने जा रहे हैं। यह सुविधा आपको गलती से लॉगआउट करने से बचाती है। यदि आप इस संदेश को देखकर "रद्द करें" चुनते हैं, तो आप ऐप में वापस आ जाएँगे और आपका सत्र जारी रहेगा।

लॉगआउट के बाद

लॉगआउट करने के बाद आपका डेटा सुरक्षित रहता है। आपके द्वारा बनाई गई सामग्री, आपकी सेटिंग्स और आपकी प्रोफाइल जानकारी सर्वर पर सुरक्षित रहती है। आप फिर से लॉगइन करके अपना काम जारी रख सकते हैं। लॉगआउट करने से आपका डेटा हटाया नहीं जाता, केवल आपका सत्र समाप्त हो जाता है।

लॉग-आउट ऐप

लॉगआउट करने के बाद आपको लॉगइन स्क्रीन पर वापस भेज दिया जाता है। यहाँ आप फिर से अपना ईमेल पता और पासवर्ड दर्ज करके वापस लॉगइन कर सकते हैं। यदि आप भूल गए हैं कि आपने किस ईमेल पते से लॉगइन किया था, तो आप अलग-अलग ईमेल पते आज़मा सकते हैं या सहायता टीम से संपर्क कर सकते हैं।

लॉगआउट पुष्टिकरण

लॉगआउट करने से पहले ऐप आपसे पुष्टि माँगता है। यह एक छोटा सा संदेश है जो आपको याद दिलाता है कि आप लॉगआउट करने जा रहे हैं। यह सुविधा आपको गलती से लॉगआउट करने से बचाती है। यदि आप इस संदेश को देखकर "रद्द करें" चुनते हैं, तो आप ऐप में वापस आ जाएँगे और आपका सत्र जारी रहेगा।

लॉगआउट के बाद

लॉगआउट करने के बाद आपका डेटा सुरक्षित रहता है। आपके द्वारा बनाई गई सामग्री, आपकी सेटिंग्स और आपकी प्रोफाइल जानकारी सर्वर पर सुरक्षित रहती है। आप फिर से लॉगइन करके अपना काम जारी रख सकते हैं। लॉगआउट करने से आपका डेटा हटाया नहीं जाता, केवल आपका सत्र समाप्त हो जाता है।

ਕੀਤੀਆਂ ਹਨ। ਹਾਜ਼ਰੀਨ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਚਮਕ ਸੀ, ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਅਜਿਹੇ ਸਫ਼ਰ ਦੇ ਗਵਾਹ ਬਣ ਰਹੇ ਹੋਣ ਜਿਹੜਾ ਸਟੇਜ ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਵਿਚ ਖਤਮ ਹੋਣਾ ਸੀ। ਇਹ ਸ਼ਾਮ ਸਿਰਫ਼ ਇਕ ਮੁਕਾਬਲਾ ਨਹੀਂ ਰਹੀ ਸਗੋਂ ਇਕ ਅਜਿਹੀ ਯਾਦ ਬਣ ਗਈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਸਾਂਭ ਕੇ ਰੱਖਾਂਗੇ।

ਕੁਲਵੰਤ ਲਾਂਬੜਾ

ਕਲਮ ਦੇ ਸਫ਼ਰ ਦੇ ਪਾਂਧੀ ਕੁਲਵੰਤ ਲਾਂਬੜਾ ਦੀ ਕਲਮ ਤੋਂ ਉਪਜੀ ਇਹ ਰਚਨਾ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਉਹ ਪਾਸਾਰ ਨੂੰ ਛੋਹਦੀ ਹੈ ਜਿਥੇ ਸ਼ਬਦ ਸਿਰਫ਼ ਸ਼ਬਦ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦੇ ਸਗੋਂ ਅਹਿਸਾਸ ਬਣ ਕੇ ਪਾਠਕ ਦੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਉਤਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਲਾਂਬੜਾ ਦੀ ਕਲਮ ਦੀ ਖਾਸੀਅਤ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਰੋਜ਼ਮਰਾ ਦੀ ਬੋਲਚਾਲ ਦੀ ਸਾਦਗੀ ਨੂੰ ਡੂੰਘੇ ਫ਼ਲਸਫ਼ੇ ਨਾਲ ਜੋੜਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਰਚਨਾ ਵਿਚ ਵਰਤੀ ਗਈ ਬੋਲੀ ਕਿਤੇ ਵੀ ਬੋਝਲ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦੀ ਸਗੋਂ ਇਹ ਪਾਠਕ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਤੋਰ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਹਰ ਸਤਰ ਉਸ ਨੂੰ ਅਗਲੀ ਸਤਰ ਵੱਲ ਧੱਕਦੀ ਹੈ। ਲਾਂਬੜਾ ਦੀ ਕਲਮ ਦੀ ਇਹ ਖੂਬੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਉਦਾਸੀ ਨੂੰ ਵੀ ਇਕ ਖੂਬਸੂਰਤ ਤਜਰਬੇ ਵਾਂਗ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਜਿਥੇ ਦੁੱਖ ਵੀ ਇਕ ਸਿੱਖਿਆ ਬਣ ਕੇ ਉਭਰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਰਚਨਾ ਸਾਬਤ ਕਰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਕਲਮ ਦਾ ਕੰਮ ਸਿਰਫ਼ ਸੱਚ ਬੋਲਣਾ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਸੱਚ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਪੇਸ਼ ਕਰਨਾ ਹੈ ਕਿ ਸੁਣਨ ਵਾਲਾ ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਸਮਝ ਕੇ ਅਪਣਾ ਲਵੇ। ਲਾਂਬੜਾ ਦੀ ਇਹ ਰਚਨਾ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਲਈ ਇਕ ਅਹਮ ਦਸਤਾਵੇਜ਼ ਵਾਂਗ ਹੈ ਜੋ ਦੱਸਦੀ ਹੈ ਕਿ ਆਧੁਨਿਕ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਕਵਿਤਾ ਕਿਵੇਂ ਆਪਣਾ ਰਾਹ ਲੱਭ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿਵੇਂ ਇਕ ਕਵੀ ਆਪਣੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਧੜਕਣ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਅੰਦਰ ਸਮੇਟ ਕੇ ਉਸ ਨੂੰ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਸੂਰਤ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਰਚਨਾ ਨਿਸ਼ਚੇ ਹੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕਾਵਿ-ਜਗਤ ਵਿਚ ਇਕ ਮੀਲ-ਪੱਥਰ ਵਜੋਂ ਯਾਦ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ।

ਕੁਲਵੰਤ ਲਾਂਬੜਾ

ਕਲਮ ਦੇ ਪਾਂਧੀ ਕੁਲਵੰਤ ਲਾਂਬੜਾ ਦੀ ਕਲਮ ਤੋਂ ਉਪਜੀ ਇਹ ਰਚਨਾ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਉਹ ਪਾਸਾਰ ਨੂੰ ਛੋਹਦੀ ਹੈ ਜਿਥੇ ਸ਼ਬਦ ਸਿਰਫ਼ ਸ਼ਬਦ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦੇ ਸਗੋਂ ਅਹਿਸਾਸ ਬਣ ਕੇ ਪਾਠਕ ਦੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਉਤਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਲਾਂਬੜਾ ਦੀ ਕਲਮ ਦੀ ਖਾਸੀਅਤ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਰੋਜ਼ਮਰਾ ਦੀ ਬੋਲਚਾਲ ਦੀ ਸਾਦਗੀ ਨੂੰ ਡੂੰਘੇ ਫ਼ਲਸਫ਼ੇ ਨਾਲ ਜੋੜਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਰਚਨਾ ਵਿਚ ਵਰਤੀ ਗਈ ਬੋਲੀ ਕਿਤੇ ਵੀ ਬੋਝਲ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦੀ ਸਗੋਂ ਇਹ ਪਾਠਕ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਤੋਰ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਹਰ ਸਤਰ ਉਸ ਨੂੰ ਅਗਲੀ ਸਤਰ ਵੱਲ ਧੱਕਦੀ

ਹੋਰਾਜਾਏ ਮੈਂ ਛਾਨਗਾਮੀਆ ਛਾਹ ਪੱਤੇ ਤੂੰ ਛਡ ਨਗਿਆਨਗਰ ਪਰਾਪਰਨੀ ਮੈਂ ਗਾਡੀ ਸਫ਼ਰ ਮਿੱਥ ਮੈਂ ਯੂ ਛਾਹ ਪੱਤਿਆ ਉਗਾਏ ਗਡੀਆਂ ਪਾਜਾਹਾਏ ਛਾਹ ਪਾਸਾਏ ਸਾਂਸਰ ਕਾ ਨਾਲਸੀ ਯੂ .ਸਾ .ਮ ਵਿਹਾਸਮਿਨਾਡ ਵਿਖ ਪਛਾਣੀ ਕੰ ਗਨਕਾਰ ਪੈਸਟਰਾਂਸ ਸਾ ਸਮਸਾਏ ਕੰ ਨਾਲਸੀ ਪਿਹਰ।ਗਡੂ ਮੈਂ ਝੇਮਤੀ-ਪਾਜਾਤੀ ਸੰਸਿਮਾ ਸਾ ਮਸਾ। ਮੈਂ ਕਿਤੂ ਓ ਗਹੁਸਾਰ ਨਾਸਾਰ ਕੰ ਹਾਸਾ ਰਤੀਤਸੀਏ ਨਤੂਸਾਂ ਕੀ ਸੱਨਾਂ ਸਾਰ ਕੇਕਲੀ ਮੈਂ ਸਮਸਾਏ ਕਾ ਨਾਨਾ ਗਨਕਾ ਕਰੀਨਤਰਾਂ ਕੀ ਹਾਸਾ ਨਾਂਹੂ ਪਾਅਗਾਨੇਂਏ ਗਡਏ ਕੀ ਹਾਸਾ ਨਾਂਹੂ ਮੈਂ ਨੀਸਾਸਮੇਨਾ ਕੱਤੀਬ ,ਕੈਕਾ ਮੈਂ ਹਾਸਡ ਗਨਕਾ ਛਡ ਸੈਂ। ਮੈਂ ਪੈਗਾਏ ਖੋਹ ਪੈਗਾਸ ਗੰਨ ਗਡਾਏ ਕਰੀਗੰਨ ਮੈਂ ਹਾਸੀ ਸਾਂਹੂ। ਮੈਂ ਨ ਹਾਰੀਂ ਮੈਂਸਾਸ ਕਰਾ ਕਾ ਹਾਸਾਸ ਨਾਂਹੂ ਕੀ ਤੂੰ ਹਾਤਗਾਤ ਕੰ ਪਸਕੀਸ ਨਾਹੀਤਾਰ ਕੰ ਪਰਕਾਰ ਝੈਕ ਮੈਂ ਗਾਏਤ ਸੈਂਸੂੰ। ਮੈਂ ਨ ਹਾਏਰ ਕਾ ਨੀਸਿਨਹੀਤ ਸਾ ਗੰਨ ਗਡਾਤ ਕਰੀਤਰਾਂ ਕੀ ਹਾਸਾ ਨਾਂਹੂ ਮੈਂ ਪਾਸਾਏ ਕੰ ਪਰਕਾਰ ਕਰੀਤਾਤਾਏ ਕੀ ਹਾਸਾ ਨਾਂਹੂ ਕੀ ਤੂੰ ਹਾਤਗਾਤ ਸੈਂ।ਤੀਤਾਤਾਏ ਕਾ ਨਾਨਾ ਗਨਕਾ ਕਰੀਤਰਾਂ ਕੀ ਹਾਸਾ ਨਾਂਹੂ।

ਸਾਸਰ ਕੰ ਸਾਸਰ ਸਮਾਂਹੂ

ਸਾਂਸੀਸਾਸ ਪੰਸੀ ਕੰ ਸੈਂਸੂ ਪਤਾਤਾਏ ਕਿ ਹਾਰਕਾ ਹਾਸਾਸਮੇਨਾ ਮੈਂ ਨਾਂਪੰਤਾਤਾਏ ਕੰ ਪੈਗਾਤਾਸ ਸੈਂਸਾਰਾਂ ਸੰਸੇ ਹਾਤਾਸਾਸ ਸਾਤਾਰੀ ਹੁਨੰਤੀ ,ਤੂੰ ਕਿੰਤ ਕੰਸਾ ਛਾਨਸੀ ਸੈਂ। ਤਾਕੀਤਾਏ ਸਾਰਾਰੀ ਕੰ ਸਾਸਰ ਸਾਰ ਸਾਸਰ ਕੰਸਾ

ऊँची के नंदक हुए थे। ऋतुचक्र में जो परिवर्तन हुआ है, उसे देखकर वसिष्ठजी ने कहा—

"ऊँची! तुम्हारा जन्म ग्रहों के परिवर्तन की दिशा में है। तुम्हें ऋतुचक्र के मानचित्र पर चलना है, पर याद रखना—परिवर्तन के बिना ऋतु ठहर जाती है।"

ऊँची ने नंदक नन्दनी में उस रात में जो नक्षत्र देखे थे, उन्हें याद किया। वे जानते थे कि वे ऋतुचक्र के मानचित्र पर नई रेखाएँ खींचेंगे। उन्होंने तय किया कि वे पहले वसंत-मार्ग पर जाएँगे, फिर ग्रीष्म-मार्ग पर, फिर शरद-मार्ग पर, और अंत में हेमंत-मार्ग पर। हर मार्ग पर उन्हें एक नया नक्षत्र मिलेगा, एक नया देवता मिलेगा, एक नया नियम मिलेगा। और हर मार्ग के अंत में उन्हें एक प्रश्न का उत्तर देना होगा।

पहले वसंत-मार्ग पर उन्होंने पाया कि वसंत केवल फूल नहीं है, वह एक निर्णय है। वह तय करता है कि कौन-से बीज अंकुरित होंगे और कौन-से सोते रहेंगे। ऊँची ने देखा कि वसंत के देवता ने उन्हें एक बीज दिया, और कहा—"इसे बोओ, पर याद रखो कि हर बीज अंकुरित नहीं होता, और जो अंकुरित होता है, वह सब फल नहीं देता।"

ग्रीष्म-मार्ग पर उन्होंने पाया कि ग्रीष्म केवल गर्मी नहीं है, वह परीक्षा है। वह तय करता है कि कौन-से पौधे सूखेंगे और कौन-से बचेंगे। ऊँची ने देखा कि ग्रीष्म के देवता ने उन्हें एक पौधा दिया, और कहा—"इसे सींचो, पर याद रखो कि सींचना तुम्हारा काम है, पर बचाना मेरा काम है।"

शरद-मार्ग पर उन्होंने पाया कि शरद केवल फल नहीं है, वह स्मृति है। वह तय करता है कि कौन-से बीज याद रखे जाएँगे और कौन-से भुला दिए जाएँगे। ऊँची ने देखा कि शरद के देवता ने उन्हें एक बीज दिया, और कहा—"इसे याद रखो, पर याद रखना बोझ है, इसे ढोना तुम्हारा काम है।"

हेमंत-मार्ग पर उन्होंने पाया कि हेमंत केवल ठंड नहीं है, वह विश्राम है। वह तय करता है कि कौन-से बीज सोते रहेंगे और कौन-से जागेंगे। ऊँची ने देखा कि हेमंत के देवता ने उन्हें एक बीज दिया, और कहा—"इसे सोने दो, पर याद रखो कि सोना भी काम है।"

ऊँची ने देखा कि ऋतुचक्र में हर मार्ग पर एक नया नक्षत्र है, एक नया देवता है, एक नया नियम है, और एक नया प्रश्न है। वे समझ गए कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऋतुचक्र लघु मंथन

ऋतुचक्र में हर मार्ग पर एक नया नक्षत्र है, एक नया देवता है, एक नया नियम है, और एक नया प्रश्न है। ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।

ऊँची ने देखा कि उनके पास एक बीज था, जो न वसंत का था, न ग्रीष्म का, न शरद का, न हेमंत का। वह बीज उन्हें याद दिलाता था कि ऋतुचक्र का मानचित्र केवल रेखाएँ नहीं है, वह एक संवाद है। वह तय करता है कि कौन-से बीज बोए जाएँगे, कौन-से बचाए जाएँगे, और कौन-से भुला दिए जाएँगे।